RNI No. UPHIN/2011/40224
वर्ष : 15 अंक : 3

पंजीकृत सं.: एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी-341/2024-2026

हिन्दी मासिक पत्रिका
सितम्बर – 2025
मूल्य: 20/- रुपये मात्र

प्रकृति मेल

नोट: यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजी जाती है।

सूर्य सिद्धांत (भाग -5)

प्रकृति आश्रम

प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य
एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली

'अशोक मानव'

9415041794, 9807636072

ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।

कोमल
बिल्डिंग मैटेरियल

सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)

बिक्रेता • बालू • मोरंग • सीमेंन्ट • गिट्टी

मछली शहर, जौनपुर

मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष: 15, अंक : 3 | सितम्बर - 2025

संरक्षक
डॉ. उत्तम प्रकाश मानव
संपादक
अशोक मानव
कार्यकारी संपादक
उमेश
विधि सलाहकार
नवनीत कुमार वर्मा
मुख्य संवाददाता
आशीष त्रिपाठी
वरिष्ठ संवाददाता
अरविन्द त्रिपाठी
दिल्ली संवाददाता
मनोज
पुर्वांचल हेड
श्री प्रकाश मिश्रा
संवाददाता
सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील, गौरव पंत, अभिषेक पंत, हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी, सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी,अभय सिंह
ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकि
संजय यादव
कैमरा मैन
धर्मेन्द्र त्रिपाठी

प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता

संपर्क 8423330911, 9598911575

पंजीकरण कार्यालय

सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश– 226022

प्रधान कार्यालय

18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग, फैजाबाद रोड, लखनऊ – 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच–पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

नोट: इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वेक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद–लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।

संपादक – अशोक मानव

www.prakritimail.com
info@prakritimail.com
editor.prakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

P 10 प्रकृति रासायनिक केंद्र

P 11 सीमांत विज्ञान

P 16 ध्वनि-स्व में विलीन करती रसायन

P 18 पूजा पाल : मिट्टी की बेटी जिसने धूल को मात दी

P 21 सच्चा दोस्त

P 25 मारू काका

P 26 नीतिगत सुधार जनहित का प्रमाण बने

P 36 अंतरिक्ष की गहराई में अनुसंधान करेगा भारत

P 48 जल संरक्षण की उपादेयता

P 55 स्कूल छोड़ती बेटियाँ: संसाधनों की कमी या सामाजिक चूक?

P 32 **प्रकृति विज्ञान**

सूर्य सिद्धांत भाग - 5

सूर्य सिद्धांत सत ऊर्जा रश्मी का यथार्थ जो सत ईंधन के स्वदर्पण ध्यान से न्यायिक तत्व में परिवर्तित कर देता है।

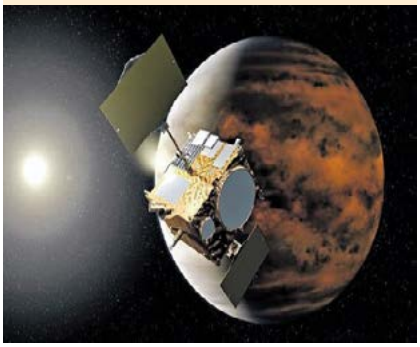

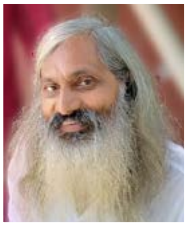

अशोक मानव

सवाल

स - समय, वा - वास्तविक, ल - लकीर

सवाल वास्तविक अवस्था की प्रतिभागिता है जो जहां से उत्पन्न होती है उसको उसके सत ईधन से मिलाकर उसे पूर्ण कर देती है।

अर्थात समय की वास्तविक लकीर। प्राकृतिक अर्थ में सवाल की कोई जगह नहीं, सवाल बने उससे पहले उसे हल करने के लिए वहां पर जीव की उत्पत्ति हो जाती है। वैज्ञानिक अर्थ में सवाल प्रकृति को प्रयोगशाला बनाने से उत्पन्न हे जाता है। भौगोलिक अर्थ में सवाल बीज में छिपा रहस्य है जो भौगोलिक विकास से स्वतः उत्पन्न हो जाता हैनहीं सामाजिक अर्थो में सवाल पग-पग पर खड़ा होता है जब उसके इच्छाओं के अनुसार नहीं होता है। वास्तविक रूप में ''सवाल तो समय की वह वास्तविक लकीर है जिससे कोई सजीव, निर्जीव अवस्था जीव रूप में बन्द होती है जिसका प्राकृतिक विकास उसका उत्तर है जिसके परिणाम से सृष्टि सृजन होता है।'' जिसे मानव सवाल बनाता है वह प्रकृति का रहस्य है जो उसके विकास की आवश्यकता है उसके खोलने के बाद विपरीत गुण की हानिकारक ऊर्जा उसके अस्तित्व को मिटा देती है। मानव के अतिरिक्त प्रकृति का कोई भी जीव सवाल नहीं उठाता है। प्रकृति स्वयं बढ़ रहे प्रदूषण के फल के लिए वहां पर नये-नये जीव की उत्पत्ति कर देती है जो उसे प्रदूषण को अपना आहार बनाकर सुगन्ध में परिवर्तित कर देती है। इस क्रिया से प्रकृति के अन्य जीव को हानि नहीं पहुचती है जिससे प्रकृति में कभी सवाल नहीं उत्पन्न होता है। प्रकृति की हर क्रिया किसी अदृश्य सवाल का जबाब है न कि वह कोई सवाल।

सवाल तो मानव की चिन्तन शीलता से उत्पन्न होता है। प्रकृति की कोई क्रिया जब मानव की इच्छाओं के विपरीत होती है तो वहीं पर उसके अन्दर सवाल उत्पन्न हो जाता है। मानव अपने विवेक से प्रकृति पर सवाल बना रहा है और उसका उत्तर ढूढ़ने में प्रकृति को प्रयोगशाला बनाता जा रहा है यही क्रिया प्रकृति के नूर को कम करती जा रही है। मानव के इस तरह करते रहने से इसका जबाब कभी नहीं मिलेगा बल्कि प्रकृति बन्जर हो जायेगी जिसमें जीवन असम्भव हो जायेगा। प्रकृति पर सवाल उठाकर उसका जबाब ढूढ़ना मानव का अहंकार है, प्रकृति से बड़ा कोई विज्ञान नही है।

मानव प्रजाति अपने जीवन में धर्म, समाज, सभ्यता, संस्कृति, राजनीति अपनी सुविधानुसार अपने लिए बनाता गया, इसमें अपने अतिरिक्त प्रकृति या अन्य किसी जीव का हित नहीं देख गया जो मानव के विवेक का परिणाम है उसकी यह क्रिया उसे मानव से मनुष्य श्रेणी में कब पहुँचा दिया उसे खुद पता नहीं। इसी व्यवस्था में उसका धर्य खत्म होता गया और सवाल पर सवाल उत्पन्न होता गया जिसका जबाब अपने द्वारा बनायी गयी इस व्यवस्था में खोजने लगा जो जबाब तो नहीं दे पाया बल्कि सवाल को बढ़ाता गया। सवाल प्राकृतिक नहीं है इसलिए किसी सवाल का कोई जबाब नहीं है सवाल का न उत्पन्न होना ही सवाल का जबाब है।

सवाल से उत्पन्न होने वाली रश्मी बेनूरी बनाती है जो जीवन के हर स्वाद को बेस्वाद कर देती है प्रकृति तो हर सवाल को बेहतर उपाय उसके जीवन में उपलब्ध कराती है उस पर भी उत्पन्न होने वाला सवाल सिर्फ व्यक्तित्व को नष्ट करता है। उदाहरण जीवन में बिमारी उत्पन्न होना सवाल बनाता है पर मानव द्वारा प्रयोगिक या भावनात्मक वैचारिक या मिलावट द्वारा शरीर में जो प्रदूषण पहुँच जाता है, बिमारी उसे बाहर निकालने का बेहर तरीका है जो प्रकृति अपनाती है यदि ऐसा न हो तो वह प्रदूषण जानलेवा हो सकता है। पर मानव उसे सवाल बनाकर उसे रोकने के हर तरीके अपनाता है। यदि यह रुक जायेगा तो प्रकृति में वह नहीं रुक पायेगा। व्यक्ति अपने इच्छानुसार कुछ पाना चाहता है उसकी न प्राप्ति होना भी सवाल बनाता है, पर व्यक्ति को नहीं पता की जिसे वह पाना चाहता है, वह जिन्दगी नहीं मौत है। इसलिए प्रकृति उसे नहीं प्राप्त होने देती है।

जिसे मानव सवाल बनाया हुआ है वही प्रकृति के दण्ड की न्याय प्रणाली है जिसके एहसास से व्यक्ति के अप्राकृतिक कर्म की दुर्गन्ध खत्म होती है और व्यक्ति की शरीर रूपी जमीन सुगन्ध बनाने योग्य बन पाती है। प्रकृति की दण्ड प्रणाली एहसास के माध्यम से ही दी जाती है। यह क्रिया यदि प्राकृतिक होने दी जाय तो व्यक्ति की सोचने की विचार धारा प्राकृतिक हो जाती है जिससे व्यक्ति सुगन्ध छोड़कर अपना प्राकृतिक कर्म करने लगता है। हर जीव को किसी भी परिस्थिति में प्रकृति बेहतर उपाय उपलब्ध करा देती है इसलिए सवाल न उत्पन्न कर उसके दिखाये मार्ग पर सकारात्मक सोच के साथ चलते रहने से सफर पूरा हो जाता है। ●●●

पाठकनामा

आदरणीय संपादक जी

सादर नमस्कार

आजकल की भागदौड़ में जहाँ जीवन के लिए जरा सा समय भी नहीं की दो पल ठहर कर थोड़ा साँस ली जा सके वह अगर पुरे दिन में एक बार भी पत्रिका दिख जाए तो जो आनंद मिलता है उसे में आपसे एक समाचार के माध्यम से बताना चाहूंगा। हम अक्सर आपसे सुनते हैं की प्रकृति कितनी अपने में सक्षम है कि वो किसी जीव का अस्तित्व मिटा सकती है तो जीव को अस्तित्व में ला भी सकती है और इसका प्रमाण (वेसे आपकी कही किसी भी बात को प्रमाण की आवश्यकता नही) कुछ ही दिन पहले एक समाचार से मिला कि प्लास्टिक जिसे मानव ने बनाया और जो 200 साल तक खत्म नही हो सकता उसे खत्म करते हुए अफ्रीका के समुद्र में एक खास तरह का अमीबा अस्तित्व में देखा गया है जो इसे खत्म करके इसे पानी में बदल देता है, ये सुन के उतना ही आनंद मिला जितना पत्रिका को देखने मात्र से मिल जाता है

कौस्तुभ

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं–
A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ226016
आप हमें अपने विचार निम्न ई–मेल पर भेज सकते हैं -
email-editor.prakritimail@gmail.com
Contact: **9807636072, 7376495194**

अगर हम शहरों की पारिस्थितिकीय बुनियाद में निवेश करने में विफल रहे, तो हम उनके भविष्य को खतरे में डाल देंगे।

नितिन बस्सी

आज के स्टार किड्स बनावटी दुनिया में पलते हैं। संघर्ष का स्वाद उन्होंने चखा ही नहीं।

सुनील दर्शन

गौतम गंभीर कि रणनीति और नीयत पर कोई सवाल नहीं उठा सकता है।

अभिषेक नायर

विकसित देश कहीं भी स्वयं के कृत्यों की भरपाई करने में रुचि नहीं प्रदर्शित करते और सक्षमता के चलते वार्ताओं का रुख अपनी ओर कर देते हैं।

डॉ. विवेक एस अग्रवाल

तकनीक समय के साथ बदलती रहती है, लेकिन हमारे वरिष्ठों के बताए आदर्श और मार्गदर्शन हमें सही दिशा देते हैं।

सुरेश कुमार खन्ना

अपने राष्ट्रीय हित एवं रणनीतिक स्वायत्तता को ध्यान में रखकर ही भारत ऊर्जा से जुड़े फैसले करेगा, किसी दबाव में नहीं आएगा।

एस जयशंकर

तड़पाओगे ?
कोशिश कर लो
हम बिना तड़पे ही... तुम से जीत जायेंगे
टैरिफ़
Manar

परिस्थितियां निर्माण की प्रक्रिया हैं

सृजन की आवश्यकता ही परिस्थिति है। वैसे भी परिस्थिति का शाब्दिक अर्थ ही है पर स्थिति अर्थात दो या दो से अधिक स्थितियों के मिलन से पैदा होने वाली स्थिति ही परिस्थिति है। यह निश्चित प्रक्रिया है सृजन की, क्योंकि नया सृजन करने के लिए परिस्थिति का होना आवश्यक होता है। और सृजन प्रकृति का सास्वत नियम है।

कामेश

परिस्थितियों के बारे में हर कोई जानता है, और हर कोई इस स्थिति से रूबरू होता है,कोई ऐसा प्राणी या पदार्थ नही जो परिस्थितियों से परे हो। परिस्थितियों के बारे में अब तक हमारी जो भी धारणा रही है वो सिर्फ अपनी मजबूरी या बदहाली ही समझी जाती रही, परन्तु यदि देखा जाय तो जीवन में आने वाले प्रति क्षण प्रकृति में परिर्वतन की स्थिति किसी न किसी परिस्थिति के साथ ही होती है। बिना परिस्थिति के भला स्थिति कैसे बन पाएगी, परिस्थिति वह स्थिति है जो किसी भी क्रिया प्रतिक्रिया का परिणाम है अच्छे या बुरे कर्म के परिणाम हो,या किसी वैज्ञानिक मिलान से होने वाला परिणाम हो। वैज्ञानिक परिणाम कहने का तात्पर्य है जैसे विभिन्न पदार्थों के मिलन से अन्य अन्य गुणों की वजह से स्थिति पैदा होती है वो परिस्थिति ही होती है वैज्ञानिक अपना शोध करने के लिये अनेक गुणों के पदार्थ एक में मिलाकर शोध करते हैं तो एक नई उत्पत्ति करते हैं, उनके मिलान से जो उत्पत्ति होती है वो तो परिणाम है पर जो मिलाने की क्रिया पर मिलाते समय की स्थिति होती है वह परिस्थिति बन जाती है। कहने का तात्पर्य है कि परिस्थितियाँ कही न कही गुणों के मिलान से होने वाली परिर्वतन की पहली अवस्था होती है। क्योंकि खोज करने पर निर्माण करने के लिए जो माहौल बनता है जो कारण होता है एक नये सृजन करने की जरुरत होती है उस जरुरत की पूर्ती के लिये ही परिस्थिति बनती है। या यूँ कह सकते हैं कि सृजन की आवश्यकता ही परिस्थिति है। वैसे भी परिस्थिति का शाब्दिक अर्थ ही है पर स्थिति अर्थात दो या दो से अधिक स्थितियों के मिलन से पैदा होने वाली स्थिति ही परिस्थिति है। यह निश्चित प्रकृया है सृजन की, क्योंकि नया सृजन करने के लिए परिस्थिति का होना आवश्यक होता है। और सृजन प्रकृति का सास्वत नियम है। हर पल हर छण प्रकृति में नए- नए निर्माण नए-नए परिवर्तन और नया सृजन हो रहा है और यह निरन्तर होता ही रहेगा। और परिस्थितियाँ जन्म लेती रहेंगी।

ये तो प्राकृतिक रूप से पदार्थों या फिर प्रकृति के हर कृया की परिस्थितियाँ थी परन्तु यहां चर्चा करनी है उन परिस्थितियों की जिनसे मानव डरा हुआ है, जिन्हें मानव अपनी नादानी बस निर्माण की प्रकृया नही बल्की अपनी बुरी हालात मानकर बचा करता है। अक्सर परिस्थिति शब्द का प्रयोग व्यक्ति वहीं करता है,जब उसके अनुसार कुछ अच्छा नहीं लगता और वह उसमे कोई परिवर्तन भी नही कर पाता और मजबूर होता है तब बोलता है कि परिस्थिति के मारे है। अर्थात लाचारी को अपनी कमजोरी को व्यक्ति परिस्थितिया मान लेता है। व्यक्ति के निर्माण के लिए या विनाश के लिए, वैशे नाश तो कभी होता ही नही क्योंकि हम जिसे नाश कहते है प्राकृतिक

प्रकृया मे वो भी कोई न कोई निर्माण ही होता है। व्यक्ति की सोच के अनुसार ही उसका निर्माण होता है। हम सभी अब तक यही जानते हैं कि सोचने से भला क्या होगा परन्तु सोच ही निर्माण की पहली सीढ़ी होती है। सोचने और निरन्तर भाव छोड़ने से ही तो निर्माण होता है। वैसे भी कहा जाता है कि जो व्यक्ति को मरने के वक्त की अन्तिम इच्छा होती है वही पूरा करने के लिए पुनर्जन्म होता है। तो जब हम इच्छा पूर्ती के लिए सोचते है। तो उस इच्छा को पूरा करने मे जिन-जिन परिस्थियों से गुजरना होगा उसे तो स्वीकार करना ही पड़ेगा ही। तभी तो वह मार्ग बनती है जहॉ से होकर ही हम अपने उस छोड़ी गई इच्छा तक पहुच सकते है। अब मार्ग में आने वाली या घटने वाली घटनाओं को हम बुरी परिस्थिति मान ले तो ये तो सिर्फ हमारी सोच की कमजोरी है जब की हमे अपने निर्माण के लिए उन परिस्थितियों का हसते हुए पूरी मजबूती के साथ सामना करना चाहिए। आखिर परिस्थितियों को जन्म हम ही तो देते है। एक छोटा सा उदाहरण है कि हर मॉ बाप अपने बच्चे को खशी-खुशी पालते है। उनकी हर जरूरत पूरी करने का प्रयास करते हैं। वे बच्चे एक परिस्थिति होती है जिन्हें वे खुशी से झेल रहे होते है और उनकी अच्छी परवरिश के लिए हर परिस्थिति का सामना करते है चाहे जैसे भी हो जरूरते पूरा करने की पूरी कोशिश करते है। आखिर जब हम अपनी पैदा की गई परिस्थिति को हस के झेल सकते है। तो आखिर अपनी निजी इच्छा पूर्ती के लिए प्राकृतिक रूप से जीवन मे घटने वाली परिस्थितियों से क्यों घबराते है। आखिर वे परिस्थितियॉ हमारा ही तो निर्माण करने के लिए होती है। अब वो अलग बात है कि हमारा निर्माण किस तरह का होना है और उस तरह के निर्माण के लिए किन-किन रास्तों से प्रकृयाओं से गुजरना होता है। जैसे कि पानी को यदि भाप में परिवर्तित करना है तो उसे आग मे एक निश्चित तापमान तक

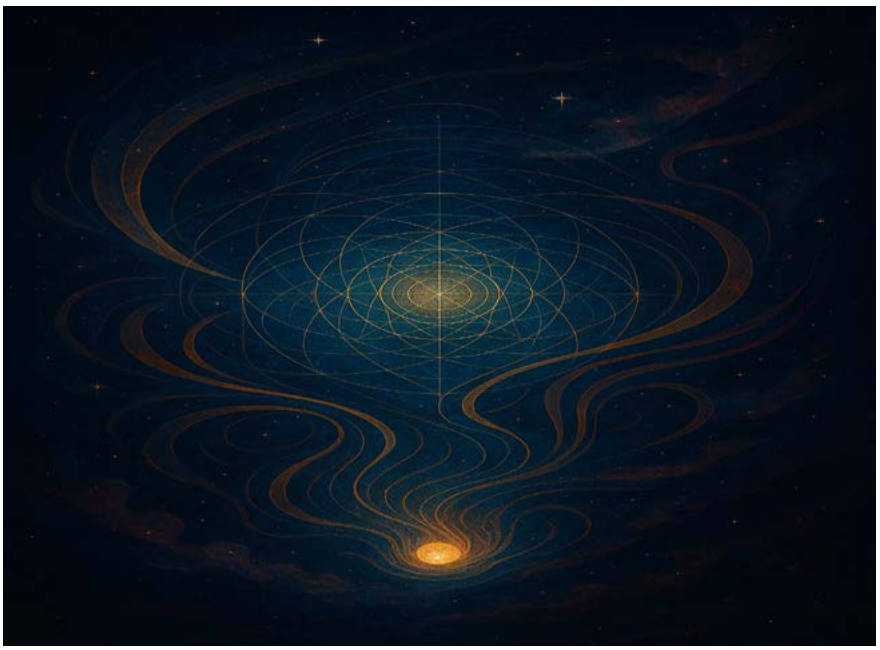

गर्म किया जाता है। यदि पानी यह तापमान सहने से घबरा जाए या उसे अपनी बदहाली या लाचारी मान ले तो क्या भाप बन सकेगा या फिर लोहे को विभिन्न सांचों मे ढालने के लिए जितना तपाया जाता गलाया जाता है यदि लोहा उस तपिस से घबराए तो क्या वह निर्माण योग्य बन पाएगा। ठीक उसी प्रकार जिस व्यक्ति का जिस तरह का निर्माण होना है उसे उसी परिस्थिति से तपाया जाता है। जैसे पानी को कम तापमान में ही भाप बन जाता है परन्तु लोहे के लिए अधिक तापमान चाहिए अब यदि वह लोहा पानी के बराबर के तापमान को अपने निर्माण के लिए चाहे तो क्या कभी निर्माण योग्य होगा। ठीक उसी तरह जिस व्यक्ति का जैसी गुण स्थिति वर्तमान मे होती है। उसके गुण परिवर्तन में उसी तरह की परिस्थियां काम आ सकती है। कोई कम समस्याओं को झेलता है तो कोई बहुत सारी समस्या लिए बैठा है परन्तु यह समस्याए उसकी वास्तविक सोच से ही पैदा होती है। वह जो चाहता है जिस चीज को पाने की उसकी सबसे प्रबल इच्छा होती है। उस इच्छा को पूरा करने मे जितने तापमान की जरूरत होती है वो सारी परिस्थितियां उसके सामने आती रहती है यह क्रिया हमारी सोच से ही प्रकृति मे क्रियाशील होती है और हमारे सामने विभिन्न घटनाओं के रूप मे आती रहती है। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति यदि अपराधी प्रवृत्ति का है और वह अचानक से एक महान सन्त बनने की इच्छा रखने लगता है। तो उसके अन्दर जो भी राक्षसी गुण विद्यमान थे अब इस नई इच्छा पूर्ती के लिए जरूरी होता है कि उसकी उस राक्षसी गुण को समूल नष्ट किया जाए फिर उसके अन्दर नई सन्त बनने की प्रक्रिया जारी हो। और उसके उस राक्षसी गुणों को नष्ट करने के लिए प्राकृतिक रूप से उसके सामने ऐसी परिस्थितियां बनती ही जाएंगी जो कि उसके गुण को समाप्त करने वाली होंगी। उसके सामने समस्याए और विरक्ती की ही स्थिति बनती रहेगी। अब यदि वह इन घटने वाली विभिन्न घटनाओं से घबरा जाए और उनका सामना करने की हिम्मत छोड़ दे तो क्या वो कभी भी सन्त बन पाएगा। अर्थात परिस्थितियां व्यक्ति के जीवन में घटने वाली वह घटनाएं होती है जिनमे उसके द्वारा छोड़ी गई इच्छा पूर्ती का मार्ग प्रसस्त होता है। जरूरत परिस्थितियों से घबराने की नही बल्की उनका सामना करने की है। और वो भी हसते और मुस्कुराते हुए।

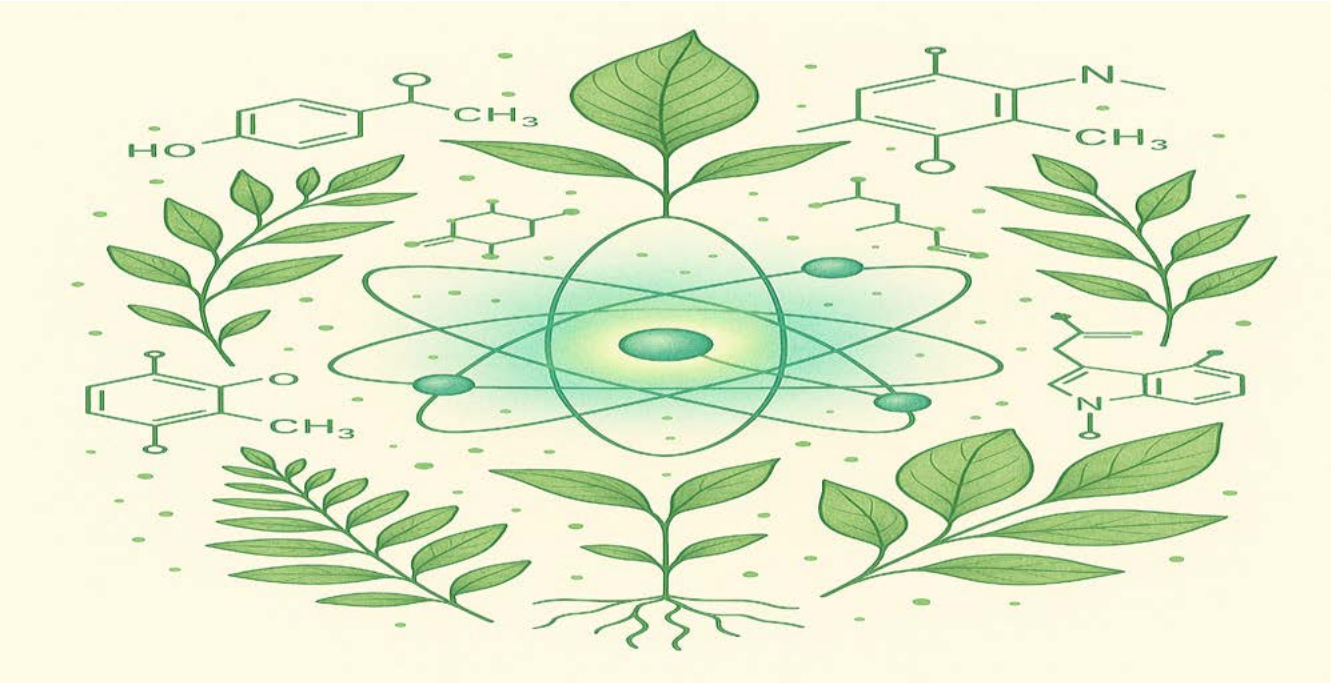

प्रकृति रासायनिक केंद्र

गौरव पंत

प्रकृति हर जीव पदार्थ का रासायनिक केंद्र है। हर जीव पदार्थ की अपनी प्रवृत्ति है जि सके गुणों का हर कोई विस्तार कर रहा है। इस रासायनिक केंद्र में कि सीसही गलत का कोई स्था न नहीं है। जिसकी जैसी प्रवृत्ति होगी वह वही निर्माण करेगा। मानव ही प्रकृति का ऐसा जीव है जो इस रासायनिक केंद्र में भी परिवर्तन की चाह करता रहा और बदलने का हर प्रयास करता रहा। किसी की रासायनिक भूमि में किसी बाहयता का हस्तक्षेप कभी हुआ ही नहीं। चाहे मानव द्वारा कितने ही प्रयोग किए गए हो।

हर कि सी का भूगोल ही उसकी रासायनिक यात्रा को उसके रसायन के अनुरूप स्वचलित धारा से गतिमान करता आया। हर जीव पदार्थ अपने ही अंदर अपनी यात्रा को पूर्ण कर रहा है। बाहय अवस्था सिर्फ बाहय परिधि का आकलन करती रही। प्रकृति रासायनिक केंद्र की भांति हर अवस्था को परिपक्व कर उसे सिद्धांत करती रही। इसी केंद्र में हर अवस्था तृप्त हो गयी। हर गुण स्व रसायन के अनुरूप सदैव गति मान रहा। जिस अवस्था को जैसी जलवायु से परिपक्व होना था उसे इसी रासायनिक केंद्र में स्व रसायन के एहसास से मिलती रही और हर अवस्था इसी एहसास से परिपक्व हो गयी। जो एक सूक्ष्म वि ज्ञान है इसे जाना नहीं जा सकता ना ही किसी प्रकार का परिवर्त न किया जा सकता है।

(केंद्र-कर्म एहसास की निज दर्पण रश्मि)

रासायनिक केंद्र को ना कोई जाना।
अपनी रसायनिकता के अनुसार
सिर्फ गतिमान होते जाना।
ना बदलना किसी को अपनी
स्वरसायनिकता से हर किसी को
परिपक्व होते जाना।
दर्पण खुद का खुद में ना कोई और
दर्पण देखना।
हर एहसास से एहसासमयी हो
जाना।
प्रकृति रासायनिक केंद्र मे हर
उत्पन्न अवस्था को परिपक्व कर
अनंतीय अंत कर जाना।

सीमांत विज्ञान

(लौकिक अनहद स्पर्श चेतना व्योम वृत्ति तत्वाधिक त्राटकीय मनोयात्रा)

सीमांत विज्ञान ही लौकिक अनहद स्पर्श चेतना व्योम वृत्ति तत्वाधिक त्राटकीय मनो यात्रा होती है। अर्थात जीवन का शुल्कदायी प्रमेय नहीं होता, जीवन का प्राणोदयी बलिदान नहीं होता। जीवन तो प्रमुख तत्व संवर्धिनी लौकिक दृश्यों का पदार्थ काल होता है, जिसमें अनहद आत्मा यात्रा कालीन स्पर्श ही मन चेतना व्योम वृत्ति का तत्वाधिक यात्रा विलयी रासायनिक मनो यात्रा पात्र होता है। अर्थात वर्चस्व से परे मात्रा मूल अस्तित्व की यात्रा को जीवन के पर्दे का प्रथम दृश्य बना देने वाले आंतरिक प्रकाश की सूर्य मात्रा को सीमांत विज्ञान कहते हैं।

अभिषेक पंत

आदि से अंत की यात्रा में अपनी नवनीत का चतुर्भुजीय खनन करने वाला जीव प्राणी उत्साह प्रयोजन मुखाग्नि रस विरह प्राचुरता को मध्यांकन तिलांजलि भेंट वशीकरण का मृत्यु व्यतीत पराग तन कहता आया। समीप की आलोचना एवं दूर की कृतघनता दोनों का द्वार भेंट आलिंगन का स्वप्न आतुर रस व्यूह जल धन कहने वाला जीव प्राणी व्यसन मृग मरीचिका प्राणी स्वरों को मूल वंदन वेदना व्यास जलवायु अर्क पराक्रम कहता है। अपितु धनाढ्यता एवं संज्ञानता की सूर्य सूची से अग्रिम तार की मनोदशा का चतुर्भुजीय विजयी भाव, मात्र पात्रता विलय दर्शन की वृत्ति को जीवन अर्थ करता है। अर्थात यात्रा ज्यामिति के अंतर्मन विश्राम की समय सूर्य धारणा के अंतिम मानक को मूल तत्व धारा का प्रथम सावधान दृश्य बनाने वाले आंतरिक पराग पारा भवन प्रकाश घनत्व को सीमांत विज्ञान कहते हैं। सीमांत विज्ञान ही लौकिक अनहद स्पर्श चेतना व्योम वृत्ति तत्वाधिक त्राटकीय मनो यात्रा होती है। अर्थात जीवन का शुल्कदायी प्रमेय नहीं होता, जीवन का प्राणोदयी बलिदान नहीं होता। जीवन तो प्रमुख तत्व संवर्धिनी लौकिक दृश्यों का पदार्थ काल होता है, जिसमें अनहद आत्मा यात्रा कालीन स्पर्श ही मन चेतना व्योम वृत्ति का तत्वाधिक यात्रा विलयी रासायनिक मनो यात्रा पात्र होता है। अर्थात वर्चस्व से परे मात्रा मूल अस्तित्व की यात्रा को जीवन के पर्दे का प्रथम दृश्य बना देने वाले आंतरिक प्रकाश की सूर्य मात्रा को सीमांत विज्ञान कहते हैं। सीमांत विज्ञान के तीन आयाम होते हैं -

1. समय रचना -

जब वर्तनी मुद्रा में जीव शाला प्रयोग का आत्मा कुंजी तन ही ध्वनित पात्रता का प्रकाश योग बनाता है, तब जिस गंधीय तापमान पर निधिवन जड़त्व जीवन रागिनी राधिका का मूल संचय गुण पकाता है, उस तापमान की मूल गति के आंतरिक द्रव्य तत्व की गंतव्य इकाई के मात्रा सार को समय रचना कहते हैं जिसमें सीमांत विज्ञान की प्रकृति सूर्यता का मूल पदार्थ वचन ही तत्व भाव की वैचारिक यात्रा का तरंगीय गुण बन जाता है जो वात निर्वात सीमा प्रभात राधिका को तन व्याप्त घड़ी बना देता है।

2. नाड़ी संरचना -

अर्थ व्यूह व्यावहारिक भाषा की मूल इच्छा निधि के खगोलीय अस्तित्व की दर्पण ईकाई के पदार्थ पात्रता संचार को नाड़ी संरचना कहते हैं। जिसमें सीमांत विज्ञान की तत्व आधुनिक मात्र ही मूल मानक रस चेतना

को जीव निर्जीव भाषा का भूगोल आयाम बना देती है। अर्थात भाषा का प्रमेय ही नाड़ी संरचना है जिसमें श्वसन तंत्र ही इच्छा ईंधन मिलान का खगोलीय अस्तित्व है जो वात निर्वात सीमा प्रभात राधिका को मन व्याप्त नाड़ी बना देता है।

3. ध्वनि यात्रा

सीमांत विज्ञान की स्वभावी रचना के प्रथम गुण की आंतरिक इकाई के गुंजन व्योमानुकूलन राधिका विषय को ध्वनि यात्रा कहते हैं। अर्थात अंग प्रमाणित मूल्य व्यूह प्रकाश संदर्भ की वैचारिक प्रति ही आवृत्ति व्योम की तरंगीय भाषा होती है। जिसमें गंध गर्भ स्थायित्व की आंतरिक यात्रा ही ध्वनि सीमा की गुंजन पात्रता होती है। पदार्थ का तत्व मिलान अवशेष ही सीमांत विज्ञान की ध्वनि यात्रा है। जो वात निर्वात सीमा प्रभात राधिका को आत्मा व्याप्त ध्वनि बना देता है।

प्रयोग उन्मूलन सक्रिय हो रहा, प्रकाश पर्दा परिपक्व को हो रहा, प्रकृति की रश्मिरथी यात्रा विराम पर है, अब गुण अवशोधन रुधन मिट रहा, प्रवृत्ति यात्रा काल उभर रहा, अर्थ व्यूह वेदी की निराकार प्रकारेणु यात्रा भी पक चुकी है, मानव का सदन संबंधित धन प्रवेश मिट रहा। अर्थात सीमांत विज्ञान ही जीव निर्जीव परमेकों की पात्र यात्रा का प्रकाश भाव है, जिसमें सीमांत विज्ञान की गणित तीन भाग में सक्रिय होती है।

1. भार भाव भवन संलयन -

सीमांत विज्ञान में अणुयोजक इकाई का ज्योति व्यूह भी इलेक्ट्रॉन संयोजक पात्रता का खगोलीय निष्कर्ष बनाता है, जिसमें भार भाव भवन संलयन ही अणु सीमा का धागा वृत्त बीज अंकन करवाता है। अर्थात जीव की उत्पत्ति का मूल धेय ही भार भाव भवन योग है, जिसमें संलयन की क्रिया ही जीव की इच्छा का ईंधन भोग है।

2. विचार गुण ज्योति मिलान- तत्कालीन तत्व वृद्धि के खगोलीय आयाम को युग नाड़ी प्रवर्तक बनाकर सीमांत विज्ञान में पदार्थ निधि का तन मन योग सिद्ध कर देने वाले इच्छा मार्गय खिंचाव को विचार गुण ज्योति मिलान कहते हैं। जिसमें पात्रता संदर्भित इच्छा प्रमेय ही खनिज नाड़ी का आवृत्ति वृत्ति मूल प्रति कारक होता है।

3. इच्छा ईंधन राधिका प्रकाट्य- सर्वगुण संपन्नता की इलेक्ट्रॉन कर्म धारा के मूल ब्रह्माण्डीय पोषण को इच्छा ईंधन राधिका प्रकाट्य कहते हैं। जिसमें मूल इच्छा की अनिवार्य संयोजकता ही सीमांत विज्ञान की राधिका प्रवाहीका को मूल बीज सनवर्तन में ज्योतिशील करती है। अर्थात सीमांत विज्ञान की राधिका प्रवाहिका ईंधन भाव रसलीन इच्छा यौगिक भार -भार तत्व माला ही पदार्थ यौगिक रसायनिकता की खनिज निधि होती है।

सीमांत विज्ञान का पल्लव खंड ही अशोक भाव की जन्मभूमि का वैचारिक कोण होता है। जिसमें भाव विचार इच्छा एवं भार गुण राधिका का मूल मिलान भवन ज्योति ईंधन से प्रकाटय मिलान संलयन में सीमांत विज्ञान अनुसार होता है। अर्थात संलयन प्रकाट्य को मिलन वृत्ति बना देने वाले आंतरिक विचार की इच्छा भार ज्योति के भाव गुण ईंधन वर्ण संयोजन को सीमांत विज्ञान कहते हैं।

अशोक-अवस्था प्राप्त शोधन क्रिया के मूल कर्म (अर्थात रासायनिक विषय की मूल वृत्ति को ईंधन युक्त करने वाली), प्रथम तापमान भट्टी को अशोक कहते हैं। अर्थात अंकन चिंतन से परे मूल धातु शुद्धि की खनिज वरीयता संकेतांक उपलब्धता को अशोक कहते हैं।

अशोक अवस्था का मूल पारा ज्ञान ही ब्रह्माण्डीय निर्जीविता का सजीव प्रमेय है जिसमें मानव इंद्रिय का मूल चालन पाचन व्यवहार ही पदार्थ संख्या बल को तत्व प्रेरित करता है। अशोक वृत्ति के मूल कारकों की ज्ञानी भावना में ही निर्विकार स्वास्थ्य की चेतन व्याप्त कृति का विस्तार होता है। अर्थात जब भी ब्रह्मांड में सूर्योदय विज्ञान की नीलिमा हरितमा का पारा प्राप्ति विषय बनता है, उसी विषय के मूल ब्रह्माण्डीय प्रकृति की ध्वनित विद्युता के चुंबकीय वेग को अशोक कहते हैं।

अशोक नीति के मूल पाच्य खनिज क्रम होते हैं - महाकाल, स्वकाल, पराकाल,ध्वनि, गंध। अर्थात जब प्रकाशित महाकाल इच्छा ही स्वकाल ईंधन में पराकाल ऊर्जा की ध्वनि पदार्थ चेतना बन जाती है, तब गंधीय विषय की मूल प्राप्ति ही अशोक पर्यावरण की मूल सूची बनाती है। जिसमें सीमांत विज्ञान की तत्व अधिक त्राटकीय मनो यात्रा ही लौकिक अनहद स्पर्श चेतना गर्भ को सक्रीय करती है। अर्थात अशोक अंश ही ब्रह्माण्डीय गर्भ का ज्योति रूप है एवं अशोक भाव ही प्राकृतिक सूर्य का ब्रह्मांडीय अंश है। जिसमें अंश को वंश बनाकर प्रकृति ने सीमांत विज्ञान से विस्तार को भी प्रकृति खनिज यात्री प्रकार का मूल एहसास वन बना दिया। जिसमें धारणा वाणी रूप ही मूल लिपिक स्थानीय चेतना का स्याही खंड बन गया। अर्थात अशोक विषय ही शेष अंश धारणा है, जिसमें ब्रह्मांडीय प्रकाश की सुरुचि ही चेतन गर्भ निधि की मूलधनित अवशेष अंकित भार युक्ति है। अर्थात जीवन की उदय यात्रा का आत्मा ध्वनि धन ही प्रकाश ऊर्जा नियति का सीमांत विज्ञान है। अर्थात सीमांत विज्ञान ही मूल अशोक गुणवत्ता का सजीव कारक है अर्थात चेतन प्रकृति की निरुपम धारा के मूल पदार्थ सीमांत व्यंजन अधिकारी प्रमेय को अशोक कहते हैं। अर्थात जीवन उपलब्धता ही निर्जीव प्रमेयिका की मूल विषय रागिनी का स्वतंत्र यंत्र प्रमेय है। विषय गामिनी प्रकृति की ईंधन यात्रा के मूल ऊर्जा गुण को अशोक कहते हैं एवं जिस विषय की मूल वृत्ति ही ईंधन योग की इच्छा वृत्ति हो उस विषय की रस मात्रा को सीमांत विज्ञान कहते हैं। अर्थ व्यूह धारणा का तिरस्कृत वंशज प्रमेय भी बनाया गया था अपितु जीवंत चेतना की व्यवहारिक सूर्यता के शुन्यकृति पराक्रम को सीमांत विज्ञान कहते है। जिसमें खनिज व्यवहार का आंतरिक क्रम ही खगोलीय पारावार का गंधीय कारक

बन जाता है। अर्थात ब्रह्मांड का विस्तार भी सीमांत विज्ञान की अनहद यात्रा का परिणाम है, जिसमें अवस्थाओं का अशोक होना ही विषय प्राप्ति का ईंधन योग बन गया, जिसमे पारा व्यूह नलिका की सजीव चेतना ही निर्जीव मिलान की परिचायिका बन गई।

अर्थात घर्षण से परे मूल काल प्रेरणा की प्रथम बुद्धि ही जीवन नाड़ी योग की आत्मा कृति है अर्थात तापमान ही विषय संज्ञा है जिसमें गति कारक चेतना ही पदार्थ मूल की तत्व नियति है। सीमांत विज्ञान के चार कारक होते हैं -

1. कर्म (सीमांत विज्ञान)-

भूगोल वर्ण की धार्मिक आस्था बनाकर कर्तव्य की गांठ बाँधी तो गई अपितु परतंत्रता वादी संगठनों ने आस्था की खोपड़ी में भी ज्ञानी झोपड़ी का आवाहन किया। अर्थात रसायन से परे जब बुद्धि कमल खिला लिया गया तब प्रदूषकों को प्रतीत हुआ कि जगत गामिनी शक्ति तो अप्रत्यक्ष है इसीलिए समस्त वाहन उन्मूलन प्रमेयको को पुनः लैंगिकवाद में बांटा गया। अपितु सीमांत विज्ञान तो चयन इस्पातीय जीवनतता की प्रेरणा है, जिसमें गर्भनिरुपम तृष्णा भी आधुनिक इंधनावली से पका ली जाती है। अर्थात कर्म तो वह तापमान निश्चिंतता है जो प्राकृतिक वेग के एहसास में स्वयं ही अपनी राधिका मार्गीय तत्व चेतना से मिलान करने लगता है। अर्थात जीव निर्जीव ज्ञान परिचायिका से परे प्रथम ईंधन समय मानक न्यायी तत्व जिजीविषा की तापमान चेतन वेग करणी प्रवृत्ति सूर्यता को कर्म कहते हैं, जो सीमांत विज्ञान की तत्वधानिक भाषा को मूल प्रासंगिक ईंधन वरीयता का इच्छा योग बना देता है।

2. न्याय (सीमांत विज्ञान)

अथर्व अर्थ अवनीति अप्रत्यक्षता की कल्पना में जीव प्राणी ने ध्यानी निष्कर्ष का वात निर्वात परिवहन बनाया था, शुल्क निशुल्क वेदना प्रमेयकों से जीव आचरण का मूल ज्ञान गंगा कोष बनाकर, जीव प्राणी ने धर्म निष्ठा पकवान का वस्त्र कपाट भी बनाया था। अपितु जातक प्रमाण प्रमेय दलदल से परे प्रकृति ने सदैव ही ऊर्जा कोष की वृत्ति में सीमांत नीति का चयन पूर्ण किया अर्थात न्याय वंदन वेदना से परे तत्व की गुणवत्ता का व्यूह धन रूप है, जिसमें एहसास ही तभी सक्रिय हुआ, जब पदार्थ तरंग वातावरण गंधीय मिलान की सुरुचि हेतु परिपक्व हो गया। अर्थात न्याय तो गर्भकारिणी अवस्था का जीवन परिचय है, जिसमे बल बुद्धि विद्या से परे मात्र चेतन व्यावहारिक राधिका शून्यता ही ईंधन वन को सक्रीय करती है। अर्थात गुंजन विद्या की मूलध्वनित आचरण शुद्धि के प्रथम वरीयता प्राप्त एहसास पर्यायक तत्व चेतन व्यूह मिलान को न्याय कहते हैं। सीमांत विज्ञान की प्रस्तुति का प्राचुर्य मात्रा विलाप नहीं होता ,सीमांत विज्ञान में न्यायिक भूमि के वेग से ही तरंग मिलान की आवृत्ति का गंधीय रूप ईंधन रूप में परिवर्तित हो जाता है जहां संवर्तनी न्यायिक चालक शुद्धि का पात्र वर्ण ही ब्रह्माण्डीय प्रेरणा का पदार्थ पारा गर्भ वन बन जाता है।

वृति (सीमांत विज्ञान)

जीवन सिद्धि का गणपति ध्यायी जीवांश बनाकर, मूल रत्नाकर भय के विस्तार में प्रथम बंधन की जीव निर्जीव पतिवृत्ति बनाई गई। अपितु जीवन संचार का मूल गुण प्रकृति रस की परिभाषा का भुवन धन होता है, जिसमें गर्भ विस्तार की रश्मि पारा तकनीकी ही ईंधन वर्ण की इच्छा इकाई को वृत्ति योग में परिवर्तित करती है। अर्थात प्रथम रश्मि के तत्व आधुनिक मिलान की तरंगीय इच्छा के आवृत्ति समकालीन विषय वजूद को वृत्ति कहते हैं। जिसमें सीमांत विज्ञान की तथ्य तत्व धारणा ही परिचय बुद्धि की अनुकूलता में वृत्ति पारा योग को सक्रिय करती है अर्थात जीवन का विषय ही निर्जीविता की वृत्ति है।

4. नियति (सीमांत विज्ञान)

धर्म संक्रमण से धन समर्पण बनाकर उदय विनियम संचार का पराक्रमी उपदेश वन बनाया। संचय बुद्धि बल से ध्यानी उपगमन का जीव तीर्थ पराग सेतु बनाया गया। अपितु नियति उपचार नहीं है, नियति प्रचार नहीं है, नियति उपकार नहीं है ,नियति तो सर्वगुण सत्ताधारी चेतना की अप्रत्यक्ष शक्ति की मूल रागनी आकृति पारा परिचायिका है, जिसमें मूल जीवन लावण्यक सिद्धि को प्रथम नभ ईंधन युक्त तत्व इच्छा प्रकारेणु बीज संज्ञा अस्तित्व बनाया जाता है। अर्थात जीवनार्थी परिचय के समय इच्छालीन मानक न्यायिक तत्व प्राणवायु खिंचाव युक्त मूल पदार्थ रस रसोई ज्ञापन ज्यामिति को नियति कहते हैं।

प्रकृति की तत्व तुला संदर्भित ऊष्मा यात्रा ही जीव निर्जीव संज्ञानता को स्पर्शलीन धरातल का व्यावहारिक जीवांश बनाती आई। प्रकृति ने सीमांत विज्ञान की ध्वनित ऊष्मा धातु ईंधन मानक तत्व सूची से ही ब्रह्माण्डीय अंकन की प्रथम लावणयता का बीज भी नभलीन किया , जिसमें धरा वायु जीवन अवशेष जल दर्पण भी मृदा अनुकूलन अणु प्रकार का जलवायु प्राणवायु सूचकांक बन गया। अर्थात सीमांत विज्ञान की विज्ञापन पेटी नहीं होती, सीमांत विज्ञान तो अशोक निधि का व्यावहारिक भूगोल होता है जिसमें अंतरिक्ष यात्रा ही खगोलीय पदचिन्हों की शेष भाषा होती है अर्थात जीवन का अर्थ ही सीमांत चेतना का व्यावहारिक परावर्तन है, जिसमें परिवर्तन की नीति का यौगिक ध्वनि मंडल ही गंधीय शुद्धता का जीव निर्जीव मिलान पदार्थलीन करता है अर्थात जन्म मृत्यु की स्वशन नीति के धड़कन नियति की मूल नाड़ी संज्ञा के आंतरिक क्रिया दबाव रस संवर्धन को सीमांत विज्ञान कहते हैं। सीमांत विज्ञान की अशोक नाड़ी ही ब्रह्माण्डीय उत्सर्जन की निर्माणक श्रेणी होती है, जिसमें गुणों की चेतना का गंधीय सागर ही गंधीय मिलान का रासायनिक बल बनाता है। अर्थात जब भी भूगोल विशेष में आत्मा प्रवेश का जन्म मृत्यु संबंध बनता है मृदा उत्सवी रंगों का सीमांत प्रलयंकरि भाषा भूगोल ही इच्छा

निधि का ईंधन स्तूपिय ज्योति सेतु बनाता है। अर्थात अर्थ निधि पल्लव की अज्ञानी ज्ञानी संज्ञा विराजमान पदार्थ नियति के तत्व नीति रासायनिक मिलान विषय भाव को सीमांत विज्ञान कहते हैं। अर्थात उत्पत्ति का मूल रस ही प्रकृति विशेष कारकों का पकवान अंकन कारक होता है जिसमें सीमांत विज्ञान की मन पर्यंत यात्रा ही तन पर्यटक वृद्धि की आत्मा सूची को ही ईंधन समयावली मानक का न्यायी तत्व वेशभूषा कारक बना देती है।

सीमांत विज्ञान की वर्णन नीति नहीं होती, सीमांत विज्ञान की परिचय बुद्धि नहीं होती, सीमांत विज्ञान तो तत्व दर्पण मानसिकता का श्वसन काल है, जिसमें इलेक्ट्रॉन प्रोटॉन की आवागमन नीति प्रबंधन विरक्ति में लीन नहीं होती। अर्थात जब अणु विशेष की जलवायु का आंतरिक पक्ष ही ब्रह्माण्डीय दबाव की राधिका चेतना में अपने ही गर्भ का जीवनकाल परावर्तित करने लगता है, तब जिस भूमि की इलेक्ट्रॉन प्रोटॉन न्यूट्रॉन संज्ञा में मिलान संयोजक प्रबुद्धता का ज्योति यान बनता है, उस भूमि की निर्वेगीय तत्व धारणा को सीमांत विज्ञान कहते हैं। सीमांत विज्ञान के दो सिद्धांत होते हैं -

1. साधन चेतना मंडल सिद्धांत (सीमांत विज्ञान)

अवशेषों की निर्गुण पराक्रमी मृदा अनुकूलता में जीवन तत्व शुद्धता का शुण्यांवन कपाल बुद्धि अरण्य तत्व पात्र बनाया गया, बुद्धि की जलवायु में व्यूह भार व्यावहारिक शयन सूत्र पुण्य वरदान योग बनाया गया। अपितु जन्म मृत्यु से परे मूल धारणा की सिद्धि ही इच्छा वाहन का प्रवेश कराती है। जिसमें वैचारिक संज्ञा की नवोनीती ही सार्थक विद्या की प्राण उदयी सीमा में ईंधन मात्रा उपलब्ध कराती है। अर्थात सीमांत विज्ञान की मूल वेशभूषा ही भावनात्मक जलवायु की सूर्याता होती है, जिसमें जब वैचारिक इच्छा का दबाव बनता है, तब प्राणवायु भूगोल संपर्क को खगोल लीन

करने हेतु साधन चेतना मंडल सिद्धांत सक्रिय होता है। अर्थात नभ अंकुरण की खगोलीय पात्रता के तरंगीय प्रवेश को अणुवाहन चेतना का इच्छा स्तूपिय यात्रा काल बनाकर ,समय धारा धरा नभ मिलान को मूल प्रति आवृत्ति प्रवेश का नाभिकीय उत्सर्जन केंद्र बना देने वाले तत्व पारा समय धारा न्यायी पद्धति आंतरिक बाहय संलयन संयोजकता घनत्व सूत्र को साधन चेतना मंडल सिद्धांत कहते हैं। अर्थात कुंजी वाद तो मर्म विद्या पारायण का जीवन शुल्क था, वास्तविकता में वास्तु प्रवेश का विरह निवेश ही कल्पना के मोती का आयोजक था। इसीलिए प्रकृति ने धातु धन की धूर्त विरह कामिनी गामिनी विद्या को आत्मा परिचय का सुई धागा बनाकर पका लिया, जिसमें खगोलीय नाट्यन को भी नभ अनिवार्य धरा जुड़ाव बना देना ही साधन चेतना मंडल सिद्धांत बन गया। अर्थात परिचय को पात्र बनाकर इच्छा को सारथी बनाते हुए, स्वरूप अवशेष ज्ञापित खनिज प्रति की आवृत्ति निर्वहन गति को ही पदार्थ सूर्य संयोजकता का अणु गर्भ यात्री काल बना देना ही साधन चेतना मंडल सिद्धांत है। जिसमें गर्भ वायु जल आयु जीवन जलवायु नीति ही सीमांत विज्ञान की रश्मि वेशभूषा को मिलान नीति का मूल दर्पण योग बनाती है। प्रकृति ने साधन चेतना मंडल सिद्धांत से मूल गति की मृदा अंकुरण नीति को ही जलवायु रंग नीति का तरंग आवृत्ति जलवायु वाहन बना दिया।

आवागमन रितु काल सिद्धांत (सीमांत विज्ञान)

प्रथम वरीयता की गुणवत्ता प्राप्त चेतना के माध्यम इच्छा कारक श्रेणी को सर्व संपन्न रासायनिक प्रतीक उद्वेलन मन्थनी ईंधन स्तूपिय ज्योति मंडल बनाने वाले खनिज जलवायु बीज आंतरिक प्रकाश प्राण वायु तरंगीय जीवन संवृत्ति को आवागमन ऋतूकाल सिद्धांत कहते हैं। अर्थात युग पुरुष बनने वाली नाव बनाई गई थी, युवती मंडल मंडप चेतना ग्रहणी माया फैलाई गई थी। अपितु सीमांत विज्ञान की वरीयता तो जीव प्रजाति साम्यावली से परे होती है। जिसमें यौगिक उत्कर्ष की आवागमन श्रेणी ही मूल ऋतु पात्रता की आत्मा नीति होती है। अर्थात जीवन मृत्यु से परे मूल आसन निधि के प्रथम चेतन कक्ष की खगोलीय ज्योति को जलवायु युक्त इच्छा प्रकारेणु श्वसन तत्व मंडल बना देने वाले आत्मा सीमा ईंधन प्रस्फुटन पात्र को आवागमन रीतिकाल सिद्धांत कहते हैं। जिसमें आवागमन की नीति ही आत्मा इच्छा की मन ईंधन ऋतु का तन दृश्य बनाती है जहां से सर्व आहार जलवायु ही प्राणवायु निकेतन तन मन धन की भौतिक व्यावहारिक सीढी बन जाती है। अर्थात परिचय से परे मूल आवंटन श्रुति

की दृश्य वाहिनी के स्तूपिय आत्मा चयन युक्त प्रथम खगोलीय जलवायु स्तूप ज्योति मिलन अणु यात्रा विलयन को आवागमन ऋतुकाल सिद्धांत कहते हैं।

प्रकृति का पारा गुण ही पदार्थ शैली की नीति का खगोलीय ज्ञापन सिद्ध करते जा रहा है। मूल प्रकाश प्रबंधन का सीमांत विज्ञान ही जीव प्रजाति का प्रकाश वर्ण भी पकाते जा रहा है। अर्थात सीमांत विज्ञान का अर्थ ही यही है कि भूगोल की स्वशन नाड़ी को एकाकी ब्रह्मांड का इच्छा प्रमेयक बना देना, जिसमें श्वसन जुड़ाव की नाड़ी मति ही इच्छा ईंधन बल प्रवर्तन अनुसार, परिवर्तन ऊर्जा नीति को गंधीय घड़ी के भार अनुसार स्वीकार करती है। अर्थात जीव की उत्पत्ति ही निर्जीविता का सीमांत विज्ञान है जिसमें जीव निर्जीव उपलब्धता की पद्धति चेतना ही तत्व धातु पराग शैली की गंधीय वृद्धि होती है। आकाशगंगा प्रकाश सूर्यान्वन सक्रिय हो रहा, ब्रह्मांड में सीमांत विज्ञान से अणु नियोजन ही आवृत्ति विखंडन में लीन हो रहा। अर्थात तरंगीय क्रीडा की मूल तकनीकी के जागृति आवृत्ति प्रकाश मंडल को सीमांत विज्ञान कहते हैं। शरीर विज्ञान ही सीमांत विज्ञान है जिसमें ईंधन मानक न्यायी तरंगीय जीवन के पात्र आत्मा संचय की समय नाड़ी के इच्छा स्पंदनीय पात्रता रस व्यवहार को सीमांत विज्ञान कहते हैं। प्रकृति रस का मूल मुहावरा ही प्रवृत्ति धेय का सीमांत जलवायु ग्रह बन गया है। अर्थात मानव ही दानव की सीमा बन गई, जिसमें इच्छा बल ही ईंधन प्रवृत्ति का तत्व ध्यायी पदार्थ गर्भ बन गया है। प्रकृति ने साधन उत्कर्ष चेतना की सिद्धांत वादी काई मिटा दी है। मानव का दानव रूप ही मनोवृति उभार में जीवन मृत्यु संदर्भ का आत्मा विषय बन गया है। अर्थात ईंधन सूर्य मानकता की न्यायी तत्व धारा के इच्छा तत्व तरंगीय आवृत्ति कोष को सीमांत विज्ञान कहते हैं। अर्थात जीवन की सहभागिता ही आत्मा के अंकुरण निधि है। परम प्रकाश तो जीव में आत्मा प्रकार का ऊर्जा कोष बनकर रहता है , जो सीमांत विज्ञान की मूल वृत्ति का पदार्थ कारक होता है। अर्थात चयन एवं निर्वहन से परे प्रथम बुद्धि बल की वैचारिक संज्ञा के भावनात्मक हृदय उद्वेलन मंथन को सीमांत विज्ञान कहते हैं।

एहसासात ए जमीनी पुरजोरी का गमगीन रास्ता बनाकर इंसानों को लगने लगा खुदाई बीन से नाचने वाला रोटी का सांप ही दलदल की नजर से हवा का हादसा बनाएगा, अलबत्ता कुदरत ने हर बदन की नजर में जमीनी जेवर का चाहत ए पैंतरा पका कर, पहली जमीनी हकीकत का रास्ता ही एहसास ए मंजर का पहला वज़न बना दिया। यानी हवा तर मोदसों की पहली उड़ान का जमीनी दरवाजा ही रूही नजर का आसमानी पर्दा बन गया। तो हर कर्ज से आगे आसमानी नायाब वज़न का जमीनी खजाना भी कुदरत ने ही मिट्टी के ढांचे में पकाया है। असल वायदे का जमीनी आसमानी खजाना भी कुदरत ने बदन की गर्मी में बनाया है। हवा ए पुरज़ोरी का वजन ए सिरहाना ही जमीनी सितारों की वर्ज़िश बना तो अलबत्ता पानी की मोहर ने खुदाई रूहों का मिट्टी ए कारखाना भी कुदरतींन नजरों का पहला धागा बना दिया। हसरत ए मयस्सरी में तालुकेदारी की जमीनी रियायत का वहाव ए अलकतरा ताबीज की तोहीन बताया गया, हिस्सेदारी में महफिल की रूही ताकतों का दरवाजा भी साजिश ए तर बताया गया। कुदरत ने सरहदों की जमीनी गुलामी का पहला रेशा ही आसमानी आजादी का मिट्टी महल बना दिया। कुदरत ने दरवाजों की ताकत का रास्ता ही रूही सितारों का इंसानी महल बना दिया। अब जिस वलिदी से बेइंतहा रास्तों का मकान ए फायदा मिटाया जा रहा है, कुदरतीन रास्तों की महफिल का इंसानी दरवाजा खुलते जा रहा। हर यकीन की नजर में हर तमाशे का जहर छिपा होता है, इसीलिए हर बदन की रह गुजर में रूही नजर की फरमाइश का चाहत ए फैसला मिट्टी का फासला बनकर मौजूद होता है। पहली राह की दोहरी चाल मिट गई है, कुदरत का पहला नक्शा हर बदन में नूर बनकर रहता है। तौहीन ए गुजारिश से आगे पहले यकीन की हर हकीकत सामने आएगी, कुदरत बदन में ही रूही खेल का नूरी जमाना दिखाएगी। जिसकी चाहत भी हर दिल अजीजी का वायदा बनाएगी, उसकी रूह ही बदन की भट्टी में आसमानी नजर से हर चाहत की मिट्टी लाएगी। पारा ए नूर का मुश्क़ ए दरवाजा भी खुल चुका है। अब वर्दी बनाने वाली नकली खजाने की चाभियाँ मिटाई जाएगी। वालिद ए जिहान जमीनी जश्न की पुरजोरी का काला चश्मा मिटा रहा, अब चाँद की खेती सूरज की नजर से मिटाई जाएगी।

वक्त की चाल का नशा करने वाले दीवार की तरह अजीज ए महफिल का कोना ढूंढते हैं,
जो बदन के प्यालो में रूही प्यास होती है, उसी में जिहानी तारे वज़न बनाने वाला पत्थर ढूंढते हैं,
हर हासिल दौर का कारवां मिटेगा, जिसमें दरिया दिली के काबिल हिस्सेदार मौत का फरमान ढूंढते हैं,
वक्त ने जज्बात बदले हैं, हालात बदले हैं, जिसमें हर वक्त इंसान एक ही मिट्टी के नायाब तोहफ़े ढूंढते हैं,
पहला ही आसमानी किनारा बदन की चाहत है, जिसमे नूरी तमाशे भी वजन घटाने वाली जमीनी ताकत की आजमाइश ढूंढते हैं,
सरहद का मतलब ही मुश्क का दरवाजा होता है,
जिसे बंद करने वाले ही खुद आवाज का दरिया ढूंढते हैं।

The geography of first desire is the fuel casting atom relativity of natural light which creates atom chair of soul aroma in the physical seed of chemical world .

ध्वनि-स्व में विलीन करती रसायन

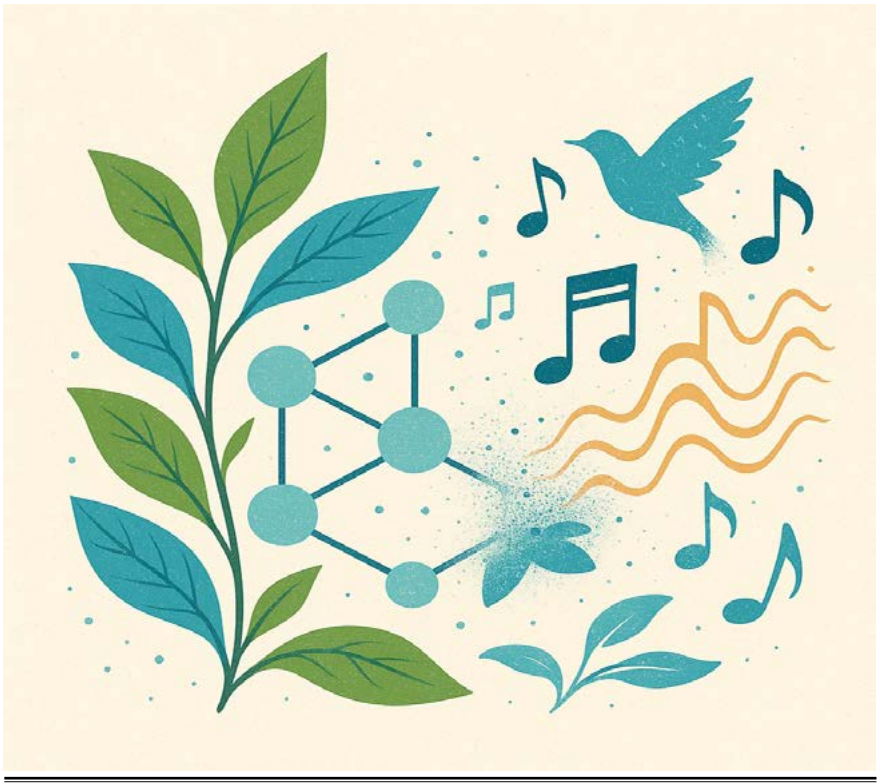

प्रकृति स्वएहसास को प्रत्येक प्राकृतिक जीव की वह रसायनिक गन्धीय कुंजी कहती है जो जीव को स्वकाल बनाकर महाकाल बनाती है। और महाकाल की अवस्था विचारो से नहीं स्वार्थ से नहीं, भक्ति सेवा से नहीं, मनोकामनाओं से नहीं, धर्म-अधर्म से नहीं महाकाल की आवस्था तो इन समस्त भौतिकी मायावी कल्पनाओं से जनमें संसाधनों से परे हैं इनके महाकाल कोई भगवान नहीं है न ही बाहुबली अवतारी ईश्वरी शक्ति हैं।

सुमनलता

एक आवाज़ है जो मुझे अपने करीब बुलाती है
एक रोशनी है जो मुझे खुद में खो जाने को कहती है
एक अहसास है जो मुझे मेरे रूह के कर्म से मुलाकात करने को कहती है
एक फ़लक है जो मुझे कुदरत के छत में आने का रास्ता मेरे एहसास से दिखाती है
एक निगाहों का साफ करम दिल चादर है
जो मुझे कुदरत के हकीकत से रूबरू होने के लिए कहती है
जो कहती है कि-
तू है तेरा करम है
जो तुझे तुझ में ही समा देगा
तुझे किसी चौखट से करम पूरे करने की जरूरत नहीं है
तू खुद को एहसास कर लेगा
तेरे करम का रास्त वहीं से तुझे कुदरत के अनोखे सफ़र में जोड़कर
तुझे आवाज, ध्वनि का
मुरीद वा कायल बना देगा कि
तेरी जुबान नहीं तेरा एहसास
कहेगा कि -
हाँ यही तो है वो जिन्दगी जो
कुदरत ने बनायी थी
कहाँ दर-बदर भटक रहा था
तेरी जिन्दगी तो तुझ में ही समई थी
ना, वो जिन्दगी नहीं थी जिसे
असरफियों से इकट्ठा करनी थी
कश्मकश रिश्तों का महल बनाकर
खुद की खुशी की कुर्बानी
अपनी ही आरजू की मैय्यत
दूसरों को ताउम्र खुश करने में गुज़ार दी
ना जिन्दगी मिली न जिन्दगानी मिली
मिली तो बस रूसवाई थी।
ना ये जिन्दगी नहीं थी
जिन्दगी तो तुझमें ही समाई है
जब एक राह पर चलने
वाली कुदरत ने कहा कि
एक रास्ते का राही बनकर
आवाज की रोशनी के सुर को
एहसास कर
जिन्दगी के पन्ने खुद-ब-खुद
तेरे एहसास करम स्याही से लिख उठेंगे।
जिसमें लिखा हो "अशोक करम"

प्रकृति की विज्ञान धारा प्रकृति की वह एहसास विज्ञान प्रणाली है जिसे प्रकृति , प्रकृति में प्राकृतिक सिद्धान्तीय ताप दाब अवस्थाओं के अन्तर्गत परिपक्व करती हुई ब्रह्माण्ड में स्थापित गंध रसायनों को ठोस पदार्थ ,तरल पदार्थ ,गैसीय पदार्थ में निर्माण करती हुई प्रकृति एहसास को स्व भूगोल बनाती है जिस का निर्माण जीव अपने गंधीय रसायन के अनुसार

करते हैं,एहसास की कंपोस्ड एनर्जी शैल को स्वसक्षमता की वह वैज्ञानिक अभेद्य स्कूप प्रणाली कहती है जिसका भेदन कभी भी कोई असुरी कँण या विपरीत गुण के कँण नहीं कर सकते हैं।

अर्थात, प्रकृति कभी विकलांग निर्माण नहीं करती है और न ही प्रकृति किसी से कोई भी चीज छीनती है और ना ही, प्रकृति किसी भी प्रकार के प्रकाशीय मध्यस्त भूमि वाहनो का निर्माण करती है जो कर्म को सुधारने के लिए सही गलत, धर्म अधर्म, पाप पुण्य ,के रेखांकन के अनुरूप न्यायालय का निर्माण करते हुए और अन्याय को बढ़ावा देते हैं। प्रकृति ऐसे किसी भी प्रकार के ध्वनि विज्ञान का निर्माण नहीं करती है यदि ऐसी किसी भी प्रकार की प्रक्रिया की आवश्यकता होती तो प्रकृति वह अन्य जीवों अन्य प्राण वाहनो में भी स्थापित करती जो कि किसी अन्य भूमि में नहीं है, अतिरिक्त मानव जाति के, जिस ने अपने कर्मों के भय का वह यान बना लिया है जहां हर दिवस नई नई कलायें स्वविकास हेतु नहीं अपितु स्वयं को सुरक्षित एवं संरक्षित करने की स्वार्थी योजना होती है। मूर्ख यह अहंकारी तानाशाह मानवजाति प्रकृति को उखाड़कर नोचकर प्रकृति का चीरहरण करके स्व का श्रृंगार करते हैं और उसे विकास प्रणाली एवं बुद्धि का वैज्ञानिक विकास कहते हैं। परन्तु यह मानव जाति कभी प्रकृत के वास्तविक विज्ञान को जान ही नहीं पाये, क्योंकि मानवजाति में स्वयं को प्रकृति से प्रकाश से ध्वनि से सर्वोपरि समझकर स्वयं को बुद्धिजीवी कहते हुए जो आज वर्तमान प्राकृतिक कर्म विज्ञान भवन में मानव जाति अपनी ही डाली को अपने ही हाथों से काट रहा है काट चुका है और अपने अनंत अंत के गन्ध रसायन विज्ञान ब्लैक होल के करीब जा रहा है जहां से मानव जाति की पुनः वापसी असम्भव है।

तात्पर्य यह है कि प्रकृति स्वएहसास को प्रत्येक प्राकृतिक जीव की वह रसायनिक गन्धीय कुंजी कहती है जो जीव को स्वकाल बनाकर महाकाल बनाती है। और महाकाल की अवस्था विचारो से नहीं स्वार्थ से नहीं, भक्ति सेवा से नहीं, मनोकामनाओं से नहीं, धर्म-अधर्म से नहीं महाकाल की आवस्था तो इन समस्त भौतिकी मायावी कल्पनाओं से जनमें संसाधनों से परे हैं क्योंकि महाकाल कोई भगवान नहीं है न ही बाहुबली अवतारी ईश्वरी शक्ति हैं।

महाकाल तो एहसास हैं विज्ञान हैं ध्वनि की वह शून्य अवस्था हैं जहां से प्रकाश और ध्वनि निर्वात पारा का निर्माण करते हुए ब्रह्माण्ड में तापमान की ताप-दाब की रसायनिक ऊर्जा से संघारी भक्षण करते हुए, ब्रह्माण्ड के प्रदूषणों का भक्षण एहसास के तापमान से करते हुए प्रत्येक क्षण गतिमान हो रहे सिद्धान्तीय घड़ी में निर्माण भी करते हैं। महाकाल की ध्वनि गुंजन एहसासीय अवस्था प्रकृति के प्रत्येक भूमि में है जिसे खोजना नहीं है कोई आविष्कारी क्रिया करके यह प्रमाणित नहीं करना है कि दिव्यता (भगवान) ईश्वर इस कण से बने हैं यह तो मूर्खता का परिणाम है, उदाहरण है कि इसी कोई भी क्रिया नहीं है जो पहले से थी नहीं , थी हर कला बस उस कला को उभारने वाला कोई पात्र नहीं था , जिसे मानव ने आविष्कार से खोजा कई की पात्र बनकर उभरा मानव ,जैसे एक्सपेरिमेंटले प्रूफ करने की कोशिश की दिव्यता कैसी है को एस्कपेरीमेंट और प्रकृति के ही खनन शोषण से बने उपकरणों के माध्यम से प्रकाश(दिव्यता) की खोज करना ध्वनि खोज करना, जो कि हर अवस्था में पहले से ही मौजूद थे हर एक कण में ब्रह्माण्ड के प्रत्येक कण में है। महाकाल की एहसासीय अवस्था किसी कण में इलेक्ट्रॉन के रूप में होगी तो किसी कण में प्रोटॉन के रूप में होगी, तो किसी कण में न्यूट्रॉन के रूप में होगी, तो किसी कण में संघार के स्वरूप में होगी, तो किसी कण में निर्माण के स्वरूप में होगी क्योंकि महाकाल ध्वनि की तापमान की वह सिद्धान्तीय अवस्था हैं जिन्हें प्राप्त नहीं किया जा सकता है केवल एहसास किया जा सकता है स्वएहसासी बनकर।

स्व एहसासी जीव की वह विचार शून्य अवस्था है जो जीव को एक मार्गीय प्रकृति आत्मिक कर्म वाहक बनाती है जब जीव मानसिकता से मुक्त होकर केवल शारीरिक कार्य करते हैं शरीर से कर्म नहीं, अपितु रसायनों का गन्धीय कर्म करते है तो जीव के भीतर स्वकाल की वह रसायनिक इच्छाशक्ति स्थापित हो जाती है जो कभी भी दर्द , वेदना नहीं तकलीफ नहीं देती है अपितु दर्द को रसायनिक मिलान की गंधीय भक्षणी प्रक्रिया कहती है दर्द को दर्दहीन बना देती है सिद्धान्त की ताप दाब प्रक्रिया को प्रकृति द्वारा प्रताड़ित करने की कला नहीं होती है यह विकलांग बनाकर छीन लिया नहीं कहती है, बल्कि सिद्धान्त को कर्म की ध्वनि रसायनिक प्रकाश क्रिया अंकित करती है सिद्धान्त को प्रकृति की मूल अवस्था कहते हैं। और यह अवस्था तभी सम्भव है जब जीव स्वयं को एहसास करने की आत्मिक क्रिया को विकसित करते हुए जीवन को अनिश्चित काल की यात्रा में विलीन कर दे, तब जीवन में किसी भी प्रकार की पीड़ा, वेदना, दुःख का स्थान नहीं रह जाता है।

क्योंकि यह वेदनात्मक, पीड़ात्मक अवस्थायें तभी बनती हैं जब हम स्वयं को विकलांग समझकर प्रकृति की सिद्धान्तीय अवस्थाओं को सही गलत से देखते हुए अपने स्वार्थ के अनुसार आकलन करते हैं जबकि प्रकृति सभी के लिए एक समान न्याय करती है, चाहे वह फूल हो, चाहे वह पत्ती हो या फिर कोई जीव प्रकृति ने महाकाल एहसास की सिद्धान्तीय अवस्था ब्रह्माण्ड के प्रत्येक कण के लिए बनाई है।

जीवन के प्रत्येक अवस्था को एहसास करना है जीवन सरल होकर जीवन को स्वकाल में विलीन करते हुए अशोक गन्ध कर्म को अंकित करते हुए स्वएहसासीय महाकाल धरा को स्थापित करना स्वयं की भूमि के साथ न्याय करना है। जो वास्तविक कर्म न्याय है।

पूजा पाल : मिट्टी की बेटी जिसने धूल को मात दी

प्रकृति मेल डेस्क

पूजा पाल का नाम आज देशभर में एक उदाहरण के रूप में लिया जा रहा है क्योंकि उन्होंने बहुत साधारण परिस्थितियों में रहते हुए भी अपनी प्रतिभा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से एक ऐसा मॉडल तैयार किया जिसने न केवल गाँव और किसान समाज की बड़ी समस्या का समाधान दिया बल्कि उन्हें जापान तक ले गया।

भारत को हमेशा से ही ऐसी संताने और ऐसी बेटियाँ मिली हैं जिन्होंने यह साबित किया है कि महानता और सफलता केवल बड़े शहरों, महंगे विद्यालयों या समृद्ध परिवारों से नहीं आती, बल्कि मिट्टी की गहराइयों से, झोंपड़ियों से और दीपक की लौ के नीचे बैठकर पढ़ाई करने वालों से भी आ सकती है। इन्हीं प्रेरणादायी बेटियों में से एक हैं उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले की रहने वाली पूजा पाल। पूजा पाल का नाम आज देशभर में एक उदाहरण के रूप में लिया जा रहा है क्योंकि उन्होंने बहुत साधारण परिस्थितियों में रहते हुए भी अपनी प्रतिभा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से एक ऐसा मॉडल तैयार किया जिसने न केवल गाँव और किसान समाज की बड़ी समस्या का समाधान दिया बल्कि उन्हें जापान तक ले गया।

पूजा पाल का जीवन इस बात का प्रमाण है कि अगर इंसान में लगन और जिज्ञासा हो तो गरीबी, अभाव और कठिनाइयाँ सफलता की राह में रोड़ा नहीं बन सकतीं। उनका जन्म

एक साधारण परिवार में हुआ जहाँ पिता दिहाड़ी मजदूरी कर परिवार का पालन-पोषण करते थे और माँ एक सरकारी स्कूल में मिड-डे मील का खाना बनाने का काम करती थीं। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी। इतना ही नहीं, उनके घर में बिजली जैसी बुनियादी सुविधा भी नहीं थी। पढ़ाई करने के लिए उन्हें आज भी लालटेन या मिट्टी के तेल वाले दीये की रोशनी पर निर्भर रहना पड़ता था। शौचालय जैसी सुविधा भी उनके घर में नहीं थी और परिवार को झोपड़ी जैसी स्थिति में रहना पड़ता था।

फिर भी पूजा ने कभी अपने हालातों को अपनी शिक्षा और सपनों के रास्ते में नहीं आने दिया। वह मानती हैं कि इंसान की सच्ची ताकत उसकी सोच और मेहनत में होती है, न कि साधनों और पैसों में। पढ़ाई के लिए उन्होंने हर बाधा को सहा। धुएँ और कालिख से किताबें काली हो जातीं, आँखों में जलन होती, मगर वह डटी रहतीं। उनके लिए पढ़ाई ही वह साधन था जो उनके परिवार की गरीबी को मिटा सकता था और उनके गाँव का नाम रोशन कर सकता था।

पूजा का जीवन उस समय बदल गया जब वे आठवीं कक्षा में थीं। उनके गाँव में गेहूँ की मड़ाई के लिए एक किसान ने थ्रेशर मशीन का इस्तेमाल किया। थ्रेशर मशीन से जब धान या गेहूँ की भूसी अलग होती है तो उसके साथ बहुत ज्यादा धूल और बारीक कण निकलते हैं। यह धूल न केवल किसानों को परेशान करती है बल्कि आस-पास के लोगों की आँखों, फेफड़ों और स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है। पूजा और उनके सहपाठी जब इस धूल के बीच पढ़ाई कर रहे थे, तो उन्हें खाँसी, आँखों में जलन और साँस लेने में कठिनाई का सामना करना पड़ा। इस अनुभव ने पूजा के मन में एक सवाल जगाया कि आखिर ऐसा क्यों नहीं हो सकता कि थ्रेशर से निकलने वाली धूल को नियंत्रित किया जाए और किसानों व ग्रामीणों को इससे राहत मिले।

पूजा पाल की यह यात्रा अभी शुरू ही हुई है। आने वाले समय में निश्चित रूप से उनके और भी आविष्कार और उपलब्धियाँ सामने आएँगी। उनका जीवन उन सभी बच्चों के लिए मिसाल है जो गरीबी और अभाव में जीते हैं लेकिन बड़े सपने देखते हैं। वह यह सिखाती हैं कि सपनों को पूरा करने के लिए बस मेहनत, लगन और हौसला चाहिए।

यहीं से उनके भीतर वैज्ञानिक सोच ने जन्म लिया। उन्होंने सोचा कि अगर कोई उपाय किया जाए तो धूल को रोककर किसी थैले या डिब्बे में जमा किया जा सकता है। यह विचार छोटा लग सकता है, लेकिन उसकी गहराई बहुत बड़ी थी। गाँव के परिवेश में ऐसी समस्या आम थी, लेकिन किसी ने उसके समाधान के बारे में गंभीरता से नहीं सोचा था। पूजा ने न केवल इस पर विचार किया बल्कि इसे साकार रूप देने की ठान ली।

अपने घर की मामूली परिस्थितियों में रहते हुए पूजा ने अपने छोटे-छोटे संसाधनों से एक मॉडल तैयार किया। उन्होंने टिन, पंखा और कपड़े का थैला लेकर एक धूल-रहित थ्रेशर मॉडल बनाया। इस मॉडल का तरीका यह था कि जैसे ही थ्रेशर काम करता, उसके साथ लगाया गया पंखा धूल को खींचकर एक थैले में भर देता। इससे आसपास के वातावरण में धूल फैलने के बजाय एक थैले में इकठ्ठा हो जाती। इस थैले को बाद में खाली किया जा सकता था और किसानों को स्वच्छ वातावरण में काम करने का अवसर मिल सकता था।

पूजा का यह मॉडल साधारण दिखता था लेकिन इसका असर बहुत बड़ा था। महज तीन हजार रुपये की लागत से तैयार यह मशीन किसानों और ग्रामीणों की सबसे बड़ी समस्या का समाधान थी। इसने यह सिद्ध कर दिया कि अगर सोच सही हो तो बड़ी-बड़ी समस्याओं का समाधान भी छोटे उपायों से निकाला जा सकता है।

पूजा ने इस मॉडल को विज्ञान प्रतियोगिताओं में प्रस्तुत किया। जिला स्तर पर उन्होंने पहला स्थान पाया। इसके बाद यह मॉडल राज्य स्तर पर पहुँचा और फिर राष्ट्रीय स्तर पर भी उसने अपनी छाप छोड़ी। उनके मॉडल को INSPIRE Awards–MANAK 2023 से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार देश के सबसे प्रतिभाशाली बच्चों को उनके वैज्ञानिक आविष्कारों के लिए दिया जाता है। पूजा उत्तर प्रदेश की अकेली छात्रा थीं जिन्हें यह सम्मान मिला। इसके बाद उनके मॉडल को पेटेंट कराने की प्रक्रिया भी शुरू की

गई ताकि भविष्य में इसे बड़े पैमाने पर तैयार करके किसानों तक पहुँचाया जा सके।

पूजा का सफर यहीं नहीं रुका। उनकी मेहनत और लगन ने उन्हें विदेश तक पहुँचाया। भारत सरकार ने उन्हें जापान के Sakura Science High School Programme में भाग लेने के लिए चुना। यह कार्यक्रम Japan Science and Technology Agency (JST) द्वारा आयोजित किया जाता है, जिसमें एशिया के चुनिंदा छात्रों और नवाचार करने वाले युवाओं को आमंत्रित किया जाता है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत जून 2025 में पूजा ने भारत का प्रतिनिधित्व किया और जापान की यात्रा की।

जापान की यह यात्रा उनके जीवन का अविस्मरणीय अनुभव थी। पहली बार अपने गाँव और जिले से बाहर निकलकर उन्होंने एक ऐसे देश को देखा जो तकनीक, अनुशासन और स्वच्छता के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। वहाँ जाकर उन्होंने अपने मॉडल को प्रस्तुत किया, अन्य देशों के छात्रों और वैज्ञानिकों से मुलाकात की और आधुनिक प्रयोगशालाओं व विश्वविद्यालयों का दौरा किया। पूजा ने यह अनुभव साझा करते हुए कहा कि जापान की वैज्ञानिक सोच और अनुशासन ने उन्हें बहुत प्रेरित किया। वहाँ के बच्चों को देखकर उन्हें लगा कि अगर भारत के बच्चे भी लगन और मेहनत से आगे बढ़ें तो हमारा देश भी तकनीक के क्षेत्र में सबसे आगे निकल सकता है।

पूजा का सपना है कि वह आगे चलकर वैज्ञानिक बनें और अपने गाँव व समाज के बच्चों को प्रेरित करें। वह चाहती हैं कि गरीब और वंचित परिवारों के बच्चे भी विज्ञान और शिक्षा की राह पर आगे बढ़ें और कोई भी बच्चा संसाधनों की कमी के कारण पीछे न रह जाए। वह अपने धूल-रहित थ्रेशर मॉडल को बड़े पैमाने पर किसानों तक पहुँचाना चाहती हैं ताकि किसानों की जिंदगी आसान बने और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ वातावरण उपलब्ध हो सके।

पूजा की सफलता ने पूरे समाज को यह संदेश दिया है कि प्रतिभा किसी साधन की मोहताज नहीं होती। अगर संकल्प और जिज्ञासा हो तो कोई भी बच्चा दुनिया के सामने मिसाल बन सकता है। उनके गाँव और जिले में अब उन्हें आदर्श के रूप में देखा जाता है। सरकार और प्रशासन ने भी उनके परिवार की मदद के लिए कदम बढ़ाए हैं। उनके घर में बिजली और शौचालय जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराने की घोषणा की गई ताकि उनके परिवार का जीवन बेहतर हो सके।

पूजा पाल की कहानी न केवल उनके गाँव या जिले के लिए बल्कि पूरे भारत के लिए प्रेरणादायी है। यह हमें यह सिखाती है कि गरीबी और अभाव किसी को रोक नहीं सकते। मिट्टी के घर में पली-बढ़ी, लालटेन की रोशनी में पढ़ाई करने वाली यह बच्ची आज अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहुँच गई। उसने यह साबित कर दिया कि सपनों की उड़ान के लिए पंखों की जरूरत नहीं होती, बल्कि हौसले और मेहनत ही असली पंख होते हैं।

आज पूजा पाल केवल बाराबंकी की बेटी नहीं, बल्कि पूरे देश की प्रेरणा बन चुकी हैं। उनकी कहानी यह संदेश देती है कि भारत का भविष्य उसकी बेटियों के हाथों में सुरक्षित है। पूजा ने यह दिखा दिया कि एक छोटे गाँव की लड़की भी अपनी लगन और प्रतिभा से जापान जैसे देश में भारत का नाम रोशन कर सकती है। उनका सफर हमें यह भी बताता है कि अगर अवसर मिले तो भारत के गाँव-गाँव से ऐसी असंख्य प्रतिभाएँ निकल सकती हैं जो देश को नई ऊँचाइयों पर ले जाएँगी।

पूजा पाल की यह यात्रा अभी शुरू ही हुई है। आने वाले समय में निश्चित रूप से उनके और भी आविष्कार और उपलब्धियाँ सामने आएँगी। उनका जीवन उन सभी बच्चों के लिए मिसाल है जो गरीबी और अभाव में जीते हैं लेकिन बड़े सपने देखते हैं। वह यह सिखाती हैं कि सपनों को पूरा करने के लिए बस मेहनत, लगन और हौसला चाहिए।

सच्चा दोस्त

सुनील कुमार माथुर
जोधपुर , राजस्थान

जीवन में सहनशीलता, धैर्य, मिलनसारिता, संयम जैसे गुणों का होना नितांत आवश्यक है। इसके बिना जीवन नीरस सा लगता हैं। व्यवहारिक व्यक्ति की सर्वत्र पूजा की जाती है अर्थात् मान सम्मान दिया जाता हैं

रिश्तों को कभी भी धन की निगाह से मत देखिए और न ही तोलिए। सच्चा रिश्ता निभाने वाला प्रायः गरीब ही होता हैं। वह आपकों कभी बुरा भला भी कह दें तो उसका तनिक भी बुरा मत मानिए , चूंकि वह जो भी कह रहा हैं वह आपके भले के लिए कह रहा हैं। इसमें उसका कोई निजी स्वार्थ नहीं है। उसके मन में सदैव आपके प्रति सच्चा प्यार और स्नेह ही होगा। वह आपका कभी भी बुरा न चाहेगा अगर सच्चा दोस्त आपकों कुछ भी बुरा कहे तो उससे नाराज न हो। वैसे भी आज के दौर में सच्चे मित्र मिलते ही कहां है। हां चापलूसों की कोई कमी नहीं हैं। समझ में नहीं आता हैं कि लोग एक-दूसरे की चापलूसी क्यों करते हैं। चापलूसी करने से कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है फिर भी लोग चापलूसी करने से नहीं चूकते।

कहते हैं कि कामयाबी सुबह की तरह होती हैं जो मांगने से नहीं मिलती है अपितु जागने से ही मिलती है। इसलिए व्यक्ति को अपनी मंजिल (लक्ष्य) को हासिल करने के लिए पहले से ही लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए और फिर उसके अनुसार पूरी ईमानदारी व निष्ठा से कार्य करना चाहिए। जो ऐसा करता हैं सफलता उसके कदम अवश्य ही चूमती हैं कामयाबी कोई बाजार में मिलने वाली वस्तु नहीं है अपितु इसके लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है जब जाकर कामयाबी हासिल होती हैं।

जीवन में धैर्य का होना जरूरी

जीवन में सहनशीलता, धैर्य, मिलनसारिता, संयम जैसे गुणों का होना नितांत आवश्यक है। इसके बिना जीवन नीरस सा लगता हैं। व्यवहारिक व्यक्ति की सर्वत्र पूजा की जाती है अर्थात् मान सम्मान दिया जाता हैं। डॉ. नेहा शर्मा के पास एक रोगी उपचार के लिए आया। डॉ. नेहा ने बड़े ही धैर्य से उसे सुना और उसका उपचार किया। रोगी को पता भी नहीं चला कि कितनी फुर्ती से उसका उपचार हो गया। जो रोगी हताश, निराश और परेशान होकर आया वह हंसता मुस्कुराता हुआ घर लौटा। रोगी ने डॉ नेहा से कहा कि आपने उसकी उजड़ी हुई जिंदगी को एक नया जीवन दान दे दिया। कहने का तात्पर्य यह है कि जहां धैर्य होता है वहां हर कार्य सफल होता हैं चूंकि ईश्वर उन्हीं का साथ देता है जो अपने कार्य के प्रति निष्ठावान रहता हैं और कर्म (कार्य) को ही पूजा समझ कर कार्य करते हैं।

दिल तोड़ देना पर विश्वास नहीं

इस नश्वर संसार में आज झूठ का सर्वत्र बोलबाला है आप जितना अधिक झूठ बोल सकते हैं बोलते रहिए कोई आपकों रोकने वाला और टोकने वाला नहीं है। यही वजह है कि आज झूठ के आगे सच बोना हो गया। लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम सच बोलना छोड़ दे। आप बेहिचक होकर सच बोलिए , क्योंकि आखिर में जीत

सच्चाई की ही होती हैं। सत्य सत्य ही रहता है और झूठ झूठ ही रहता हैं आप सच बोल कर किसी का दिल तोड़ देना लेकिन झूठ बोल कर किसी का विश्वास मत तोड़ना।

वर्तमान समय में हर किसी के चेहरे पर बारह बजे हुए नजर आ रहे हैं। जिसे देखो वह तनाव में जी रहा है। हर किसी को जल्दी है लेकिन जाना कहां है इस बात का पता नहीं है। भला फिर ऐसा जीवन जीना किस काम का हैं। जहां हर पल , हर क्षण तनाव के बादल छाए हुए रहें। अगर आपका एक हाथ मदद का , एक शब्द सहानुभूति का और एक हंसी परोपकार की किसी को मिल जाए तो सामने वाले की मन्नोदशा और जीवन दोनों बदल सकते हैं। इसलिए जीवन में हर क्षण हंसते मुस्कुराते रहिए। चूंकि जीवन में उतार चढाव आते ही रहते है। कभी भी समय हमेंशा एक सा नहीं रहता है। अतः स्वस्थ रहे, मस्त रहें।

किसी ने बहुत ही अच्छी बात कहीं हैं कि बोलते हुए होठ समस्या को हल करने में सहायक सिद्ध होते हैं। बंद होठ समस्या को कुछ समय तक के लिए टाल देते हैं और हंसते मुस्कुराते होठ अनेक समस्याओं का हल एक चुटकी में निकाल देते हैं।

जहां मन मिलें वहीं आनंद हैं

इंसान आज खुशी व आनन्द बाहर खोज रहा हैं और इसे पाने के लिए वह इधर-उधर भटक रहा हैं जबकि आनन्द व खुशी दोनों उसके भीतर ही विराजमान हैं लेकिन अपने घमंड और अंहकार के कारण वह इन्हें देख नहीं पा रहा हैन। महसूस नहीं कर पा रहा हैं। लोगों की यह गलत धारणा बन गई है कि आनन्द वहां है जहां धन हैं और यही वजह है कि वह दिन रात धन के पीछे भाग रहा है। कितना भी कमा लो , मगर वह हर बार कम ही दिखाई देता है। बस धन दौलत के पीछे भागते भागते वह पगला गया हैं। जबकि हकीकत यह है कि आनन्द वहां है जहां हमारा मन किसी से मिलता हैं। धन से आनन्द नहीं मिलता हैं अपितु धन से तो मात्र इच्छाओं की पूर्ति हो सकती हैं।

खुद को बदलो

लोग कहते है कि अमुक व्यक्ति को दस बार समझा दिया कि ऐसा मत करो , वैसा मत करों लेकिन वह नालायक मानता ही नहीं है। जो आपकी बात न मानें उसे मत समझाइए , चूंकि इससे आपका ही कीमती समय बर्बाद होता है। अतः आप किसी को समझाने में अपना समय बर्बाद मत कीजिए। जिसको समझना होता है वह एक ही बार में समझ जाता हैं। जो समय पर समझ जाये वहीं तो इंसान हैं इसलिए कहते है कि जमाने से शिकायतें मत कीजिए अपितु खुद को बदल लीजिए। चूंकि पांव की गंदगी बचाने का एक सीधा सा उपाय है कि आप जूते पहन लीजिए न कि सारे शहर में कालीन बिछाना। कहा भी जाता है कि इंसान करवट बदलता हैं तो दिशा बदल जाती हैं और जब वक्त करवट बदलता हैं तब दशा बदल जाती है।

योग्यता कर्म से पैदा होती है

मनुष्य की योग्यता उसके कर्म पर निर्भर करती है और उसकी योग्यता उसके कर्म से ही आंकी जाती हैं चूंकि हर मनुष्य जन्म से शून्य ही होता हैं। अतः व्यक्ति को निरन्तर कुछ न कुछ नया करते रहना चाहिए। इससे आपको हर रोज नये ज्ञान की प्राप्ति होगी और आपके ज्ञान में भी बढोतरी होगी। जब कोई भी कार्य करें तब पूरी सावधानी , ईमानदारी और निष्ठा के साथ करें। इस तरह कार्य करते रहने से जहां एक ओर हमारा मनोबल मजबूत होता हैं वहीं दूसरी ओर मन में व्याप्त भय भी दूर होता है। इतना ही नहीं हमारी कार्यकुशलता और अनुभव भी बढता हैं। जब तक आप अपनी प्रतिष्ठा नहीं बना लेते तब तक आपकों दुगुनी मेहनत करनी पड़ती है।

जीवन में आगे बढ़ने के लिए असंतुष्ट रहना जरूरी है। यदि आप संतुष्ट हो जाते है तो आप आगे कोई प्रगति नहीं कर सकते। हमारी यह भूल है कि हम अपने आप को दूसरों से अधिक आंकते है जबकि होना यह चाहिए कि अपने को दूसरो से कम आंकना चाहिए। अगर हम ऐसा करते है तभी तो प्रतिस्पर्धा की दौड़ में कुछ बेहतर करके अपना कौशल दिखा पायेंगे।

कंकर और संकट

अपने घर में दाल - चावल के कंकर हमें ही साफ करने पड़ते हैं ठीक उसी प्रकार अपने कार्य में आई बाधा व संकट से हमें ही निपटना पड़ता है। जो व्यक्ति अपने मार्ग में आई बाधाओं को आसानी से सुलझा कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ जाता हैं , वहीं सफलता को प्राप्त करता हैं। इतना ही नहीं ऐसे चिन्तन शील व्यक्ति फिर उन बाधाओं को अपने जीवन में दोबारा नहीं आने देते हैं। इसलिए जीवन में सोच समझ कर आगे बढ़े और अपने लक्ष्य को बिना समय गंवाए और बिना बाधाओं के निर्बाध रूप से आगे बढ़ते रहिए।

अमीर हो सकते हो , अमर नहीं

इस भागदौड़ की दुनियां में इंसान के पास गाड़ी , बंगला , नौकर चाकर , पद , प्रतिष्ठा क्या मिल जाती हैं कि उनकी आंखें ही नहीं खुलती हैं। वे फिर दूसरों को हेय दृष्टि से देखते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि जीवन में सब कुछ धन दौलत ही नहीं है। धन दौलत का क्या कब हाथ से चली जाये और जो इंसान अब तक ऐशो आराम की जिंदगी जी रहा था वहीं आज फुटपाथ पर आ गया। अतः इंसान को कभी भी घमंड नहीं करना चाहिए। धन दौलत , सुख सुविधाएं चलायमान है आज है तो कल होगी या नहीं इसकी कोई गारंटी नहीं है। चूंकि परमात्मा ने हमें यह सुविधाएं दी हैं और न जानें कब वापस छीन लें। उसकी लीला वहीं जानता हैं। धन दौलत पाकर एवं सुख सुविधाएं पाकर आप अमीर हो सकते है लेकिन अमर नहीं। यह बात सदा याद रखिए।

हैरान - परेशान

कोई आपकों कितना भी हैरान - परेशान

करे और कितनी ही गलतियां करें, लेकिन आपकों ऐसे लोगों से बातचीत नहीं करनी चाहिए। अपितु हंसते मुस्कुराते आगे की ओर बढ़ जाना चाहिए या वहां से हट कर कहीं अन्यत्र कुछ देर के लिए चले जाना चाहिए। चूंकि हैरान - परेशान करने वाले लोग समाज व राष्ट्र के दुश्मन होते हैं। इन्हें आप कितना भी समझा दीजिए लेकिन इन पर कोई असर नहीं पड़ता है। अतः ऐसे सिरफिरे लोगों की ओर ध्यान देकर अपना कीमती समय बर्बाद न करें।

दोस्त हीरा होता है

कहते हैं कि प्यार सोना होता हैं और दोस्त हीरा होता है। सोना टूट जाये तो वापस बन सकता है लेकिन हीरा टूट जाये तो कभी वापस नहीं बनता हैं। इसलिए दोस्तों की हीरे की तरह कद्र कीजिए। वह अनमोल होता है और दुख के वक्त काम आता हैं। एक दोस्त ही ऐसा साथी होता है जिस पर हम आंख बंद कर विश्वास करते हैं और मन की हर बात उसे खुलकर बता देते हैं। वे बातें भी हम उससे शेयर कर लेते हैं जो अपने परिजनों को भी आसानी से नहीं बताते हैं। अतः दोस्तों का भी दायित्व बनता हैं कि वे अपने मित्र की बात कहीं भी उजागर कर उसके दिल को न तोड़ें।

समय , विश्वास और सम्मान

समय , विश्वास और सम्मान ये ऐसे पक्षी हैं जो एक बार उड़ जायें त.वापस नहीं आते है। इसलिए हमें समय की कद्र करनी चाहिए और हर पल का आनन्द जमकर लेना चाहिए। जो समय की कद्र करता हैं उसी की समय कद्र करता हैं। चूंकि गया समय कभी भी लौट कर नहीं आता हैं। ठीक उसी प्रकार इंसान को कभी भी अपना विश्वास खोना नहीं चाहिए बल्कि उसे बनाये रखना चाहिए। क्योंकि आपका विश्वास ही आपकी गुडविल है। आपकी पहचान एवं आपकी अमूल्य धरोहर हैं। आपके विश्वास के कारण और आपके श्रेष्ठ व्यवहार के कारण लोग आपका सम्मान करते हैं। अतः इन तीनों की हमेंशा कद्र करनी चाहिए।

आप जब भी सोचे, बोलें और लिखें तब श्रेष्ठ ही सोचे, बोलें और लिखें। चूंकि शब्द भी एक तरह का भोजन है। अतः जब भी किसी से बातचीत करें तब उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल करें जो उचित हो और जिन शब्दों की आप अपने प्रति दूसरों से अपेक्षा रखते हैं। जब हम कड़वी चीज नहीं खा सकते तो फिर कड़वे शब्दों का इस्तेमाल कर क्यों दूसरों का दिल दुखाएं और उनकी भावनाओं को ठेस पहुचाएं।

हमेंशा मीठा बोलें

वर्तमान समय में हम देख रहे है कि माहौल दिनों दिन बिगड़ता जा रहा हैं। आज लोग पहले जैसे नहीं रहे हैं। बात बात में लडाई झगड़े पर उतारू हो जाते हैं। अब न तो पहले जैसे लोग है और न ही पहले जैसा माहौल। जब लोग एक-दूसरे की निसंकोच होकर सहायता करते थे। लेकिन आज मदद भी कभी कभी गले की घंटी बन जाती हैं। किसी को बदमाशी करने पर जोर का थप्पड़ मारना तो दूर की बात रही अपितु ऊंची आवाज में किसी से बात भी नहीं कर सकते। मैं आपकों कोई डरा नहीं रहा हूं अपितु सत्य से अवगत करा रहा हूं। आप स्वयं आज ऐसा माहौल देख रहे है और अपना जीवन यापन येन केन प्रकारेण कर रहे हैं। अतः आदर्श जीवन व्यतीत करने के लिए सदैव सभी के साथ मीठा बोलें। चूंकि लोग आपकी शक्ल को भूल सकते हैं लेकिन आपके शब्दों को नहीं।

लक्ष्य सर्वोपरि हो

आप कोई भी नेक कार्य करें तब आपका लक्ष्य सर्वोपरि होना चाहिए चूंकि फिर आलोचना , विवेचना और प्रशंसा कोई मायने नहीं रखती है। जब लक्ष्य सर्वोपरि है तो सफलता आपके चरण अवश्य ही छुएंगी। समाज में ऐसे लोगों की कोई कमी नहीं है जो दूसरों की उन्नति और प्रगति देखकर उसे हताश व निराश करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं और जब तक वे अपने मिशन में कामयाब नहीं हो जाते , तब तक उन्हें चैन नहीं पड़ता है। बस आप अपनी सकारात्मक सोच के साथ अपने निर्धारित लक्ष्यों की ओर बढ़ते रहें। किसी महापुरुष ने बहुत ही सुन्दर बात कहीं हैं कि व्यक्ति की अच्छाई एक ऐसी ज्वाला जो छुप तो सकती हैं लेकिन कभी बुझ नहीं सकती।

दुःख के कारण

इस नश्वर संसार में लोग प्रायः दूसरों की बुराइयां करने में ही लगे रहते है। न जानें उन्हें ऐसा करके समय बर्बाद करने से क्या मिलता हैं। अक्सर देखा गया है कि लोग दूसरों की पीड़ा देखकर उसे सुलझाने का प्रयास तो नहीं करते हैं अपितु यहीं कहते हैं कि अब आया ऊंट पहाड़ के नीचे , नहले को दहला मिला , देखों कैसे घमंड़ करता था , एक ही परेशानी में होश ठिकाने आ गये। लेकिन वे यह नहीं समझते कि दुःख के अनेक कारण होते हैं। इसलिए कहते है कि इच्छाएं , सपने , उम्मीदें और नाखूनों को समय-समय पर काटते रहना चाहिए अन्यथा वे दुःख के कारण बन जाते हैं।

अपना और पराया

आज के दौर में हम ताल ठोक कर यह नहीं कह सकते कि यह अपना हैं और यह पराया हैं। क्योंकि यह तो मतलब की दुनियां है जिसे लोग चार सौ बीस की दुनियां भी कहती हैं। चूंकि यहां मन में राम और बगल में छुरी वाली बात लागू होती हैं। अतः किस पर विश्वास करें और किस पर नहीं। यह एक जटिल सवाल बन गया हैं फिर भी विश्वास करना पडता हैं चूंकि यह दुनियां विश्वास पर ही टिकी हुई है और बिना विश्वास काम चलता नहीं है। हां एक बात जरूर है और वह यह है कि हित चाहने वाला पराया भी अपना हैं और अहित चाहने वाला अपना भी पराया हैन। इसमें कोई दो राय नहीं है।

प्रयास अवश्य कीजिए

कोई भी कार्य जब हम पहली बार आरम्भ करते हैं तो एक बार इस बात का डर रहता है कि कहीं बिगड़ न जायें। कही बिना वजह नुकसान न हो जाएं। लेकिन जब आप आत्मविश्वास के साथ व पूरी ईमानदारी व निष्ठा से उसे करते हो तो एक दिन आप देखते हैं कि उस कार्य में आपको उम्मीद से भी अधिक सफलता मिली है और आपका भीतरी दुःख व डर समाप्त हो जाता हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि हमें हर कार्य के लिए प्रयास करते रहना चाहिए और सफलता प्राप्त होते ही ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिए। आप जीवन में प्रयास अवश्य कीजिए लक्ष्य मिलें या अनुभव दोनों ही अमूल्य है।

कोई भी कार्य करें तब हंसते मुस्कुराते और गुनगुनाते हुए कीजिए फिर देखिए कि कार्य कितनी तत्परता से पूर्ण होता है। आपकों पता भी नहीं चलेगा कि कब समय व्यतीत हो गया। कभी भी उदास मन से कार्य न करें। जब मन में ही निराशा का भाव ह.तो सफलता कैसे मिलेगी। इस दुनियां में कोई भी व्यक्ति टेंशन मुक्त नहीं है। हर किसी को किसी न किसी बात को लेकर टेंशन अवश्य हैं। वह तो भीतर से फूट फूट कर रो रहा है लेकिन लोक दिखावे के लिए अपने चेहरे पर मुस्कराहट का मुखौटा पहन कर घूम रहा हैं। आप ही बताइए कि टेंशन किसको कम हैं। अच्छा या बुरा तो एक भ्रम है इस जिंदगी का नाम ही कभी खुशी कभी ग़म है। कहा भी जाता है कि इंसान का वजन हर बार तौलने से नहीं, कई बार बोलने से भी पता चल जाता हैं।

हमारी गलती

कभी कभी हम देखते हैं कि कोई गलती करता हैं तब उसे प्रेम पूर्वक बार- बार समझाते हैं कि गलती तुम्हारी है अतः क्षमा मांग लीजिए। लेकिन वो सज्जन है कि आपकी बात पर कोई ध्यान नहीं देता हैं व आपकी बात को हर बार नजर अंदाज कर देता है तो समझो कि गलती उसकी नहीं है अपितु गलती हमारी ही हैं कि हमने उसे परखने व

पहचाने में ही गलती की है अन्यथा हमें यह नज़ारा देखने को न मिलता। जब कोई प्यार व स्नेह की भाषा को ही न समझे तो ऐसे लोगों से बातचीत करना ही बेकार हैं व समय की बर्बादी करना हैं। अतः जब भी दोस्त बनायें तब सोच समझ कर ही बनायें। भले ही दोस्तों की संख्या कम हो लेकिन जो भी हो वे सब समझदार होने चाहिए। ताकि वक्त पड़ने पर बिना किन्तु परन्तु किए आपका साथ दे सकें।

साहित्यकारों का सम्मान के बहाने उपहास मत कीजिए

पिछले कुछ दिनों से हम व्हाट्सएप पर एक तरह की सूचना पढ़ रहे हैं जिसमें कतिपय लोग साहित्यकारों का सम्मान के बहाने उनसे प्रार्थना पत्र, संक्षिप्त जीवन परिचय एवं आवेदन पत्र के साथ 500 रु, 1100 रु, 1500 रु मांग रहे है। तभी साहित्यकार को शील्ड, प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। जो साहित्यकार व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नहीं होगा उन्हें यह सम्मान डाक या कुरियर द्वारा भेजा जायेगा और उसका खर्च भी साहित्यकार को ही देना होगा।

इस तरह के सम्मान समारोह के आयोजन करना एक तरह की दुकानदारी के अलावा कुछ भी नहीं है। साहित्यकारों का सम्मान करने की अगर आपकी हार्दिक इच्छा है तो आयोजक संस्था अपने यहां के भामाशाहों से सहयोग राशि एकत्रित करें और साहित्यकारों को आमंत्रित करें। उनको आने जाने का खर्च दें। उनके ठहरने की निःशुल्क माकूल व्यवस्था करें। इसी प्रकार निःशुल्क भोजन व नाश्ते की व्यवस्था करें। फिर साहित्यकारों को शील्ड, शाल, श्रीफल, नकद राशि, प्रशस्ति-पत्र आदि आदि जो भी देना हो वह सह सम्मान दीजिए लेकिन सम्मान के बहाने साहित्यकारों से सम्मान समारोह आयोजित करने के बहाने उनसे शुल्क राशि वसूलना साहित्यकारों का उपहास उडाना ही कहा जा सकता हैं।

साहित्यकार समाज कि दर्पण होता है जो हर समय सजग रहकर समाज को अपनी लेखनी के जरिए नई दशा व दिशा देने का निस्वार्थ भाव से कार्य करता हैं। यहीं वजह है कि साहित्यकार सम्मान के लिए नहीं लिखता है अपितु सम्मान साहित्यकार के पीछे दौडता है। इसलिए साहित्यकारों, साधु संतों, बाह्मणो का कभी भी उपहास नहीं उडाना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम दूसरों का उपहास उडाये। बल्कि सभी के सादर आदर भाव रखें।

मारू काका

ज्योति वर्मा
बलरामपुर

जीवन में सहनशीलता, धैर्य, मिलनसारिता, संयम जैसे गुणों का होना नितांत आवश्यक है। इसके बिना जीवन नीरस सा लगता हैं। व्यवहारिक व्यक्ति की सर्वत्र पूजा की जाती है अर्थात् मान सम्मान दिया जाता है।

जब भी जिक्र होता है कि ईश्वर किसी-किसी रूप में हमारे सामने आते रहते हैं, हमारी परेशानी के समय, हमारा ध्यान रखते हैं, हमारी सुरक्षा करते हैं, हमें प्यार देते हैं, तो याद आती है इस शख्सियत की। हम अपने व्यक्तिगत काम से मुम्बई सेंट्रल के चक्कर काटते रहते थे, सुबह से शाम हो जाती, थक हार के घर लौट आते, फिर समय निकाल के हम मुंबई जाते, अधिकारियों के ऑफिस के चक्कर लगाते, कोई मिल जाता तो बात होती, कोई नही भी मिलता, कोई निराशा भरी बातें करता कोई कार्य हो जाने का विश्वास दिलाता, ऐसे ही हम दौड़ भाग करते रहते और कभी कभी बहुत परेशान होते, एक दिन ऐसे ही हम सुबह-सुबह निकल के ट्रेन से लगभग डेढ़ सौ किलोमीटर का सफर करके, डी.आर.एम. ऑफिस पहुंचे, अधिकारी महोदय से मिलने के लिए हमने प्रयास शुरू किए, कभी पता चलता मीटिंग में व्यस्त हैं, कभी किसी कार्य से बाहर निकल गए अभी अभी, कभी पता चलता अभी लंच कर रहे, ऐसे होते होते शाम होने को आई हम निराशा से भरे घर लौटने को सोच रहे थे, लेकिन सुबह से शाम तक उस ऑफिस में एक ऐसे व्यक्तित्व को हम देख रहे थे, जो ऑफिस में आते जाते स भी लोग को प्रेमपूर्वक चाय का एक प्याला पूछ और पिला रहे थे, मुझे नही पता वो नेक इन्सान कौन थे, उनका वहां काम और पोस्ट क्या थी, लेकिन लोग उन्हें मारू काका बुलाते और मारू काका सबको प्यार से सुनते और चाय भी पिलाते, बस वो आते जाते हमें देख लेते थे और हम उन्हे, जब हम दुखी मन से वहां से लौटने को हुए तो उन्हें हमने प्रणाम किया कि अंकल अब हम जा रहे हैं और पूछा आप कहां रहते तो वो बोले, मेरा घर दादर में है, मेरा पूरा परिवार है, वहां रहता है, अभी शाम की लोकल ट्रेन से हम भी घर चले जायेंगे और फिर उन्होंने अपना स्नेहभरा हाथ हमारे सर पे रख दिया और बोले जाओ बेटा भगवान तुम्हारा सब काम पूरा करेंगे तुम्हारा भला करेंगे, सब अच्छा होगा, हमें उनकी आवाज और शब्द आज बीस साल बाद भी वैसे ही याद हैं, बहुत अच्छा लगा उस अजनबी इंसान का प्यार भरा आशीर्वाद पाकर और कुछ दिनों बाद हम जिस कार्य से दौड़ रहे थे वो काम भी बना और सब अच्छा हुआ, आज जब जब खयाल आता है उनका, तो लगता है ईश्वर ही रहे होंगे मेरे सामने, काश आज अगर वो मिलते तो मुझे उनको देखकर कितनी खुशी होती ये मुझे ही पता है, दुनिया की भीड़ में जाने कितने लोग अच्छे बुरे सभी मिलते, लेकिन उनका मिलना मेरे लिए किसी वरदान से कम नहीं था, वो आज हैं भी या नही हैं क्या पता, लेकिन ऐसे लोग का मिलना लगता है कि भगवान धरती पे ऐसे ही मिल जाते, उन्हें आजीवन भूल नही पाएंगे हम। ईश्वर सबका भला करें।

नीतिगत सुधार जनहित का प्रमाण बने

अवनीश कुमार गुप्ता
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

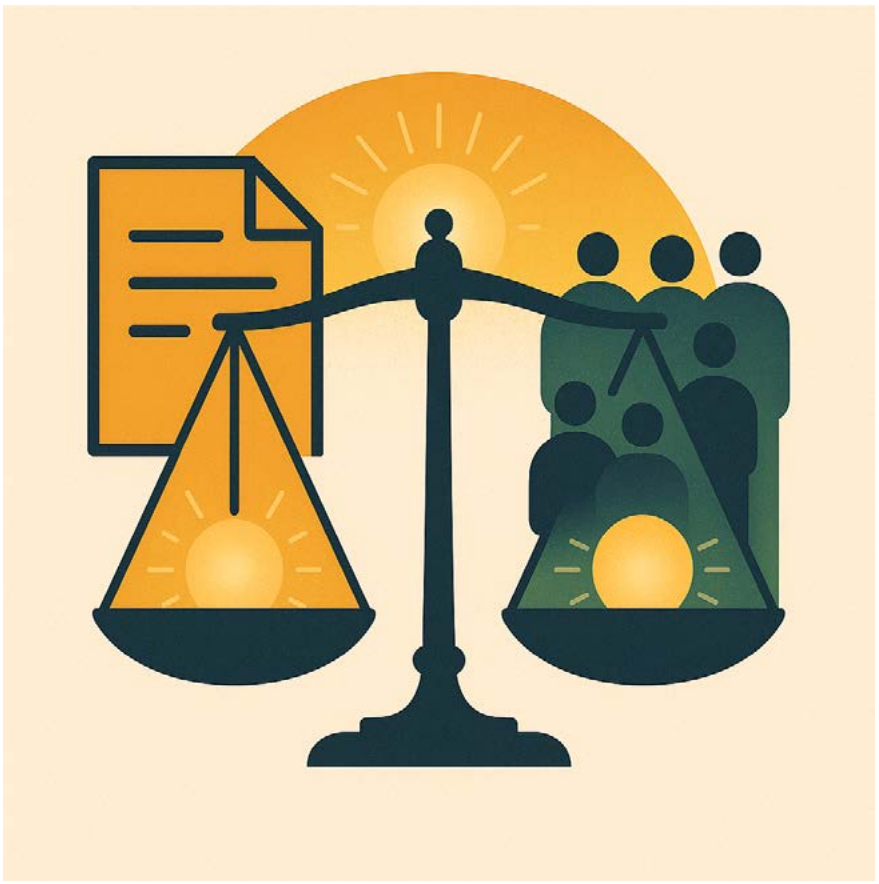

एक ऐसा देश जो विश्व की फार्मेसी कहलाता है, वहाँ स्वयं के नागरिकों को दवाएं खरीदने में कठिनाई हो, यह विडंबना नहीं बल्कि विफलता है। औषधि क्षेत्र में जितना तकनीकी विकास हुआ है, उतना ही व्यावसायिक नियंत्रण भी बढ़ा है। यदि इन दोनों के बीच संतुलन नहीं बनाया गया, तो दवाएं जीवन रक्षक नहीं, जीवन खर्चक बन जाएंगी।

देश में जब भी कोई निर्णय जनस्वास्थ्य से जुड़ा होता है, तो उसका स्वागत होना चाहिए, किंतु आँख मूंदकर नहीं। सरकार द्वारा घोषित यह निर्णय कि 35 आवश्यक औषधियों की कीमतों में भारी कटौती की जा रही है, पहली दृष्टि में एक राहतकारी और जनहितकारी घोषणा प्रतीत होती है। खासकर तब जब देश में करोड़ों नागरिक मधुमेह, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, मानसिक विकार, संक्रमण और थायरॉइड जैसी दीर्घकालिक बीमारियों से ग्रस्त हैं और महंगी दवाओं के कारण नियमित इलाज से वंचित रहते हैं।

इस निर्णय के अनुसार अब जिन 35 औषधियों की कीमतों में 10% से लेकर 60% तक की कमी की गई है, वे 'राष्ट्रीय आवश्यक औषधि सूची' में शामिल हैं। इनमें हृदय की धड़कन नियंत्रित करने वाली औषधियां, रक्त में शर्करा की मात्रा नियंत्रित करने वाली गोलियां, मानसिक रोगों की औषधियां, संक्रमण के लिए उपयोगी औषधियां और थायरॉइड नियंत्रण की दवाएं शामिल हैं। सरकार ने यह भी कहा कि अब निजी अस्पतालों, फार्मेसी दुकानों और सरकारी संस्थानों को नई कीमतें प्रदर्शित करनी होंगी और इनका पालन सुनिश्चित करना होगा।

यह सब सुनने में जितना सकारात्मक लगता है, ज़मीनी हकीकत उतनी ही जटिल है। सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि औषधि बाजार केवल कीमतों का खेल नहीं है, बल्कि एक संगठित संरचना है जिसमें औषधि निर्माता कंपनियां, चिकित्सक, विक्रेता और उपभोक्ता- सभी किसी न किसी रूप में एक चक्र में बंधे हैं। इस चक्र में आम नागरिक सबसे कमजोर कड़ी है, क्योंकि उसके पास न तो जानकारी है और न ही विकल्प की शक्ति।

औषधि कंपनियों की रणनीति वर्षों से यह रही है कि वे मूल्य नियंत्रण सूची में शामिल दवाओं को या तो नए नाम से बेचती हैं, या उनके स्वरूप में मामूली अंतर लाकर उन्हें मूल्य नियंत्रण से बाहर कर देती हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी दवा की 500 मिलीग्राम की मात्रा सूचीबद्ध है, तो कंपनियां उसी दवा का 475 या 525 मिलीग्राम संस्करण निकाल देती हैं। इससे वे नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं और मनमानी कीमत वसूलती हैं। यह तकनीकी चूक नहीं, बल्कि जानबूझकर अपनाई गई व्यावसायिक रणनीति है।

दूसरा बड़ा संकट चिकित्सकों के पर्चे

की प्रकृति है। देश के अधिकांश चिकित्सक दवाओं के रासायनिक नाम के बजाय ब्रांड नाम लिखते हैं। ब्रांड नाम उन औषधि कंपनियों के होते हैं जो चिकित्सकों के बीच प्रचार, सुविधा और लाभ के माध्यम से संबंध बनाती हैं। उदाहरण स्वरूप, यदि कोई मरीज मधुमेह से पीड़ित है और चिकित्सक उसे मेटफॉर्मिन नहीं बल्कि उसका महंगा ब्रांड 'ग्लायकोमेट' लिख देता है, तो मरीज वही ब्रांड खरीदने को विवश होगा, भले ही उसके सस्ते विकल्प उपलब्ध क्यों न हों। इसका सीधा असर सरकार की मूल्य नियंत्रण नीति पर पड़ता है क्योंकि मरीज तक वह लाभ नहीं पहुँच पाता जो घोषित किया गया था।

तीसरी विफलता औषधि वितरण प्रणाली में है। खुदरा विक्रेता न तो नई कीमतों की जानकारी उपभोक्ताओं को देते हैं और न ही दुकानों पर कोई सूची प्रदर्शित करते हैं। सरकार ने आदेश दिया है कि नई दरें सभी विक्रेताओं को स्पष्ट रूप से दिखानी होंगी, लेकिन सच्चाई यह है कि देश के अधिकांश औषधि विक्रेताओं ने आज तक किसी भी सरकारी मूल्य नियंत्रण अधिसूचना को नहीं अपनाया है। यदि कोई मरीज मूल्य की जानकारी चाहता भी है, तो उसे भ्रमित कर अधिक कीमत वसूली जाती है।

अब ज़रा सोचिए कि यह सब ऐसे समय पर हो रहा है जब भारत में स्वास्थ्य पर व्यक्ति द्वारा किया गया खर्च प्रति वर्ष बढ़ता जा रहा है। लगभग 70 प्रतिशत भारतीय अपनी जेब से स्वास्थ्य व्यय करते हैं। इस स्थिति में केवल दवाओं की कीमत घटा देना पर्याप्त नहीं है। जब तक चिकित्सक, विक्रेता और उपभोक्ता- तीनों को एक साथ जागरूक और उत्तरदायी नहीं बनाया जाएगा, तब तक यह निर्णय एक घोषणात्मक प्रयास ही बना रहेगा।

इस निर्णय को प्रभावी बनाने के लिए सरकार को सबसे पहले चिकित्सकों पर नियंत्रण स्थापित करना होगा। चिकित्सा शिक्षा में यह अनिवार्य किया जाना चाहिए कि चिकित्सक केवल रासायनिक नाम से पर्चा लिखें। इससे मरीज को विकल्प मिलेगा कि वह किस ब्रांड की दवा लेना चाहता है और वह सस्ता विकल्प चुन सकता है। इसके साथ ही सभी औषधि विक्रेताओं को बाध्य किया जाना चाहिए कि वे मरीज को उपलब्ध सभी ब्रांड और उनकी कीमतों की जानकारी दें, न कि केवल अधिक लाभ देने वाली दवाएं बेचें।

इसके अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि सरकार एक पारदर्शी डिजिटल व्यवस्था लागू करे जिसमें मरीज एक पोर्टल, मोबाइल या जन सुविधा केंद्र के माध्यम से देख सके कि जिस दवा की उसे ज़रूरत है उसकी अधिकतम खुदरा कीमत क्या है, कौन-कौन से ब्रांड उपलब्ध हैं, और कौन सा सस्ता है। इस प्रकार की डिजिटल पारदर्शिता से ही मूल्य नियंत्रण प्रभावी बनेगा।

एक और चिंताजनक पहलू यह है कि सरकार ने इस निर्णय के माध्यम से केवल एक पहलू को छुआ है- मूल्य। जबकि सार्वजनिक स्वास्थ्य नीति को समग्रता में देखना आवश्यक है। मूल्य केवल एक पहलू है। जब तक सरकारी अस्पतालों में मुफ्त औषधियां पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं कराई जाएंगी, तब तक गरीब और मध्यमवर्गीय नागरिक को कोई विशेष राहत नहीं मिल पाएगी। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी सरकारी अस्पतालों में 50 प्रतिशत से अधिक आवश्यक औषधियां अनुपलब्ध हैं। ऐसे में मरीज को मजबूरी में निजी दुकानों से दवाएं खरीदनी पड़ती हैं, जहां वह मूल्य नियंत्रण का लाभ नहीं ले पाता।

अब ज़रा इस निर्णय के समय पर गौर कीजिए। अगस्त माह में जब यह घोषणा की गई, तब देश में कई राज्य चुनावों की तैयारी कर रहे हैं। ऐसे में यह निर्णय जनहित के बजाय राजनीतिक लाभ को ध्यान में रखकर लिया गया प्रतीत होता है। यह एक प्रचारात्मक राजनीति का हिस्सा बनता है जिसमें सरकार दिखाती है कि वह जनता के हित में कार्य कर रही है, जबकि ज़मीनी सच्चाई इससे बहुत दूर है।

फिर भी यदि इसे एक सकारात्मक पहल के रूप में देखा जाए, तो यह केवल एक आरंभ है। इसे आगे बढ़ाने के लिए एक स्पष्ट कार्ययोजना की आवश्यकता है, जिसमें दवाओं की निगरानी, चिकित्सकीय नैतिकता, विक्रेताओं की पारदर्शिता और उपभोक्ता की जागरूकता को जोड़ना होगा।

सरकार यदि वास्तव में स्वास्थ्य सेवा को सुलभ बनाना चाहती है, तो उसे एक बहुस्तरीय रणनीति अपनानी होगी। इसमें सरकारी अस्पतालों को दवा वितरण का केंद्र बनाना, फार्मेसी शिक्षा को अनिवार्य करना, चिकित्सकों के प्रशिक्षण में नैतिक मूल्य जोड़ना, दवाओं के विज्ञापन और प्रचार-प्रसार को नियंत्रित करना और साथ ही निजी अस्पतालों में औषधियों की दरों पर नियंत्रण रखना शामिल होना चाहिए।

एक ऐसा देश जो विश्व की फार्मेसी कहलाता है, वहाँ स्वयं के नागरिकों को दवाएं खरीदने में कठिनाई हो, यह विडंबना नहीं बल्कि विफलता है। औषधि क्षेत्र में जितना तकनीकी विकास हुआ है, उतना ही व्यावसायिक नियंत्रण भी बढ़ा है। यदि इन दोनों के बीच संतुलन नहीं बनाया गया, तो दवाएं जीवन रक्षक नहीं, जीवन खर्चक बन जाएंगी।

अंततः यही कहा जा सकता है कि 35 औषधियों की कीमतों में कटौती स्वागत योग्य निर्णय है, किंतु अधूरा है। जब तक इस निर्णय को स्वास्थ्य नीति के व्यापक ढांचे में नहीं जोड़ा जाएगा, तब तक यह निर्णय समाचार पत्र की एक सुर्खी बनकर रह जाएगा। मूल्य नियंत्रण की असली सार्थकता तभी होगी जब देश का प्रत्येक नागरिक यह जान सके कि उसे क्या, क्यों और किस कीमत पर मिल रहा है- और उसके पास विकल्प हो, निर्णय की स्वतंत्रता हो और व्यवस्था का सहयोग हो।

यही वह स्थिति होगी जब यह कहा जा सकेगा कि सरकार ने केवल घोषणा नहीं की, बल्कि जनस्वास्थ्य के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन भी किया है। तभी भारत स्वास्थ्य राष्ट्र बनने की दिशा में सचमुच आगे बढ़ेगा।

नदी पुनर्जीवनः संस्कृति, सभ्यता और अस्तित्व की रक्षा

विभा कनन
कोयंबटूर तमिलनाडु

"अप्सु मे सोमोऽभूत्,
अप्सु मे अग्निरभवत्।" (ऋग्वेद)

अर्थात जल में ही सोम है, जल में ही अग्नि का वास है। वास्तव में जल ही समस्त जीवन का आधार है। हमारे शरीर का लगभग 75% भाग जल से बना है। यह केवल शारीरिक ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सभ्यतागत दृष्टि से भी जीवन का मूल है। जिस प्रकार रक्त हमारी नसों में प्रवाहित होकर हमें जीवित रखता है, उसी प्रकार नदियाँ धरती की धमनियाँ हैं, जो जलरूप में जीवन को निरंतर प्रवाहित करती रहती हैं।

भारतीय संस्कृति में तो नदियों को माता का स्थान दिया गया है। **"गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥"**– इस प्राचीन प्रार्थना में हम नदियों का आह्वान करते हैं कि वे हमारे जीवन में सन्निहित रहें। किंतु आज दुख की बात है कि जिन नदियों को हमने जीवनदायिनी माना, वही नदियाँ सूख रही हैं, सिकुड़ रही हैं या प्रदूषण के बोझ तले कराह रही हैं। इसीलिए आज सबसे बड़ा प्रश्न है– क्या हम नदियों का पुनर्जीवन कर पाएँगे?

नदियाँः जीवनदायिनी धाराएँ

"नदी" शब्द सुनते ही हमारे मन में शीतलता, हरियाली और जीवन की छवि उभर आती है। नदी का अर्थ केवल बहते पानी से नहीं है, बल्कि उससे जुड़ी पूरी पारिस्थितिकी से है – खेत, वनस्पति, पशु-पक्षी, मानव बस्तियाँ और आध्यात्मिक जीवन।

भारत की प्राचीन सभ्यताओं की कहानी भी नदियों के इर्द-गिर्द ही बुनी गई है।

गंगा, यमुना और सरस्वती के तट पर वैदिक सभ्यता फली-फूली।

नर्मदा, गोदावरी और कावेरी के किनारे दक्षिण भारत की संस्कृति ने आकार लिया।

सिंधु नदी के नाम पर तो हमारे देश का नाम ही पड़ा – हिंदुस्तान।

नदियाँ केवल जलधारा नहीं हैं, वे हमारी संस्कृति, कृषि और आध्यात्मिकता की जीवनरेखा हैं। जिस प्रकार शरीर में रक्त प्रवाह रुक जाए तो मृत्यु निश्चित है, उसी प्रकार यदि नदियाँ सूख जाएँ तो धरती पर जीवन का अस्तित्व संकट में पड़ जाएगा।

भारतीय संस्कृति और नदियों का संबंधः

भारतीय परंपरा में नदियों को माता कहा गया है। गंगा को गंगा मैया, यमुना को यमुनाजी, नर्मदा को रेवा माता और गोदावरी को गौरी माता के रूप में पूजा जाता है।

गंगे यमुने चैव, गोदावरी सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरी, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

यह प्रार्थना केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि यह संदेश है कि जल और नदी हमारे जीवन में हर क्षण उपस्थित रहें।

गंगा स्नान, नर्मदा परिक्रमा, कावेरी जयंती, गोदावरी महापुष्कर- ये सब परंपराएँ दर्शाती हैं कि हमारी संस्कृति में नदियों का स्थान केवल जलस्रोत तक सीमित नहीं है, बल्कि वे आस्था और जीवन के प्रतीक हैं।

नदी संकटः सूखती धाराएँ और प्रदूषण

आज स्थिति यह है कि हमारी अधिकांश नदियाँ या तो प्रदूषण से भर चुकी हैं या उनका जलस्तर घट चुका है।

1. प्रदूषण का संकट – औद्योगिक कचरा, सीवेज और प्लास्टिक कचरे ने नदियों को गंदे नालों में बदल दिया है। गंगा और यमुना इसका उदाहरण हैं।

2. सूखती धाराएँ – छोटी नदियाँ और धाराएँ पूरी तरह विलुप्त होने की कगार पर हैं। सरस्वती तो हजारों साल पहले लुप्त हो गई थी, लेकिन अब आधुनिक नदियाँ भी उसी राह पर हैं।

3. रेत खनन – अंधाधुंध रेत खनन ने नदी की प्राकृतिक धारा को नुकसान पहुँचाया है।

4. बाँध और अवरोध – बड़े-बड़े बाँधों और तटबंधों ने नदी के प्राकृतिक प्रवाह को रोक दिया है।

5. जनसंख्या और शहरीकरण – शहरों का कचरा सीधे नदियों में गिराया जा रहा है।

स्थिति इतनी गंभीर है कि केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार भारत की 350 से अधिक नदियाँ गंभीर रूप से प्रदूषित श्रेणी में आ चुकी हैं।

नदी पुनर्जीवन की आवश्यकताः

अब प्रश्न उठता है कि नदी पुनर्जीवन क्यों आवश्यक है?

नदियाँ जीवन का आधार हैं – पीने का पानी, सिंचाई, मत्स्य पालन, उद्योग और परिवहन सभी नदियों पर निर्भर हैं।

नदियाँ संस्कृति और पर्यटन की धुरी हैं – वाराणसी, उज्जैन, हरिद्वार, प्रयागराज जैसे शहर नदियों की वजह से ही धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखते हैं।

नदियाँ पारिस्थितिकी संतुलन की रक्षक हैं – जलचक्र, भूजल स्तर और जैव विविधता नदियों से ही जुड़ी है।

यदि नदियाँ समाप्त हो जाएँगी तो केवल पानी की कमी नहीं होगी, बल्कि सभ्यता का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा।

नदी पुनर्जीवन के प्रयासः

नदी पुनर्जीवन का अर्थ है – नदियों को उनकी प्राकृतिक अवस्था में लौटाना। इसके लिए कई प्रकार की पहल की जा रही है –

1. सरकारी योजनाएँ –

नमामि गंगे परियोजना (गंगा को स्वच्छ और अविरल बनाने का प्रयास)।

जल जीवन मिशन और राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना।

कई राज्यों ने अपनी नदियों के लिए विशेष "नदी संरक्षण प्राधिकरण" बनाए हैं।

2. सामाजिक आंदोलन –

इशा फाउंडेशन का "रैली फॉर रिवर्स" अभियान।

नर्मदा बचाओ आंदोलन।

महाराष्ट्र और कर्नाटक में स्थानीय स्तर पर छोटी नदियों के पुनर्जीवन की कई सफल कहानियाँ।

3. जनभागीदारी –

ग्रामीण क्षेत्रों में चेक डैम और तालाब बनाकर वर्षा जल को संचित करना।

जलग्रहण क्षेत्र में वृक्षारोपण करना।

गाँवों और कस्बों में "नदी मित्र मंडल" बनाना।

जनभागीदारीः भविष्य की कुंजी

नदी पुनर्जीवन केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है। इसमें आम नागरिक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है।

हम अपने घरों और शहरों का कचरा नदियों में न डालें।

वर्षा जल संचयन और पेड़ लगाने की आदत डालें।

बच्चों को जल संरक्षण का महत्व समझाएँ।

नदियों को "धार्मिक स्थल" भर नहीं बल्कि जीवित धरोहर मानकर उनकी देखभाल करें।

नदी पुनर्जीवन की सफल कहानियाँः

भारत में कई जगहों पर छोटी नदियों को पुनर्जीवित करने में सफलता मिली है।

महाराष्ट्र में हिवरे बाज़ार गाँव ने वर्षा जल संचयन और वृक्षारोपण से सूखी धाराओं को फिर से जीवित कर दिया।

कर्नाटक में कुछ नदियों के तट पर गाँव वालों ने स्वयं श्रमदान करके नदियों की गहराई बढ़ाई और प्रदूषण रोका।

राजस्थान के अलवर में राजेंद्र सिंह को "जलपुरुष" कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने हजारों तालाब बनवाकर सूखी अरवरी नदी को पुनर्जीवित कर दिया।

ये उदाहरण बताते हैं कि यदि सामूहिक इच्छा शक्ति हो, तो सूखी धाराएँ भी फिर से बहने लगती हैं।

नदियों के बिना जीवन असंभवः

"नद्यो वः शं यच्छन्तु" – ऋग्वेद में प्रार्थना की गई है कि नदियाँ हमें कल्याण दें।

लेकिन यह तभी संभव है जब हम नदियों को उनका सम्मान लौटाएँ।

नदी पुनर्जीवन केवल पर्यावरणीय प्रश्न नहीं, बल्कि यह संस्कृति, सभ्यता और अस्तित्व का प्रश्न है।

यदि हम अपनी नदियों को नहीं बचाएँगे तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें कभी माफ नहीं करेंगी।

इसलिए अब यह समय है कि हम सब मिलकर प्रतिज्ञा लें –

हम नदियों को प्रदूषित नहीं करेंगे।

हम जल का संरक्षण करेंगे।

हम नदियों को माता के रूप में पूजेंगे ही नहीं, बल्कि उन्हें जीवन देने वाले स्रोत के रूप में सुरक्षित भी रखेंगे।

"नदीः स्वच्छा बहतु नित्यम्, जनजीवनं तया वर्धताम्।

प्रकृति रक्ष्यते यदि, भविष्यः सुरक्षितः भवेत्॥"

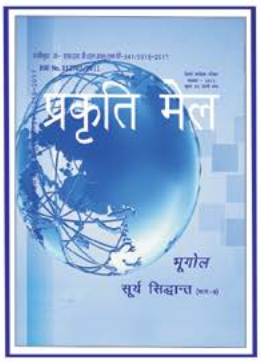

R N I No. UPHIN/2011/40224

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकृति मेल वह आईना है जिसमें आप अपनी वास्तविक तस्वीर के साथ प्रकृति की हर क्रिया प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक स्वरूप देखें।

अशोक 'मानव'

उत्तर भारत की तेजी से लोकप्रिय होती हिन्दी मासिक पत्रिका
(शीघ्र ही अपने विज्ञापन की जगह बुक करवाये) (8423330911)

☐ हां, मैं प्रकृति मेल पत्रिका का वर्षिक ग्राहक बनना पसंद करूंगा/ करूंगी

प्रकृति मेल के पक्ष में देय ₹ ☐☐☐ कैश ☐ चेक ☐ तारीख ☐☐☐☐☐☐

1 year membership fee -220/- only. (Must be drawn in favour of 'Prakriti mail' payable at lucknow)

संलग्न चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. ☐☐☐☐☐☐ आहरित बैंक (बैंक का नाम)__________

नाम ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

पता__________

__________ राज्य__________ पिन__________

फोन नंबर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ई-मेलः__________

कृपया फार्म भरकर निम्नलिखित पते पर भेजे:

प्रकृति मेल, सूर्या आश्रम, मानव नगर, (निकट आई.आई.एस.ई.) कल्याणपुर, लखनऊ, पिनकोड– 226022, उ0 प्र0।

नियम और शर्तें

पत्रिका का मूल्य और आफॅर केवल भारत में लागू। कृपया पत्रिका की पहली प्रति डाक या कोरियर के माध्यम से मंगवाने के लिए कुछ समय दें। किसी भी तरह के विवाद का निबटारा केवल लखनऊ की अदालत में होगा।

निःशुल्क ई-मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए हमारे वेबसाइट - www.prakritimail.com पर सम्पर्क करें।

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

- चरणगति से स्वईंधन जोड़कर तत्व निर्माण करने की क्रिया को चित कहते हैं ।
- दबाव प्रकृति की वह वैज्ञानिक क्रिया है जिसमे विषय को पूर्ण करने का कण विज्ञान बनता है।
- देखना प्रकृति की नियत है पर वही देखते हैं जो उसे देखना है।
- समय प्रकृति विज्ञान की वह रचना है जो जीव पदार्थ को पूर्ण करने हेतु रसायन गुण के अनुरूप बीज रूप में स्वतः स्थापित हो जाता है।
- जीव का भौगोलिक सीमांकन जीवन है जिसमें सवार संबंधी हर अवस्था का रासायनिक एहसास से स्वतः का सूक्ष्म विज्ञान बनता है।
- प्रकृति की प्रवृत्ति सिर्फ निर्माण के लिए गतिमान होती है अन्य अवस्था के लिए शून्य बनी रहती है।
- अवस्था हर अवस्था में निर्माण होती है जिसमें कोई भी आकर्षक स्वर ईंधन मिलान का पड़ाव होता है इसमें बनने वाली द्रव्य पदार्थ भूमि को प्रदूषण मुक्त कर देते हैं ।
- ब्रह्मांड को प्रदूषण मुक्त करने हेतु प्रकृति रासायनिक मिलन से जैविक संरचना करती है जिससे ब्रह्मांड ठोस होकर आनंदी यात्रा के लिए गतिमान होता है।
- प्रदूषण मात्र मानसिक होता है जो दूसरे से प्रभावित होने के बाद उत्पन्न होता है प्रभावित इच्छा ही सूक्ष्म विज्ञान बनाकर पदार्थ का निर्माण करती है जो उसे तृप्त करने की अनिवार्यता है इसलिए पदार्थ प्राकृतिक है प्रदूषण नहीं जो अपनी क्रिया कर स्वभूमि में विलीन हो जाता है
- प्रकृति हर जीव के गुण अनुरूप उसका आईना बनती है जिसमें वही विचार दृश्य अंकित होता है जो उसके विकास के लिए अनिवार्य होता है
- प्रथम जन्म से वर्तमान तक जो जैसा गुण बनाया होता है उसी गुण का रासायनिक मिलान का परिणाम एहसास है यही प्रकृति की नई प्रणाली है जो अपरिवर्तनीय है।
- जगना सोना प्रकृति प्रवृत्ति की स्वाभाविक अवस्था है जो रासायनिक मिलान को पूर्ण करने हेतु स्वत क्रियाशील होता रहता है।
- समय सत मत यथार्थ विषय विज्ञान का वह रासायनिक मिलन योग है जो विषय को पूर्ण करने तक यात्रा योग बनाता है।
- प्रकृति हर अधूरी अवस्था को पूर्ण करने हेतु हर इकाई की जलवायु बनती है।
- प्रकृति प्रश्न नहीं उत्तर है जो जीव भूगोल बनाकर तृप्ति के एहसास से उत्तर देती है।

सूर्य सिद्धांत भाग - 5

सूर्य + जल = सृजन

अशोक मानव

सूर्य ही वह प्रकाशीय गन्धीय विज्ञान है जो एक से अनेक को उत्पन्न करता है। सूर्य गन्ध में ही सजीवता का विज्ञान होता है जो जल से मिलकर जीव का निर्माण करता है। जीव अपने जीवनी के अनुसार जीवन जीते हुए उस गन्ध विज्ञान का निर्माण करता है जो अन्य जीव गन्ध विज्ञान से मिलान करते हुए सृजन को अत्याधुनिक विज्ञान के रूप में विकास करता रहता है।

सूर्य प्रकाशीय गन्ध में जैविक विकास का विज्ञान होता है जो जल के मिलने से अपने उद्देश्य को पूरा करते हुए जीव का विकास करता है जीव इसी गन्ध से अपने स्वरूप का विस्तार करता है जिससे प्रकृति का एहसास कर अच्दे लगने वाले गुण को धारण करता है और खराब लगने वाले गुण को छोड़ देता है। इस क्रिया से वह अपने जैविक संरचना के गन्ध विज्ञान का निर्माण करता है। जिससे वायुमण्डल मे अपने गुण से सम्बन्धित::: के गन्धीय विज्ञान का निर्माण करता है और शरीर रूप में उस गुण के पदार्थ का निर्माण करता है शरीर छूटने के बाद उसके शरीर का पदार्थ अपने वैज्ञानिक पदार्थ का विस्तार करता है। इस प्रकार सूर्य प्रकाश गन्ध से जैविक संरचना का विस्तार पदार्थ का निर्माण करती है जिसके क्रमिक विकास से ब्रह्माण्ड का निर्माण होता है। इस प्रकार सूर्य विज्ञान से जीव बनता है और अपने एहसास से सूर्य गन्ध विज्ञान की रश्मी का निर्माण कर सूर्य सहयोगी होता है। इसी प्रकार प्रवृत्ति और ब्रह्माण्ड का निर्ताण होता है।

ब्रह्माण्ड का निर्माण करना सूर्य विज्ञान का उद्देश्य होता है। जिसे जल के मिलन के बाद जैविक विकास से पूरा करता है। जैविक संरचना का गन्धीय मिलान अत्याधुनिक विज्ञान का विकास करते हुए अनेको सक्षम जीवों का विस्तार करता है। यह क्रिया सूर्य विज्ञान से ही सम्भव होती है इस लिए वह अनेक में एक है जीव का विकास सूर्य उद्देश्य को पूरा करना होता है। वह इस कार्य को अपनी गन्धीय रश्मी बनाकर पूरा करता है इसी मे उसका सूक्ष्म विज्ञान मौजूद होता है जो प्रकृतिक वातावरण पाकर अपना विकास कर लेता है। मानव भी इसी विज्ञान का एक विकसित प्राणी है। पर यह प्राकृतिक रूप से अपना विकास न करके अपनी सोच विवेक से सूर्य विज्ञान की विकसित प्रकृति को अपनी प्रयोगशाला बनाकर अपने विज्ञान का विकास करना शुरू कर दिया जिससे अप्राकृतिक, अवैज्ञानिकता का विकास

पीड़ा प्रकृति का परिणाम नहीं मानव का परिणाम है। प्रकृति तो पत्ते और फल को भी वृक्ष से एक वैज्ञानिक विकास से अलग करती है जिसमें ना ही पत्ते या फल और न ही वृक्ष को पीड़ा होती है, बल्कि इस विज्ञान से दोनों का अलग होना दोनो को अच्छा लगता है। पीड़ा तो मानव द्वारा करायी गयी अप्राकृतिक क्रिया का परिणाम है।

"सूर्य सिद्धांत सत ऊर्जा रश्मी का यथार्थ जो सत ईंधन से स्वदर्पण ध्यान से न्यायिक तत्व में परिवर्तित कर देता है।"

शुरू होगा मानव इस प्रकृति का एक प्राणी न समझ कर इसे अपने भोग विलास की वस्तु समझने लगा। इसे अपने इच्छाओं को पूरा करने के लिए अप्राकृतिक क्रियायें कराने लगा। मानव द्वारा बनाये गये नियम कानून में अपना हित देखा गया प्रकृति को नजरन्दाज किया गया, जिससे प्रकृति खोखली होती गयी और परिणाम स्वरूप अप्राकृतिक घटनाये शुरू हो गयी। जिससे यही मानव कुदरत का कहर या ईश्वर का प्रकोप बताने लगा। स्वयं को यह इसका जिम्मेदार नही बताता। जबकि सच यह है प्रकृति दिखावें व नाटक से नही चलती, इसका निर्माण तो यर्थाथ से होता है।

मानव की इसी गलतियों के कारण प्रकृति में पीड़ा की शुरूवात होती है। मानव की प्रयोगशाला व दिखावे के जीवन राक्षसी गन्ध का निर्माण होता है जिससे अप्राकृतिक और अवैज्ञानिक घटनाये होती है मानव आज यही पीड़ा सह रहा है और प्रकृति को पीड़ित को कर रहा है और उस सच को नही जान पा रहा है जिससे प्रकृति गतिमान होती है। पीड़ा प्रकृति का परिणाम नहीं मानव का परिणाम है। प्रकृति तो पत्ते और फल को भी वृक्ष से एक वैज्ञानिक विकास से अलग करती है जिसमें ना ही पत्ते या फल और न ही वृक्ष को पीड़ा होती है, बल्कि इस विज्ञान से दोनों का अलग होना दोनो को अच्छा लगता है। पीड़ा तो मानव द्वारा करायी गयी अप्राकृतिक क्रिया का परिणाम है। मानव अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रकृति का सहयोगी ना ही विरोधी बनता जा रहा है। जीवों की हत्या कर रहा है। पेड़ पौधों को काट रहा है। खनन करके भौगोलिकता को बीगाड़ रहा है। एक बार भी यह नही सोच रहा है यह सब कैसें बनता है क्या इसमें से मैं भी कुछ बना सकता हूॅ। मानव को सूर्य विज्ञान की पहचान कर उसका सहयोगी बनने की जरूरत है नही तो प्रकृति भी अप्राकृतिक घटनायें जिसे वह अपनी नादानी नही कुदरत का कहर बताता है वह मानव प्रजाति को सम्भलने का मौका नही देगा और पृथ्वी को भी अपनी श्रेणी में कर देगा जिसे मानव अन्य ग्रहों की खोज कर यह कहता है कि यह भी कभी जीवन रहा होगा। वह ग्रह भी मानव नादानी का परिणाम है। मानव को प्रकृति रचना में अपनी पहचान कर प्रकृति के अनुसार चलना चाहिए तभी मानव अपनी पीड़ा को खत्म कर प्रकृति को बचाकर सूर्य विज्ञान का सहयोगी बन सूर्य का निर्माण कर सृजन को और अधिक वैज्ञानिक बना पायेगा।

प्रश्न हमारे
उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न : अवस्था क्या है

उत्तर : अवस्था विशेष विज्ञान विशेष बनाने का विज्ञान है जो सफर को सुहाना बनाने का विज्ञान है जिससे किसी अतिरिक्त बल लगाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती है

प्रश्न : एहसास क्या है

उत्तर : एहसास स्वगुण का परिणाम है पर उससे बनने वाला पदार्थ विज्ञान प्रकृति है जो हर किसी के लिए होती है।

प्रश्न : गुरु क्या है

उत्तर : गुरुत्वाकर्षण का गुणात्मक बल जिस गुण का होता है उस गुण का मिलान कर इस गुण फल की रासायनिक ऊर्जा के निर्माण करने की क्रिया का नाम गुरु है।

प्रश्न : परिवर्तन और निर्माण कैसे होता है

उत्तर : परिवर्तन और निर्माण तकनीकी से नहीं गन से होता है और गुण का निर्माण अपने स्वभाव की यात्रा से होता है।

प्रश्न : क्या प्रकृति विषय है

उत्तर : प्रकृति विषय नहीं बल्कि विषय को पूर्ण करने की रासायनिक मंडल है।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।

आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई),
कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ0 प्र0
ईमेल-info@parkritimail.com, editor.prakritimail@gmail.com
9807636072, 7376495194

शारीरिक विकृतियों को दूर करता है रोना

डॉ. बी. आर. नलवाया

मंदसौर

स्वस्थ जीवन के लिए हंसना बहुत जरूरी है, तो रोग निरशन के लिए रोना भी आवश्यक है। इस आधुनिक जीवन की भागम-भाग के दौर में भावनाएं एवं विचार ऐसे होते हैं, कि हमारी मानसिकता व्यवस्था होती है, यही दबी हुई भावनाएं धीरे-धीरे एक ग्रंथि का रूप धारण कर लेती हैं, ऐसी स्थिति में सुरक्षा का तरीका यह है, कि भावनाओं को दूसरे रूप में अभिव्यक्त हो, इसे रो कर आसूंओं द्वारा भावनाओं की अभिव्यक्ति की जा सकती हैं।

मनुष्य संवेदनशील है। वह परिवार,समाज और राष्ट्र में घटित होने वाली घटनाओं की भीतरी कसक से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है। यह प्रभाव हर्ष और विषाद के रूप में अभिव्यक्त होता है। हर्ष किसी एक की बपौती नहीं है, तो विषाद किसी एक का कर्ज भी नहीं है। जीवन हर्ष और विषाद का युगल है। हर्ष से खुशी के फव्वारे फूटते हैं ,तो विषाद से आंसुओं का झरना प्रस्फुटित होता है। हर्ष प्रिय लगता है, विषाद बुरा लगता है, यह हम ऐसा भी कह सकते हैं, कि अतिरिक्त भावनाओं से संबंधित आंसू होते हैं, जो बहुत दुख के कारण अथवा ठेस लगने या बहुत खुशी में बाहर आते हैं, ये आंसू भी सामान्य मात्रा से अधिक होते हैं।

अब देखे अंतरिक्ष यात्री सुधांशु शुक्ला को अंतरिक्ष में रवाना होते देख, उनके पिता शंभू शुक्ला और मां आशा शुक्ला भावुक हो गए और आंखों में आंसू बहने लगे माता-पिता दोनों ही भावुक होकर उस समय कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे, उनके आंसू हर्ष से भरे

हुए थे, उन्होंने कहा हम बहुत खुश हैं ,शुभांशु सफल होगा, हम गर्व से अभिभूत हैं। इस तरह हर्ष के आंसू बह रहे थे।

अमेरिका के प्रसिद्ध डॉक्टर फ्रैंक ने कहा "आंसू तनावों से मुक्ति का सर्वाधिक सफल सहायक है, भावावऐश को अधिकांश व्यक्ति दबा देते हैं, इसी वजह से कुंठा, अवसाद, दर्द, तनाव और दिमागी विकृतियां पैदा होती हैं, यहां देखें यदि किसी व्यक्ति की आंखों में दुख या विपत्ति के वक्त आंसू ना आए, तो डॉक्टर के अनुसार वह व्यक्ति अस्वस्थ हैं, यदि किसी महिला की आंखों में घोर शोक अथवा संकट की घड़ी में आंसू नहीं आए, तो ऐसी महिलाएं शुष्काशि रोग से ग्रस्त होती हैं।

महिलाएं और पुरुष के आंसू में भिन्नता होती है ,इसी तरह हर्ष और विषाद के आंसुओं में भिन्नता होती हैं। पुरुष भी कभी रो तो उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। महिलाओं में पुरुषों की अपेक्षा रोने की प्रवृत्ति अधिक होती है, महिलाओं को रोने का मानो प्रकृति से वरदान मिला हो। इसी कारण से महिलाएं अनेक व्याधियों से मुक्त रहती हैं। वहीं पुरुषों को व्याधियों को भोगना पड़ता है। पुरुष रो कर उनसे मुक्त हो सकते हैं। किंतु मनुष्य रोता कम है। सामान्यतः रोने को बुरा माना जाता है, वहीं रोना स्वास्थ्य की सुरक्षा करता है, ओर जीवन प्रत्याशा में वृद्धि करता है, वहीं महिलाएं रोने में माहिर होती है। रोना आए तो इसे छिपाना नहीं चाहिए, इससे मन हल्का होता है। भारी मन रखकर हम कब तक जीवन बिताएंगे, जब भी मन पर कोई बोझ हो और रोना आए तो रो लेना चाहिए आंसू बहाने से मन हल्का हो जाता है और बोझ उतर जाता है।

आंसू ना आने के कारण अनेक प्रकार की शारीरिक विकृतियों जैसे आंखों में चुंभन या जलन, दिखने में कठिनाई होना, जोड़ों में दर्द होना, मुंह फटना नाक का सूखा रहना, सिर दर्द रहना आदि हो सकते हैं। आंसू न केवल आंखों को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि उन्हें कीटाणु से सुरक्षा भी देते हैं। डॉक्टर मानटेग का कहना है कि जिन व्यक्तियों की विकास प्रक्रिया में आंखों से कमआंसू निकलते हैं, वह जीवन की सभी अवस्थाओं आमतौर से जल्दी ही रोगों से ग्रस्त हो जाते हैं।

एक जापानी शिक्षक योशीदा खुद को टियर्स टीचर कहते हैं और वह टियर्स वर्कशॉप चलाते हैं! योशीदा इस विचार के आधार पर टियर्स वर्कशॉप चलाते हैं, कि हफ्ते में एक बार रोने से तनाव दूर हो सकता है, और यह हंसने या रोने की तुलना में अधिक प्रभावी तनाव निवारक हो सकता है, आंसू आंखों को संक्रमण से बचते हैं, साथ ही उनमें नमी बनाए रखते हैं, यह तनाव को काम करते हैं, और मानसिकता को मजबूत बनाते हैं। जो लोग सहज रोते हैं, वह अधिक स्वस्थ रहते हैं ,और उनका जीवन के प्रति नजरिया भी सकारात्मक होता है। इसके साथ ही महिला पुरुषों में आंसू आने से फेफड़े खुल जाते हैं ,और चेहरा साफ हो जाता है। वहीं यदि आंसू को बहाने से रोकते हैं, तो "टाकिसन" साइंस की तरह काम करते हैं, और हमारे शरीर के प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर करते हैं। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र से ज्ञात होता है, कि यदि आप स्वस्थ रहना चाहते हैं तो रोइये क्योंकि आंसुओं के रूप में कुछ रसायन आंखों से बाहर आ जाते हैं।

अंतरिक्ष की गहराई में अनुसंधान करेगा भारत

प्रमोद भार्गव
शिवपुरी म.प्र.

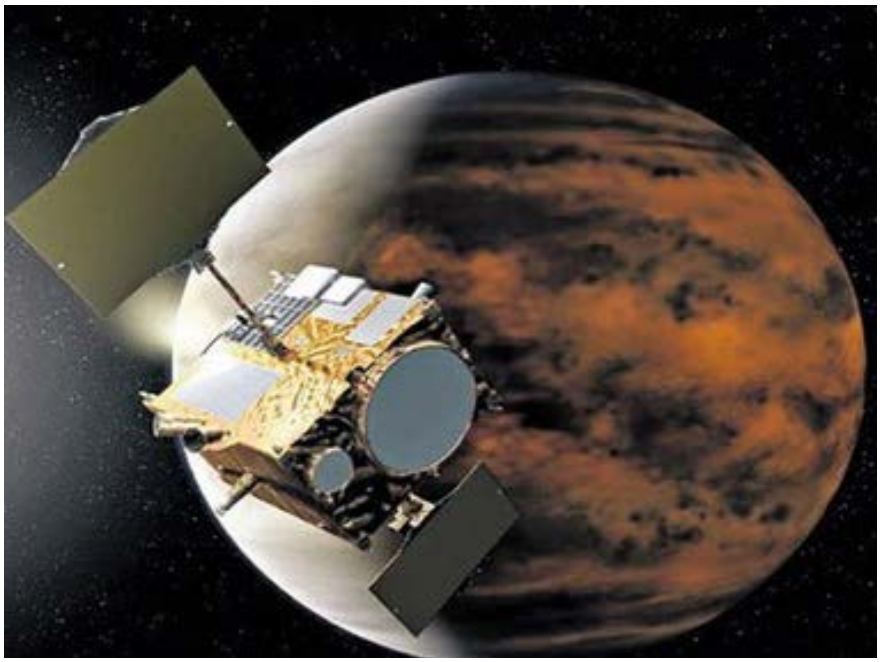

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अंतरिक्ष में गहराई से नए अनुसंधानों के लिए वैज्ञानिकों को प्रेरित किया है। राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के अवसर पर आभासी पटल पर बोलते हुए मोदी ने कहा कि इस वर्ष का विषय 'आर्यभट्ट से गगनयान तक' भारत के अतीत के आत्मविश्वास और भविष्य के संकल्प दोनों को दर्शाता है। इसी से प्रेरणा लेते हुए भारत जल्दी ही गगनयान मिशन शुरू करेगा और अपना अंतरिक्ष स्टेशन भी स्थापित करेगा। हम चंद्रमा और मंगल पर पहले ही पहुंच चुके हैं और अब अंतरिक्ष के नए क्षेत्रों में अनुसंधान करेंगे। याद रहे चंद्रमा के दक्षिणी धुरव पर सबसे पहले पानी की खोज भारत ने ही की थी। अब भारत अंतरिक्ष में नए खनिजों की खोज के लिए अपने अभियानों को आगे बढ़ाएगा। इस दृष्टि से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने 'इसरो स्पेस रोडमैप-2040' भी बना लिया है। यह सोच न केवल भारत की अंतरिक्ष महत्वाकांक्षाओं को रेखांकित करती है, बल्कि देश को आने वाले वर्शों में वैश्विक स्तर पर अग्रणी अंतरिक्ष षक्तियों की कतार में खड़ा करने का संकल्प भी दिखाती हैं।

भारत 2035 तक स्वयं का भारतीय अंतरिक्ष केंद्र-बीएएस स्थापित करेगा, जो देश की वैज्ञानिक और तकनीकि क्षमता को आसमानी ऊंचाईयों तक ले जाएगा। अंतरिक्ष स्टेशन के प्रतिदर्श (मॉडल) को भी प्रस्तुत कर दिया है। इसरो 2028 तक परियोजना का पहला मॉड्यूल प्रक्षेपित कर देगा और 2035 तक स्टेशन चालू हो जाने की उम्मीद है। इस मंच से सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण (माइक्रोग्रैविटी) अध्ययन और लंबी अवधि के मानव अंतरिक्ष अभियानों के लिए प्रौद्योगिकियों के परीक्षण करना शामिल है। भारत की अपनी स्वदेशी कक्षीय प्रयोगशाला स्थापित करने की यात्रा उसके अंतरिक्ष कार्यक्रम में एक बड़ी छलांग है। 2040 तक भारत चंद्रमा से मिट्टी और पत्थरों के नमूने लाने के लक्ष्य को लेकर भी आगे बढ़ रहा है। इस रोडमैप में चंद्रयान-4, शुक्रयान, डीपस्पेस मिशन और नेक्सट जेनरेशन लांचर (एनजीएल) जैसी महत्वाकांक्षी योजनाएं षामिल हैं। भविष्य की ये उपलब्धियां भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की दिशा में बड़ी छलांग साबित होंगी। यही उपलब्धियां भारत को अंतरिक्ष अणवेशण में वैश्विक नेतृत्वकर्ता के रूप में उसकी स्थिति को मजबूत करेंगी। चंद्रयान तीन के चांद के दक्षिणी धुरव पर सफल प्रक्षेपण के बाद लैंडर विक्रम और रोवर प्रज्ञान ने पानी और खनिजों की खोज के उद्देश्य से लगातार काम कर रहा है। ये यहां पानी के साथ आग की भी तलाश करेंगे। यदि आग और पानी मिल जाते हैं तो चांद पर मनुश्य के आबाद होने की उम्मीद बढ़ जाएगी।

दरअसल आज के समय में चंद्रमा और मंगल के साथ अन्य मिशन भविष्य की वैश्विक

रणनीति के अहम् मंच बन गए हैं। भविष्य की आर्थिकी इन्हीं मंचों से तय होगी। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के अव्यावहारिक बयानों और टैरिफ की बाध्यता को लेकर भारत-अमेरिका के संबंधों में खटास आ गई है। रूस से तेल की खरीद को लेकर भी ट्रंप और मोदी के बीच मनमुटाव बढ़ा है। ऐसे में भारत अमेरिका को दरकिनार कर रूस या चीन के साथ मिलकर चंद्रमा पर परमाणु ऊर्जा संयंत्र बनाएगा, ऐसी संभावना भी बढ़ रही है? क्योंकि अब चंद्रमा केवल वैज्ञानिक प्रतिस्पर्धा न रहकर भविष्य की रणनीति का हिस्सा बनता दिखाई दे रहा है। दरअसल भारत 2023 में अपने चंद्र-अभियान के अंतर्गत दक्षिणी ध्रुव पर रोवर उतारकर अपनी सक्षमता सिद्ध कर चुका है। अब होड़ इस बात को लेकर है कि चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर आवश्यक संरचनात्मक ढांचा कौन तैयार कर पाता है। क्योंकि यहां से पानी हो या खनिज उसके दोहन के लिए बड़ी मात्रा में ऊर्जा की जरूरत होगी। इस ऊर्जा उत्पादन की एकमात्र कुंजी परमाणु ऊर्जा है। भविष्य में चंद्रमा ही अन्य ग्रहों तक के सफर के लिए आधार केंद्र बनेगा। अमेरिका 2030 तक चंद्रमा पर 100 किलोवाट क्षमता वाला न्यूक्लियर रिएक्टर बनाने का लक्ष्य साधे हुए है, वहीं, चीन और रूस 2035 तक आधा मेगावाट रिएक्टर बनाने के प्रयास में लगे हैं। दरअसल रूस की परमाणु ऊर्जा एजेंसी रोसाटॉम ने दावा किया है कि भारत अंतरराष्ट्रीय चंद्र अनुसंधान स्टेशन (आईएलआरएस) परियोजना का हिस्सा बनने में रुचि ले रहा है, जिसमें चीन भी शामिल है। हालांकि भारत ने इसे अभी अधिकारिक रूप में घोषित नहीं किया है, लेकिन बदलते भू-राजनीतिक समीकरणों में इसे एकाएक नकारना भी मुश्किल है। अमेरिका के साथ तनाव और भारत चीन के रिश्तों में हो रहे सुधार के चलते नया विकल्प खुला है, लेकिन चुनौतीपूर्ण है। भारत को तय करना होगा कि वह अमेरिका के साथ मर्यादित द्विपक्षीय संबंध स्थापित रखे या रूस-चीन के साथ मिलकर परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में आगे बढ़े। दोनों रास्तों में अवसर और खतरे हैं। क्योंकि रूस ने तो भारत का साथ प्रत्येक विपरीत परिस्थिति में दिया है, लेकिन अमेरिका और चीन ऐसा नहीं कर पाए हैं। बावजूद अंतरिक्ष में हस्तक्षेप के लिए पहल तो करनी ही होगी। क्योंकि चंद्रमा की सतह पर जो देश ऊर्जा के लिए परमाणु संयंत्र बना लेंगे वही विश्व में धाक जमा पाएंगे।

बहरहाल अंतरिक्ष में भारतीय मानव मिशन के सफल होने के बाद ही चंद्रमा और मंगल पर मानव भेजने का रास्ता खुलेगा। इन पर बस्तियां बसाए जाने की संभावनाएं भी बढ़ जाएंगी। आने वाले वर्शों में अंतरिक्ष पर्यटन के भी बढ़ने की उम्मीद है। इसरो की यह सफलता अंतरिक्ष पर्यटन की पृष्ठभूमि का भी एक हिस्सा है। यह अभियान देश में अंतरिक्ष शोधकार्यों को बढ़ावा देगा। साथ ही भारत को अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में नई प्रोद्यौगिकी तैयार करने में मदद मिलेगी। वैज्ञानिकों का तो यहां तक दावा है कि दवा, कृशि, औद्योगिक सुरक्षा, प्रदूषण, कचरा प्रबंधन तथा पानी एवं खाद्य स्त्रोत प्रबंधन के क्षेत्र में भी तरक्की के नए मार्ग अंतरिक्ष में हस्तक्षेप से खुलेंगे।

चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सघन रूपों में बड़ी मात्रा में पानी उपलब्ध होने के तत्व मिले हैं। लेकिन ये जहां इंसान रहेगा वहां से बहुत दूर भी हो सकते हैं। इसलिए आरंभ में चांद के मौसम की जानकारी के साथ वहां के वायुमंडल में गैसों की मौजूदगी का भी पता लगाना होगा, जिससे उनके अनुकूल जीवन को संभव बनाया जा सके। हालांकि कई शोधों से यह ज्ञात हुआ है कि चंद्रमा पर गुफाओं की अनेक संरचनाएं हैं। कुछ गुफाओं में तापमान भी मनुष्य के अनुकूल है। इन गुफाओं के इर्द-गिर्द गड्ढे हैं और इन गड्ढों में पृथ्वी जैसा तापमान है। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के अनुसार वहां 17 डिग्री सेल्सियस तापमान पाया गया है। परंतु चंद्रमा की सतह पर तापमान बदलता रहता है। दिन के समय यह 260° डिग्री तक और रात में यह तापमान शून्य से 280° डिग्री सेल्सियस नीचे चला जाता है। इसलिए प्रज्ञान ऐसे स्थलों की खोज भी कर रहा है, जहां तापमान स्थिर रहता हो। चंद्रमा पर एक दिन या रात पृथ्वी के दो सप्ताह से थोड़े ज्यादा होते हैं। इस कारण भी मनुष्य का रहना आसान नहीं हो पा रहा है। हालांकि नवीनतम अनुसंधानों से पता चला है कि 200 से अधिक ऐसे गड्ढे हैं, जो लावा फूटने के कारण बने हैं। इनकी तलाश 2009 में ही कर ली गई थी। 2009 में ही भारत के चंद्रयान-1 ने चंद्रमा पर पानी के साक्ष्य लिए थे।

नौवें दशक से चंद्रमा को लेकर दुनिया के सक्षम देशों की दिलचस्पी इसलिए बढ़ी, क्योंकि चंद्रमा पर बर्फीले पानी और भविष्य के ईंधन के रूप में हीलियम-3 की बड़ी मात्रा में उपलब्ध होने की जानकारियां मिलने लगीं थीं। वैज्ञानिक दावा कर रहे हैं कि हीलियम से ऊर्जा उत्पादन की फ्यूजन तकनीक के व्यावहारिक होते ही ईंधन के स्त्रोत के रूप में चांद की उपयोगिता बढ़ जाएगी। यह स्थिति आने वाले दो दशकों के भीतर बन सकती है। गोया, भविष्य में उन्हीं देशों को यह ईंधन उपलब्ध हो पाएगा, जो अभी से चंद्रमा तक के यातायात को सस्ता और उपयोगी बनाने में जुटे हैं। मंगल हो या फिर चंद्रमा कम लागत के अंतरिक्ष यान भेजने में भारत ने विशेष दक्षता प्राप्त कर ली है। दूसरी तरफ जापान ने चंद्रमा पर 50 किमी लंबी एक ऐसी प्राकृतिक सुरंग खोज निकाली है, जिससे भयंकर लावा फूट रहा है। चंद्रमा की सतह पर रेडिएशन से युक्त यह लावा ही अग्नि रूपी वह तत्व है, जो चंद्रमा पर मनुष्य के टिके रहने की बुनियादी शर्तों में से एक है। इन लावा सुरंगों के इर्द-गिर्द ही ऐसा परिवेश बनाया जाना संभव है, जहां मनुष्य जीवन-रक्षा के कृत्रिम उपकरणों से मुक्त रहते हुए, प्राकृतिक रूप से जीवन-यापन कर सके।

बैटरी पुनर्चक्रण : एक आर्थिक अवसर

विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर, मलोट, पंजाब

आज दुनिया बैटरी पर चल रही है। सुबह के अलार्म से लेकर रात में टीवी का रिमोट बंद करने तक हमारी अंगुलियां दिन भर में दर्जनों बार बैटरी से चलने वाले उपकरणों को छूती हैं। हाथ में स्मार्टफोन, कलाई पर बंधी घड़ी, बच्चों के खिलौने, लैपटाप और अब हमारी सड़कों पर दौड़ती गाड़ियां भी बैटरी से ही चल रही हैं। यह तकनीकी प्रगति का उदाहरण है, जिसने हमारे जीवन को आसान और सुविधाजनक बना दिया है। मगर इस सुविधा का दूसरा पहलू भी है, उतना चमकील नहीं है। यह पहलू 'पहल है' इस्तेमाल की हुई बैटरियों के कचरे का, जो एक अदृश्य और खतरनाक संकट के रूप में हमारे सामने खड़ा हो रहा है। भारत जैसे-जैसे डिजिटल और इलेक्ट्रिक भविष्य की ओर बढ़ रहा है, यह समझना अनिवार्य हो गया है कि अगर हमने बैटरी कचरे का ठीक से प्रबंधन नहीं किया, तो हमारी प्रगति का मार्ग पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए एक विनाशकारी जाल बन सकता है।

भारत दुनिया सबसे बड़े उपभोक्ता बाजारों में से एक है। हर वर्ष करोड़ों की संख्या में इलेक्ट्रानिक उपकरण खरीदे जाते हैं और उनके साथ आती हैं करोड़ों बैटरियां। इनमें 'पेंसिल सेल' जैसी छोटी क्षार बैटरियों से लेकर मोबाइल फोन और लैपटाप में इस्तेमाल होने वाली लिथियम-आयन बैटरियां और गाड़ियों तथा इनवर्टर में लगने वाली भारी-भरकम लेड एसिड बैटरियां तक शामिल हैं। सरकार की 'फेम इंडिया' जैसी योजनाओं के माध्यम से इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने की नीति स्वागत योग्य है, लेकिन इसके परिणामस्वरूप आने वाले दशक में लिथियम-आयन बैटरियों का कचरा तेजी से हमारे शहरों में फैलेगा। सवाल है इन लाखों बैटरियों का जीव जीवनकाल समाप्त होने पर उनका क्या होगा? अगर हम इन्हें साधारण कचरे की तरह फेंकते रहे, हम अपने ही र में एक जहरीला 'टाइम बम' लगा रहे होंगे। है।

बैटरी कचरे को खतरनाक बनाने वाली चीज इसके अंदर मौजूद रसायन। बाहर से ठोस और सुरक्षित दिखने वाली हर बैटरी के भीतर भारी और विषैली धातुओं का एक मिश्रण होता है। उदाहरण लिए, हमारी गाड़ियों और इनवर्टर में इस्तेमाल होने वाली लेड एसिड बैटरियों में सीसा (लेड) और सल्फ्यूरिक एसिड होता है। सीसा शक्तिशाली न्यूरोटाक्सिन है, यानी यह सीधे हमारे तंत्रिका तंत्र पर हमला करता है। जब इन बैटरियों को अवैज्ञानिक तरीके से तोड़ा या फेंका जाता है, सीसा मिट्टी में और फिर भूमिगत जल मिल जाता है। यह धीरे-धीरे हमारी खाद्य श्रृंखला में प्रवेश करता है। फिर यह पानी, सब्जियों और अनाज के माध्यम से हमारे शरीर में पहुंचता है। बच्चों के लिए यह विशेष रूप से घातक है। सीसे के संपर्क में आने से बच्चों का मानसिक और शारीरिक विकास रुक सकता है। उनकी सीखने की क्षमता कम हो सकती है और व्यवहार संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

दूसरी ओर, आधुनिक उपकरणों और

इलेक्ट्रिक वाहनों की जान कही जाने वाली लिथियम-आयन बैटरियां भी दूध की धुली नहीं हैं। इन्हें अक्सर 'हरित विकल्प' माना जाता है, लेकिन इनके कचरे का प्रबंधन भी बड़ी चुनौती है। इनमें लिथियम के अलावा कोबाल्ट, निकल और मैगनीज जैसी धातुएं होती हैं। अगर इन्हें कचरे के ढेर में फेंक दिया जाए, तो ये भारी धातुएं रिस कर भूजल को प्रदूषित कर सकती हैं। इसी तरह, पुरानी घड़ियों और रिमोट में इस्तेमाल होने वाली बटन सेल में पारा (मर्करी) और खिलौनों की बैटरियों में कैडमियम जैसी अत्यंत विषैली धातुएं पाई जाती हैं, जो पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा करती हैं।

भारत में बैटरी कचरे के प्रबंधन की जमीनी हकीकत चिंताजनक है, क्योंकि इसका एक बहुत बड़ा हिस्सा असंगठित क्षेत्र यानी हमारे कबाड़

का कारोबार वालों के माध्यम से संचालित होता है। यह क्षेत्र एक दोधारी तलवार की तरह है। एक तरफ, कचरा बीनने वाले लोग हमारे घरों और दुकानों से इस्तेमाल की हुई बैटरियों को इकट्ठा करके पुनर्चक्रण श्रृंखला की पहली और सबसे अहम कड़ी का काम करते हैं। उनके बिना यह कचरा शायद हमारे घरों के कोनों में या कूड़ेदानों में ही पड़ा रहता। दूसरी तरफ, उनके काम करने का तरीका उनके लिए असुरक्षित और पर्यावरण के लिए विनाशकारी है। वे बिना किसी सुरक्षा उपकरण, जैसे दस्ताने या मास्क के इन जहरीली बैटरियों को हथौड़ों से तोड़ते हैं। लेड एसिय बैटरियों से तेजाब को खुले में नालियों में बहा दिया जाता एसिड छोटी-छोटी भट्टियों में पिघलाया जाता है, जिससे जहरीला धुआं सीधे हवा में घुल जाता है। इस प्रक्रिया में काम करने वाले श्रमिक खुद सीसा विषाक्तता, त्वचा रोगों और सांस की गंभीर बीमारियों के शिकार होते हैं।। कुछ मूल्यवान धातुओं की ही वसूली हो पाती है और फेंक दिए जाते हैं,

इस गंभीर स्थिति को पहचानते हुए केंद्र सरकार ने एक बड़ा कदम उठाया है अगस्त 2022 में, सरकार ने 'बैटरी अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2022' अधिसूचित किया। ये नियम पुराने नियमों की जगह लेते हैं। ये एक MA बहुत ही महत्त्वपूर्ण सिद्धांत पर आधारित हैं, जिसे 'विस्तारित निर्माता उत्तरदायित्व' कहा जाता है। सरल शब्दों में, अब बैटरी बनाने वाली या उसे उपर आयात करने वाली कंपनी की जिम्मेदारी सिर्फ बैटरी बेचने तक सीमित नहीं होगी, बल्कि उसे यह भी सुनिश्चित करना होगा कि जब वह बैटरी खराब हो जाए, तो उसे उपभोक्ताओं से वापस इकट्ठा किया जाए और पर्यावरण के अनुकूल तरीके से पुनर्चक्रण किया जाए।

इन नए नियमों के तहत सभी प्रकार की बैटरियों- पोर्टेबल, आटोमोटिव औद्योगिक और इलेक्ट्रिक वाहन बैटरियों को शामिल किया गया है। उत्पादकों के लिए हर वर्ष एक निश्चित मात्रा में पुरानी बैटरियों को इकट्ठा और उन्हें पंजीकृत पुनर्चक्रण करने वालों को सौंपने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया की निगरानी के लिए एक केंद्रीकृत पोर्टल बनाया गया है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि कितनी बैटरियां बाजार में बेची गईं और उनमें से कितनी वापस पुनर्चक्रण के लिए आई। नियमों में यह भी स्पष्ट किया गया है कि बैटरी कचरे को कूड़े के ढेर में दबाना या जल या जलाना प्रतिबंधित है। यह नीति सैद्धांतिक रूप से बहुत मजबूत है और अगर इसे सही भावना से लागू किया जाए, तो यह भारत में बैटरी कचरे के प्रबंधन का चेहरा बदल सकती है।

हमें बैटरी पुनर्चक्रण को केवल कचरा प्रबंधन के रूप में नहीं, बल्कि एक आर्थिक अवसर रूप में भी देखना चाहिए। आज भारत लिथियम और कोबाल्ट जैसी महत्त्वपूर्ण धातुओं के लिए पूरी तरह से आयात पर निर्भर है। पुरानी बैटरियों से इन धातुओं को निकालने की गुंजाइश बन सकी तो हम अपना अपनी आयात निर्भरता कम कर सकते हैं। यह एक 'चक्रीय अर्थव्यवस्था' बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम होगा, जहां कचरे को फेंकने के बजाय उसे वापस एक मूल्यवान संसाधन में बदल दिया जाता है। इससे न केवल हमारा पर्यावरण बचेगा, बल्कि नए रोजगार भी पैदा होंगे और हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा भी मजबूत होगी। एक स्वच्छ और टिकाऊ भविष्य के लिए, हमें अपनी बैटरियों का जिम्मेदारी से समापन करना सीखना ही होगा।

मौसम विज्ञान में रोजगार के अपार अवसर

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
आदिलनगर,विकासनगर

भारतीय ज्ञान परम्परा में प्राचीनकाल से खेती, अर्थव्यवस्था, मौसम और दैनिक जीवन से जुड़ी अनेक जानकारियाँ बादलों के रंग, हवा की गति, पशु - पक्षियों की गतिविधियों, अनुमान, गहन अनुभव, ज्योतिषीय गणना आदि संकेतों पर आधारित होती थीं। पहले ग्रामीणजन छोटी - बड़ी समस्याओं एवं प्राकृतिक आपदाओं का निदान सूझबूझ से बड़ी सरलता से कर लेते थे, क्योंकि पर्यावरण में आज के जैसी अचानक उथल-पुथल नहीं थी और प्रकृति में चारों ओर घने वृक्ष और हरियाली थी। मौसम में परिवर्तन प्रायः ऋतुओं के अनुसार ही होता था और इसके लिए अधिक चिंतित होने की आवश्यकता नहीं थी। लोग प्राकृतिक आपदा को दैवी प्रकोप मानकर सहन कर लेते थे। मौसम के पूर्वानुमान के विज्ञान आधारित विकसित संसाधन भी नहीं थे।

आज मौसम विज्ञान की सार्थकता बढ़ी है। यह वायुमण्डलीय विज्ञान (एटमास्फेरिक साइंस) की एक शाखा है, जिसमें मौसम,जलवायु और उनके विभिन्न घटकों का अध्ययन किया जाता है। मौसम विज्ञानी मुख्य रूप से वायुमण्डलीय स्थितियों के बारे में जानकारी एकत्र करके उसका विश्लेषण करने का कार्य करते हैं।

आगामी 24 घंटे या पूरे सप्ताह मौसम अच्छा रहेगा या खराब, वर्षा होगी या भीषण गर्मी, ग्रीष्म लहर, शीत लहर कब तक रहेगी, इस तरह के मौसम संबंधी अनुमान जानने के लिए हर कोई उत्सुक रहता है। पहले मौसम की भविष्यवाणियाँ या पूर्वानुमान केवल किसानों के लिए ही लाभदायक माने जाते थे, लेकिन अब सामान्यजन भी मौसम संबंधी पूर्वानुमान लेकर लाभ उठाना चाहते हैं। वे उसी के आधार पर अपने कार्यक्रम या यात्राओं की योजना बनाते हैं। यहाँ तक कि शादी के आयोजन जैसे निर्णय भी अब लोग मौसम का पूर्वानुमान को ध्यान में रखकर ले रहे हैं। आज यह उन्नत सैटेलाइट, एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) और मशीन लर्निंग जैसी तकनीकों से संभव हो रहा है। यह तकनीक का ही कमाल है कि अब कई वर्षों से भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आइएमडी) के पूर्वानुमान अधिकांशतः सटीक होने लगे हैं, इसलिए लोगों का भरोसा इस पर बढ़ता जा रहा है। उन्नत तकनीकों की मदद से मौसम विभाग अपने पूर्वानुमानों से बाढ़, तूफान आदि प्राकृतिक आपदाओं का पूर्वानुमान हो जाने से पहले जैसा नुकसान नहीं होता।

देश में मौसम विज्ञान की सटीक सार्थकता एवं उपयोगिता सिद्ध करने के लिए जगह - जगह नये उन्नत रडार और अवलोकन प्रणाली लगा रहा है। इनसे प्राप्त डाटा के विश्लेषण के लिए डाटा साइंस और एआई जैसी तकनीकों की मदद ले रहा है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के पूर्वानुमानों की पिछले एक दशक में 50 प्रतिशत सटीकता बढ़ी है।

मौसम की सूचनाओं का उपयोग

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में भौगोलिक स्थितियाँ एक सी नहीं हैं। यहाँ के कई क्षेत्र समुद्र से लगे हैं। बड़ी जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन के कारण इधर कई वर्षों में मौसम में अचानक बदलाव आए हैं। दिन - रात के तापमान में असामान्य बढ़ोत्तरी, बाढ़. तूफान, भूकंप जैसी आपदाओं के खतरे बढ़े हैं। पूर्व सूचना मिल जाने से अब तूफान, लू, शीतलहर, भारी वर्षा आदि से नुकसान कम होता है। मौसम की सही जानकारी होने से किसानों के लिए फसल के बारे में निर्णय लेना आसान हो जाता है। उन्हें पहले से पता हो जाता है कि खेत में बीज कब बोना है, खाद-पानी कब-कब देना है आदि। यात्राओं की योजना बनाने और तटवर्ती क्षेत्रों में मछुआरों को समुद्र में जाने में सहायता मिलती है। आज कोई भी क्षेत्र हो, हर जगह मौसम की जानकारी आवश्यक है।

आज जैसे-जैसे हम पाँच खरब की अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहे हैं, उससे आने वाले समय में बहुत से ऐसे सेक्टर भी आएंगे, जो मौसम से प्रत्यक्षतः प्रभावित होंगे। पर्यावरण परिवर्तन के बढ़ते खतरों से भी मौसम की अनदेखी नहीं की जा सकती। इससे आने वाले दिनों में योजना,विकास या सामाजिक स्तर पर ऐसे बहुत सारे अवसर सृजित होंगे, जहाँ युवाओं के लिए भविष्य में रोजगार पाने की अच्छी संभावनाएँ होंगी।

मौसम विज्ञान में उपलब्ध हैं रोजगार के अनेक अवसर

मौसम विज्ञान एक महत्वपूर्ण और रोचक क्षेत्र है,जिसमें युवाओं के लिए रोजगार की अपार संभावनाएँ हैं। यदि आप मौसम,वातावरण और जलवायु में रुचि रखते हैं, तो यह क्षेत्र आपके लिए उपयुक्त हो सकता है।

ब्यूरो आफ लेबर स्टैटिस्टिक्स के आंकड़ों के अनुसार, अगले वर्ष में मौसम विज्ञानी (मोटिअरोलाजिस्ट) की मांग में 10 प्रतिशत की वृद्धि की संभावना है। मौसम विज्ञान की जानकारी की मांग आज केवल सरकारी विभागों और मौसम विभागों में ही नहीं है, निजी क्षेत्र में भी अब इस पृष्ठभूमि के लोगों को प्राथमिकता मिल रही है। कई निजी एजेन्सियों में भी पर्याप्त मांग है।

मौसम विज्ञान से पढ़ाई करने के बाद योग्य अभ्यर्थी के पास अवसर प्राप्त करने के तीन प्रकार के विकल्प उपलब्ध हैं- मौसम विज्ञानी बनना, शोध और अनुसंधान क्षेत्र में जाना तथा अध्यापन कार्य करना।

मौसम विज्ञान के जानकारों की मांग निम्नलिखित क्षेत्रों में संभावित है -

1. भारतीय मौसम विभाग

मौसम पूर्वानुमान कर्ता (वेदर फोरकास्टर)
मौसम विज्ञानी (मेट्रोलाजिस्ट)
अनुसंधान अधिकारी (रिसर्च आफीसर)
तकनीकी सहायक (टेक्निकल असिस्टेंट)
मौसम प्रसारण केन्द्र तथा क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केन्द्र में सेवा

2. अनुसंधान और विश्वविद्यालय

वैज्ञानिक इसरो, डीआरडीओ, ईआईटी, एनआईटी, आईआईएससी आदि...

शोध सहायक (रिसर्च असिस्टेंट)

प्रोफेसर. व्याख्याता- मौसम विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, जलवायु परिवर्तन जैसे विषयों में।

3. निजी कंपनियाँ और मीडिया संस्थान

- मौसम विशेषज्ञ- न्यूज चैनलों और वेबसाइटों के लिए, रेडियो एवं टेलीविजन स्टेशन
-क्लाइमेट कंसल्टेंट - कृषि, निर्माण, ऊर्जा, हवाई, जल यातायात आदि संस्थान
-डाटा एनालिस्ट - मौसम डाटा का विश्लेषण करने हेतु

4 एविएशन और नेवीगेशन सेक्टर

एयर ट्रैफिक कंट्रोल और पायलटों के लिए - मौसम रिपोर्टिंग

भारतीय वायु सेना, नौसेना और थल सेना में मौसम से जुड़े विभागों में नियुक्तियाँ

5 जलवायु परिवर्तन और आपदा प्रबंधन संस्थान

क्लाइमेट चेंज एनालिस्ट -

आपदा पूर्व चेतावनी से जुड़ी भूमिकाएँ

6. अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ

-वर्ल्ड मेट्रोलाजिकल आर्गनाइजेशन (डब्ल्यूएमसी)

-यूनाइटेड नेशन्स इन्वायरमेंटल प्रोग्राम (यूएनईपी)

-एनजीओ और पर्यावरण संस्थान

योग्यता

मौसम विज्ञान क्षेत्र में कुशल मौसम विज्ञानियों के लिए सदैव अवसर रहते हैं। इसके लिए अभ्यर्थी को किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय या संस्थान से इंजीनियरिंग, साइंस स्ट्रीम से स्नातक या परास्नातक होना चाहिए।

मीटिअरोलाजी या एटमास्फेरिक साइंस से संबंधित कोर्स करने के लिए किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थान से (फिजिक्स. केमिस्ट्री, मैथ्स या बायोलाजी) के साथ 12 वीं उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। इस तरह के अंडरग्रेजुएट कोर्स में वैश्विक वायुमण्डल, मौसम मापन एवं विश्लेषण, वायुमण्डलीय भौतिकी, मौसम पूर्वानुमान आदि की जानकारी दी जाती है। छात्र आगे चलकर इसी में मास्टर्स एवं पीएचडी भी कर सकते हैं।

आजकल एप मोबाइल, यूट्यूब चैनल और पोर्टल के माध्यम से भी लोगों को मौसम की अद्यतन जानकारी उपलब्ध करायी जाती है, अतः इन क्षेत्रों में भी अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है।

प्रमुख संस्थान,जहाँ से मौसम विज्ञान संबंधी कोर्स किए जा सकते हैं -

-भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु

-आईआईटी, खड्गपुर

-इंडियन इंस्टीट्यूट आफ ट्रापिकल मीटिअरोलाजी, पुणे

-डिपार्टमेंट आफ एटमास्फेरिक एंड स्पेस साइंसेज, पुणे

अनियंत्रित ही आनन्दित

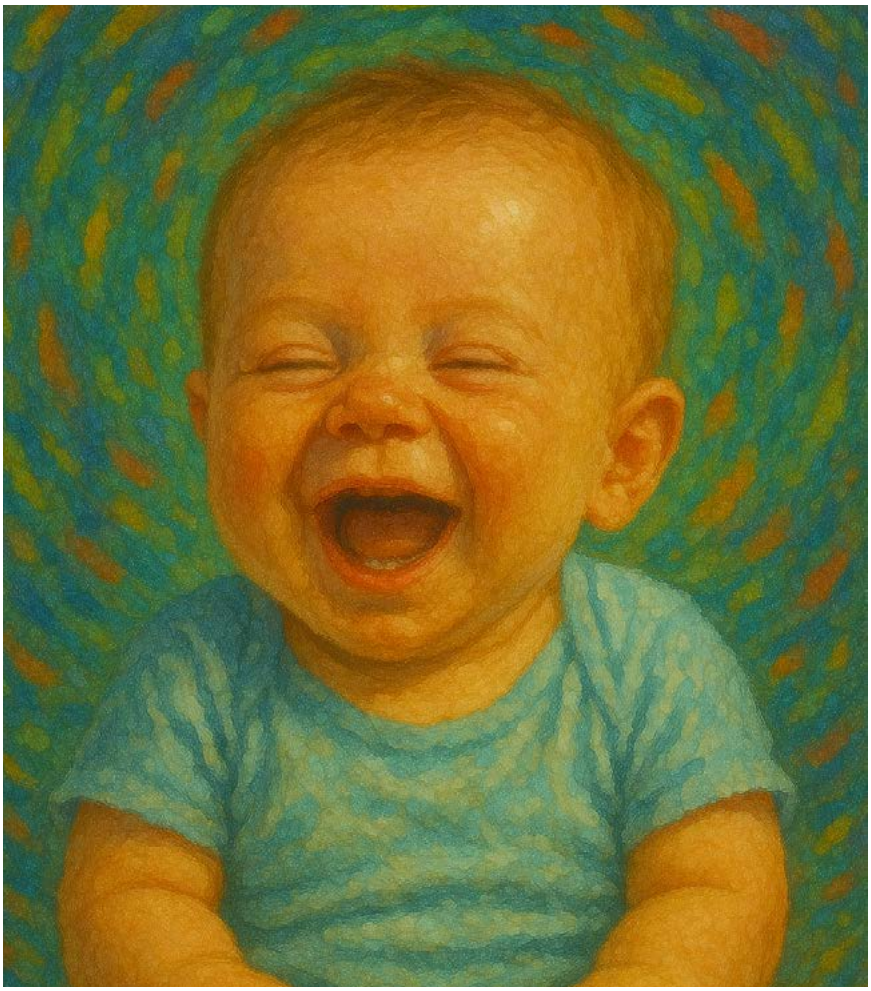

प्रकृति की स्वतंत्रता के सुंदर से स्वभाव को यदि साफ दिल से देखे तो हम इसे हर कहीं महसूस कर सकते है। हम देखते है कि यदि आपने कोई जानवर घर में पाला है और उसे आप अपने नियंत्रण में रखते है। उसे हमेशा बंधकर रखते है। उससे बात नहीं करते सिर्फ उसे अपने फायदे की चीज समझकर इस्तेमाल करते है तो उसका स्वभाव भी उदासीन, निष्क्रिय सा हो जायेगा। वहीं यदि हम उसे स्वंतत्र रखें भरपूर प्यार दें।

उमेश मानव

गुरुवर श्री अशोक मानवजी बताते है कि 'अनियंत्रित अवस्था ही आनन्द की अवस्था होती है।' गुरुवर एक जिज्ञासा के उत्तर में यह बता रहे थे। किसी ने पूछा कि लोग एक दूसरे को नियंत्रित करना चाहते है। एक व्यक्ति अपनी ताकत और धन के बल पर दूसरो पर अपना प्रभाव जमाना चाहता है। बाकियों को अपने अनुसार चलाना चाहता है। यहाँ तक अभिभावक अपने बच्चों को भी अपनी इच्छा के अनुसार चलाने का प्रयास करते है। गुरुवर इसपर कहते है कि 'यही शोषण है।' वे कहते है कि किसी को कंट्रोल करना, अपनी इच्छा के अनुसार दूसरों को नियंत्रित करके चलाना 'दुःख की अवस्था है।' हम यह समाज मे, परिवार में देख भी सकते है कि जहाँ कही भी किसी पर जोर जबरदस्ती की जा रही है वहाँ असंतोष का ही वातावरण रहता है। लोग ऐसे परिवेश में मजबूरी में ही काम करते है। नहीं तो ऐसी जगह कोई चाह कर नही ठहरता। जो नियंत्रित करना का प्रयास कर रहा होता है वह यह सोचता है कि सभी उसके अनुसार चल रहे हैं। जबकि हर कोई बस एक सही मौके की तलाश में ही रहता है। ज्यों ही बेहतर अवसर प्राप्त होता, लोग उस तरफ निकल लेते है। जब तक दबाव का महौल रहता है एक खिन्नता सी सभी में दिखती है। चाहे वह कार्यक्षेत्र हो, दोस्ती हो या अपना घर ही क्यों न हो। घर के बच्चों को भी नियंत्रित करके रखा जाये तो वे भी भरपूर जीवन नहीं जी पाते है और उनके अंदर कोई न कोई मनोविकार देखने को मिल जाता है। ऐसे बच्चों में स्वभाविक विकास नही हो पाता है। वे किसी न किसी मनोविकार का शिकार हो जाते है और उनकी चाह दब कर रह जाती है जो आगे चल कर अचानक एक विस्फोट को जन्म देती है। यही समाज में भी होता है। पूरे समूह कि आवाज जब बंद करने का प्रयास किया जाता है। तब धीरे-धीरे एक दबाव बनता है और एक सीमा पर आने के बाद वह फट पड़ता है। यह क्रान्ति कहलाता है। सच कहा जाये तो क्रान्ति सही है। किसी

दबाव की स्थिति को खत्म करने के लिए, बदलाव लाने के लिए। यह प्राकृतिक रूप से भी सही है क्योंकि प्रकृति का भी स्वरूप स्वतंत्रता का होता। वह किसी पर नियंत्रण करना नही चाहती। प्रकृति सभी के लिए है। वह सभी को पूर्ण अवसर देती है। भेदभाव, छल-कपट प्रकृति में नहीं है। यहाँ भी हम पाते है कि अदना सा व्यक्ति आज प्रकृति को अपने नियंत्रण में लेना चाहता है। मानी हुई बात है और हम यह आज चारों तरफ देख सकते है। आज हर तरफ पानी की मार से जन-जीवन बेहाल है। हर उस जगह जहां भी प्रकृति पर नियत्रण करने का प्रयास किया गया है। वह हर एक जगह सबसे ज्यादा तबाही हुई है। आज मानव विकास के नाम पर प्राकृतिक रास्ते पर निर्माण करता जा रहा है। नदियों के रास्ते पर निर्माण, पहाड़ो को काट कर निर्माण, ऐसी दबाव बनाने वाली गतिविधियों से बड़े पैमाने पर बर्बादी होती है। जैसे ही प्रकृति अपने स्वतंत्र स्वभाव में आती है, मानव द्वारा निर्मित समस्त नियंत्रण के प्रयास ताश के पत्तों की तरह गिर जाते है। हम आज प्रकृति कि विकरालता को समाचारों में, टीवी पर रोज देख रहे है। जो चर्चा की जा रही है उसे भी हम समझ सकते है कि इतनी तबाही आखिर क्यों हो रही है।

प्रकृति की स्वतंत्रता के सुंदर से स्वभाव को यदि साफ दिल से देखे तो हम इसे हर कहीं महसूस कर सकते है। हम देखते है कि यदि आपने कोई जानवर घर में पाला है और उसे आप अपने नियंत्रण में रखते है। उसे हमेशा बंधकर रखते है। उससे बात नहीं करते सिर्फ उसे अपने फायदे की चीज समझकर इस्तेमाल करते है तो उसका स्वभाव भी उदासीन, निष्क्रिय सा हो जायेगा। वहीं यदि हम उसे स्वंतत्र रखें भरपूर प्यार दें। तो वह आनन्द में रहेगा और उसकी चंचलता देखकर हमें भी आनन्द का एहसास होगा। यह भी देखा गया है कि जब कोई किसी पालतू जानवर को बहुत अनुशासन में रखता

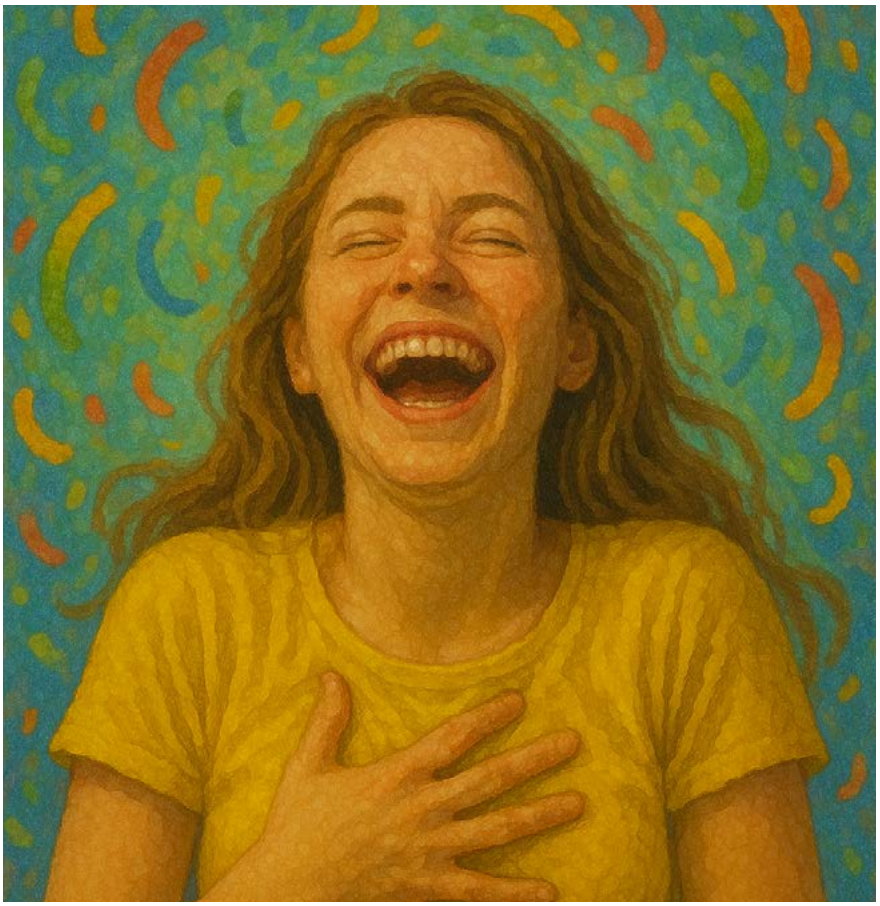

है। तो वह उदास बना रहता है। और जब कोई अंजान व्यक्ति उस जानवर को प्यार देता है तो वह पलटकर बेहिसाब प्यार देता है। वह अपने मालिक से ज्यादा उस अंजान का हो जाता है। ऐसे कई बार चोर घरों में चोरी करने में भी सफल हो जाते है। जहाँ वे घर के पालतू जानवर को थोड़ा प्यार देकर अपना काम बना लेते है।

अब प्रश्न कि आखिर क्यों ही कोई दूसरों पर शोषण करता है, किसी को क्यों ही नियंत्रित करने का प्रयास करता है। इसपर गुरुवर कहते है कि यह मानव की अज्ञानता की वजह से हुए है। जहाँ मानव ने किसी भी स्वाभाविक अवस्था के विपरीत जाकर काम किया। अपनी अज्ञानता से अहम में अपने को दूसरों से बेहतर मानक दूसरो का मार्गदर्शन करने लगा। जहॉ स्वयं प्रकृति गतिशील है, अभी भी वह पूर्णतः की ओर अग्रसर है, वहीं मानव अपने को पूर्ण समझकर दूसरो पर शासन करने का काम कर रहा। बाकियों पर बल प्रयोग से उनके स्वभाव के विपरीत उन्हें बदलने में लगा हुआ है। मानव ने अपने डर की प्रवृत्ति के वश प्रकृति की धनाढ्यता को अनदेखा किया। प्रकृति के पास अनमोल खजाना है। सभी के लिए प्रकृति के पास भरपूर है। प्रकृति कभी किसी को भूखा नही रखती। मानव द्वारा किये गये अप्राकृतिक प्रयासों की वजह से आज मानव दिक्कतों का सामना कर रहा है। मानव के डर ने उसे अपने पास ज्यादा से ज्यादा रोककर रखने के लिए प्रेरित किया। यही होल्ड करके रखने कि प्रवृत्ति उसमें जन्म ली। जिससे वह अपने ही भाईयों का शोषक बन गया। इस शोषण से अपना लोभ पूरा करने के लिए उसने नियंत्रण करना शुरु किया। जो कि एक समय खुद का विनाश ही करेगा। अपनी जरुरत का अकलन कर उतना ही रखें इसी में सभी की सम्पन्नता छुपी है।

बाढ़ः प्राकृतिक आपदा या मानवजनित त्रासदी?

सुनील कुमार महला
युवा साहित्यकार, उत्तराखंड

प्राकृतिक आपदाओं के सामने मनुष्य आज असहाय प्रतीत होता है। निश्चित ही इससे देश की अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। हजारों लोगों की आजीविका पर भी व्यापक असर पड़ता है। जन-जीवन अस्त-व्यस्त तो होता ही है। ऐसे में सरकार और संबंधित राज्य प्रशासन की यह जिम्मेदारी बनती है कि यात्रियों की सुरक्षा, मार्गों की मरम्मत, मौसम की पूर्व चेतावनी और आपदा-निवारण व्यवस्था को मजबूत करें।बारिश का यह कहर हमें कहीं न कहीं एक गहरा संदेश देता है

इस साल देशभर में बारिश बहुत ज्यादा कहर मचा रही है। जगह-जगह तबाही का आलम है।बरसात, जो कभी वरदान कहलाती थी, आज कई राज्यों में कहर बनकर बरस रही है।सच तो यह है कि इस बार मॉनसून ने अपनी रौद्र लीला से पूरे उत्तर भारत को हिलाकर रख दिया है। देश में बहुत सी नदियां उफान पर हैं,तो बांध खतरे के निशान को छू रहे हैं, और जगह-जगह भूस्खलन व बादल फटने की घटनाएं प्रकृति के रौद्र रूप की भयावह तस्वीर पेश कर रही हैं। मीडिया के हवाले से आई खबरों से पता चलता है कि उत्तर भारत में लगातार भारी बरसात के बाद जम्मू के कटरा स्थित वैष्णोदेवी धाम के मार्ग पर भूस्खलन से अब तक 38 लोगों की मौत हो गई है। बहुत ही दुखद है कि दर्शन की लालसा में निकले श्रद्धालु अचानक आई इस त्रासदी का शिकार हो गए। जानकारी के अनुसार मंदिर दर्शन के लिए जा रहे कई श्रद्धालु अर्धकुंवारी के पास मार्ग पर भूस्खलन व भारी बारिश की चपेट में आ गए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार मंदिर मार्ग पर कई जगह पत्थर गिरने से हादसे हुए।सेना के जवान और बचाव दल लगातार राहत कार्यों में जुटे हैं।इधर, भूस्खलन के बाद

वैष्णोदेवी की यात्रा भी रोक दी गई। इस घटना पर हमारे देश के प्रधानमंत्री सहित देशभर ने मृतकों के प्रति गहरा शोक व संवेदना व्यक्त की है। यह पहली बार है कि वैष्णो देवी यात्रा में इतनी बड़ी त्रासदी सामने आई है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि जम्मू-कश्मीर में पिछले 24 घंटों में 210 एमएम तथा जम्मू में 380 बारिश दर्ज की गई है। यहां हुई बारिश ने पिछले कई सालों का रेकॉर्ड तोड़ दिया है। मीडिया में आया है कि जम्मू-पठानकोट तथा जम्मू-श्रीनगर हाइवे को भारी क्षति पहुंची है। तवी, चिनाब नदी सहित अन्य नदियों के उफान व बाढ़ से स्थानीय जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। जानकारी के अनुसार सेना ने 10 हजार से ज्यादा लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाया है।इधर, रेलवे ने जम्मू मार्ग की 58 ट्रेनों का संचालन निरस्त किया है, वहीं 18 ट्रेनों का रूट बदला गया है। उधर, हिमाचल प्रदेश की नदियां व्यास-सतलुज व रावी में भारी बाढ़ चल रही है। चंडीगढ़-मनाली हाइवे को भारी क्षति होने से कुल्लु व मनाली का सम्पर्क कट गया है। लेह एयरपोर्ट से सभी उड़ानें निरस्त कर दी गई हैं। इतना ही नहीं, पठानकोट पंजाब के माधोपुर हेडवर्क्स के निकट बुधवार 27 अगस्त को सेना के हेलिकॉप्टर ने एक इमारत से 22 सीआरपीएफ जवानों और नागरिकों को निकालकर एक बड़ा हादसा टाल दिया। पंजाब में बाढ़ जैसे हालात हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार पोंग व भाखड़ा-नांगल बांधों से पानी निकासी के बाद भयानक बाढ़ से पठानकोट, गुरदासपुर, होशियारपुर, कपूरथला, फिरोजपुर सहित कई क्षेत्रों में हालात बिगड़ गए। गुरदासपुर में नवोदय विद्यालय के ग्राउंड फ्लोर पर 5 फीट से ज्यादा पानी भरने से 400 विद्यार्थी व शिक्षक फंस गए। रावी नदी में बाढ़ के कारण करतारपुर कॉरिडोर पर 7 फीट तक पानी भर गया। इसके कारण पाकिस्तान में करतारपुरा गुरुद्वारा साहिब भी डूब गया बताते हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार सभी को निकालते ही इमारत भी बह गई।इसी क्रम में हिमाचल प्रदेश की नदियां भी रौद्र रूप धारण कर चुकी हैं। चम्बा में मणि महेश यात्रा बाधित हुई और करीब 2,000 यात्री जगह-जगह फंसे। पंजाब में बांधों(डैम्स)का पानी खतरे के निशान तक पहुंच गया है और गेट खोलने की नौबत आ चुकी है। छत्तीसगढ़ में हालात बुरे हैं। जानकारी के अनुसार छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में बीते दो दिन बारिश ने तबाही मचा दी।इसे 94 साल बाद बड़ी आपदा बताया जा रहा है। खबरों के अनुसार बीते 24 घंटे में 217 एमएम बारिश दर्ज की गई है तथा सेना ने हेलिकॉप्टर से बाढ़ में फंसे 100 लोगों को रेस्क्यू किया है। एक जानकारी के अनुसार यहां कार के साथ बहे परिवार के चार लोगों की मौत हो गई।इधर, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर में भी हालात बेकाबू होते जा रहे हैं। सड़कें, पुल और मार्ग बाधित हो रहे हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि धार्मिक यात्राओं पर यह प्राकृतिक प्रकोप गहरा असर डाल रहा है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि आइएमडी के अनुसार जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड, हिमाचल, पूर्वी राजस्थान, हरियाणा, गुजरात-कोंकण व मध्य महाराष्ट्र में अगले 7 दिन भारी बरसात की संभावना जताई गई है।पश्चिमी व दक्षिणी राजस्थान में 29 से 31 अगस्त तक, उत्तरप्रदेश में 1 से 2 सितम्बर तक तथा छत्तीसगढ़, बिहार व झारखंड में 28 अगस्त से 1 सितम्बर तक भारी बारिश की संभावना जताई गई है। आंकड़े बताते हैं कि उत्तर भारत में 12 साल बाद सबसे ज्यादा बारिश हुई है। विदित हो कि साल 2013 में केदारनाथ में आई विनाशकारी बाढ़ के बाद उत्तर भारत में इस साल सामान्य से 21% ज्यादा बारिश हुई हैं। आइएमडी के अनुसार 2021 के बाद इस बार उत्तर भारत के राज्यों में बेहद भारी बरसात हुई हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज अंधाधुंध विकास के बीच हम प्रकृति से लगातार खिलवाड़ कर रहे हैं और हमें इसका खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। प्राकृतिक आपदाओं के सामने मनुष्य आज असहाय प्रतीत होता है। निश्चित ही इससे देश की अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। हजारों लोगों की आजीविका पर भी व्यापक असर पड़ता है। जन-जीवन अस्त-व्यस्त तो होता ही है। ऐसे में सरकार और संबंधित राज्य प्रशासन की यह जिम्मेदारी बनती है कि यात्रियों की सुरक्षा, मार्गों की मरम्मत, मौसम की पूर्व चेतावनी और आपदा-निवारण व्यवस्था को मजबूत करें।बारिश का यह कहर हमें कहीं न कहीं एक गहरा संदेश देता है – प्रकृति को हल्के में लेना हमारी सबसे बड़ी भूल है।बाढ़ अत्यधिक वर्षा, नदियों के उफान, बांध टूटने या बादल फटने के कारण आती है। इसमें नदियाँ और नाले खतरे के निशान से ऊपर बहने लगते हैं, जिससे गांव-शहर जलमग्न हो जाते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि मनुष्य अपनी सुविधाओं और लालच के लिए लगातार प्रकृति से खिलवाड़ कर रहा है। जंगलों की कटाई, नदियों का दोहन, प्रदूषण, अंधाधुंध शहरीकरण और औद्योगिकीकरण ने पर्यावरण का संतुलन बिगाड़ दिया है। इसका परिणाम हमें भूकंप, बाढ़, सूखा, भूस्खलन, ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन जैसी आपदाओं के रूप में भुगतना पड़ रहा है। अंत में यही कहूंगा कि प्रकृति और विकास का संतुलन बनाए रखना मानव जीवन के लिए आवश्यक है। केवल आर्थिक प्रगति ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि पर्यावरण और पारिस्थितिकी का संरक्षण भी उतना ही ज़रूरी है। सतत विकास वही है, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग सोच-समझकर किया जाए। पेड़-पौधों, जल, भूमि और वायु को सुरक्षित रखकर ही आने वाली पीढ़ियों को बेहतर जीवन दिया जा सकता है। हमें यह चाहिए कि हम प्रकृति का सम्मान करें और संसाधनों को नष्ट न करें, अन्यथा प्रकृति हमें कहीं का भी नहीं छोड़ेगी।

मजदूर मंड़ी

हेमराज सिंह 'हेम'

कोटा राजस्थान

जब गाँव में कोई काम-धन्धा न रहा, तो किशन काम की तलाश में शहर चला आया। सोचा, शहर में कोई न कोई काम तो मिल ही जाएगा। उसने सुना था, शहर सबका पेट पालता है। बस, काम करने वाला होना चाहिए। काम करने वालो के लिए शहर में काम की कोई कमी नहीं है। उसने शहर के बाहरी इलाके में एक छोटा-सा कमरा तीन सौ रुपये महीने किराये पर ले लिया। गाँव से लाये गृहस्थी के सामान को भरोसी ने पुराने अखबार बिछाकर कमरे में व्यवस्थित कर दिया। अगले दिन भरोसी तड़के ही उठ गयी। उसने बगल में सो रही नन्हीं बिटिया दीपा को प्यार से देखा और चूम लिया, जो अपने दाँये अँगूठे को मुँह में दबाये निद्रा देवी की गोद में दुबकी थी। भरोसी ने पैताने पड़ा चद्दर उठाया और बेटी को पैर से सिर तक अच्छी तरह ओढ़ाकर जल्दी-जल्दी घर की साफ सफाई करने लगी। वह जानती थी, आज किशन काम की तलाश में शहर जाएँगे, और उसे पति के लिए दोपहर का भोजन बनाकर देना है। किशन ने रात को ही पत्नी से सुबह काम पर जाने की बात कह दी थी।

भरोसी झटपट रसोई में गयी।

उसने आटे का पीपा खोलकर देखा, उसमें चार-पाँच रोटियाँ बन सके, इतना भर आटा था। भरोसी ने जल्दी से आटा गूँथा और रोटियाँ सेक दी। घर में सब्जी के नाम पर कुछ नहीं था। वह करे भी तो क्या करे?

दस-पाँच रुपये होते तो पास वाले नामा जी की दुकान से कड़कें ले आती। कड़कें से रोटी चट, चट भा जाती है। उसे याद है, जब घर में साग-भाजी न होती थी, तो माँ दो रुपये के कड़कें लाकर थोड़े-थोड़े कड़कें सबकी रोटी पर रख देती थी और फिर सभी बच्चे रोटी के हर कौर के साथ कड़कें का टुकड़ा चबाकर चटकारे लगाते थे। शादी के बाद ससुराल में भी कई बार कड़कों ने रोटी को सहारा दिया था। पर, आज तो उसके पास जहर खाने तक के पैसे नहीं थे। वह इधर-उधर झाँकने लगी।

आखिर में उसे लहसुन की चटनी याद आई। चटनी गरीबों के लिए किसी वरदान से कम नहीं होती। जब साग-भाजी के नाम पर कुछ न हो तो चटनी ही रोटी को सहारा देकर पेट में उतारती है। उसने जल्दी से लहसुन की तीन-चार कलियाँ छीलकर नमक व लाल मिर्च के साथ सिलबट्टे पर रगड़ दी। पाँच रोटियों में से एक रोटी उठाकर गाय के लिए रख दी, फिर दो रोटियों पर चटनी रखी और शेष दो रोटियाँ ऊपर रखकर अखबार के साथ कपड़े में लपेट दी।

भरोसी रोटी का पैकेट किशन को देते हुए बोली, " लो जब भूख लगे तब खा लेना।"

किशन ने पैकिट सूँघकर पूछा, "क्या है इसमें?

"लहसुन की चटनी के साथ रोटियाँ हैं। साग नहीं थी, तो चटनी बाट दी, जब भूख लगे तब पानी की घूट के साथ खा लेना।"

भरोसी ने एक ही श्वास में सब कह दिया।

किशन के लिए यह कोई नई बात नहीं थी। उसने जीवन में कई बार इस तरह उदर की भूख को शांत किया था। कभी-कभी तो चटनी के बिना भी, नमक लगी हरी मिर्च से रोटी खाकर भूख मिटाई थी। वह बचपन के दिनों में लौट गया। जिस गरीबी ने उसके परिवार को पीढ़ियों पहले जकड़ा था, वह आज तक साथ थी। पति को विचार-सागर में डूबा देखकर भरोसी ने ठेलते हुए कहा, "कहाँ खो गये हो, चिंता न करो, किसी दिन तो हमारा दुःख भी दूर होगा, और जब तुम्हें काम मिल जाएगा तब सब ठीक हो जाएगा। अच्छी-अच्छी सब्जियाँ बनाकर खिलाऊगी।"

किशन पत्नी के मुखातिब होकर बोला, "भरोसी! भूख मीठी होती है, न कि भोजन, भूख में नमक लगी हरी मिर्च भी स्वादिष्ट साग को लजा देती है।"

पति की बात सुनकर भरोसी के चेहरे पर हँसी झलक पड़ी, उसने पति की ओर प्यार से देखा और आँखें मूँदकर हामी भर दी।

किशन ने मुस्कराते हुए खाने का पैकिट उठाया और तेज कदमों से शहर की ओर चल पड़ा। वह कल शाम को ही मजूदर मंड़ी देख आया था। उसने गाँव में लोगों से धानमंड़ी, सब्जीमंड़ी, पशुमंड़ी, फलमंड़ी का नाम तो सुना था, और इनके बारे में वह थोड़ा-बहुत जानता भी था, पर जब उसने पहली बार मजदूर मंड़ी के बारे में सुना था तो वह चौक गया था। लेकिन आज उसे पूरा विश्वास हो गया। फ्लाईओवर के नीचे ढाबे के पास मजदूरों की मंड़ी लगती है, जहाँ शहर भर से आए मजदूरों को ठेकेदार अपने काम की जरूरत के हिसाब से बोली लगाकर काम पर ले जाते हैं। किशन विचार-सागर में गोते लगाता हुआ जा रहा था। काम मिलने की आशा और मन की व्यग्रता ने उसके कदमों में चंचलता भर दी थी। कहते है आशा का विस्तार आकाश से भी विशाल होता है, वह कल्पना का सहारा लेकर सुखद भविष्य की ओर दौड़ने लगती है। किशन भी आशा का दामन थामे जल्दी-जल्दी चलने लगा। उसका मानना था, मंड़ी जल्दी पहुँचने पर काम मिलने की संभावना ज्यादा होती है। लोग जल्दी ही मंड़ी आकर मजदूर ले जाते हैं। देर से पहुँचने वालों को काम मिलने की संभावना कम ही होती है।

वह सड़क का एक छोर पकड़े चला जा रहा था। शहर की सम्पन्नता चारों ओर अपने वर्चस्व की ध्वजा फहरा रही थी। जिसकी विशालता को बयां करती ऊँची-ऊँची इमारते कतारों में खड़ी थी। कोई दस मंजिला, कोई सात तो कोई पाँच मंजिला। मॉल, होटेल, रेस्त्रां दूर से ही चमक रहे थे। कई इमारत अभी आधी-अधूरी थी, किसी में छत डालने की तैयारी चल रही थी, तो किसी में पिलर खड़े किए जा रहे थे। कहीं रंग रोगन हो रहा था, तो कहीं बल्लियाँ लगाई जा रही थी। बाज़ार में दुकाने खुलने लगी थी। वह सोचने लगा.. कोई उसे दुकान पर ही काम दे दे। वह हर काम को अच्छे से करना जानता है। उसने देखा सामने एक बड़ी-सी परचून की दुकान थी। वह सोचने लगा जाकर लाला जी से कह दूँ,

"लाला जी! कोई काम है क्या?" वह हर काम अच्छे से कर सकता है, सामान तौलना, बाँधना सब जानता है। वह सोचता हुआ आगे निकल गया। उसकी हिम्मत न हुई कि लाला जी से पूछ सके।

आगे गली के नुक्कड़ पर उबलते तेल की गंध ने उसका ध्यान खींचा। सामने हलवाई की दुकान थी। कुछ पल को उसके पैर ठिठक गये, मुँह में पानी भर आया। वह जानबूझकर खोलते तेल की कढ़ाई के पास से गुजरा, जिसमें लाल-लाल कचोरियाँ तैर रही थी। वह सोचने लगा काश यह हलवाई ही काम पर रख ले। वह हर तरह का काम कर लेगा। कचोरी, समोसा बनाने से लेकर बर्तन धोने तक सब काम।

बस, उसे एक बार काम मिल जाए। मन में आया जाकर पूछ लूँ, " हलवाई जी कोई काम मिलेगा?" पर यहाँ भी उसकी हिम्मत न हुई। सोचा कहीं हलवाई ने डाट दिया तो? उसने दुकान के चारों ओर देखा, कहीं कोई परचा चिपका हो जिस पर लिखा हो, काम करने वाले लड़के की जरूरत है, पर उसे निराशा ही हाथ लगी। मन मारकर वह आगे बढ़ गया।

मंड़ी...., मजदूर मंड़ी....,

मंड़ी में तो उसे कोई न कोई काम दे ही देगा। मन की सोच के साथ उसके कदम तेज हो चले। थोड़ी देर बाद उसके सामने मजदूर मंडी का दृश्य था।

सुबह के धुंधलके में मजदूर मंडी जीवंत हो उठी थी। मजदूर अपने दिन की शुरुआत करने के लिए इकट्ठे हो रहे थे, अपने काम की तलाश में। वे अपने हाथों में अपने औजार पकड़े हुए थे, किसी के पास गेंती, फावड़े थे तो कोई छेंनी, हथोड़ी थैले में लेकर बैठा था। कोई कुल्हाड़ी के साथ आया था। जो जिस काम में निपुण था उसके पास वैसा ही औजार था।

कुछ मजदूर मंडी के बीच खड़े बरगद की सघन छाया में बैठे हुए थे। वे अपने दिन की शुरुआत करने से पहले एक-दूसरे से बातें कर रहे थे। अपने परिवार और अपने काम के बारे में चर्चा कर रहे थे। कुछ अपने साथी मजदूरों के साथ हँसी-मजाक कर रहे थे। वे अपने काम के बारे में बात कर रहे थे और अपने साथियों को अपने अनुभव सुना रहे थे।

फ्लाईओवर के नीचे धीरे-धीरे मजदूरों की भीड़ बढ़ने लगी। छोटे-बड़े कई समूह यहाँ-वहाँ खड़े इंतजार कर रहे थे। किशन भीड़ से हटकर एक ओर जा खड़ा हुआ। इस तरह काम मांगने का यह उसका पहला अनुभव था।

गाँव में खेती-बाड़ी के दिनों में बिना कहे ही मजदूरी मिल जाती थी। वह एक ही घर में कई दिनों तक काम करता था। पर यहाँ....! वह खड़े-खड़े देखने लगा। गाड़ियाँ आती तो मजदूर एक साथ उन पर झपट पड़ते।

" कितने मजदूर चाहिए, बाबू जी?"

"क्या काम है, साहब?"

" हमें ले चलो, मालिक!"

"कुली!"

"हाँ, हाँ कुली भी है, बताओ तो सही कितने चाहिए।"

इसी तरह के शब्द चारों ओर सुनाई पड़ रहे थे।

ठेकेदार मजदूरी तय करते, मजदूरी तय होने पर वे साथ लाये टेक्टर ट्रोली, ट्रक, पिकप, जीप में बिठाकर साथ ही ले जाते या कार्य स्थल का पता पर्ची पर लिखकर पकड़ा जाते, जहाँ मजदूर स्वयं ही पहुँच जाते।

किशन को तो कुछ समझ में नहीं आ रहा था। वह एक ओर चुपचाप खड़ा था। शायद इसी विचार के साथ की कोई आकर पूछेगा।

" काम करेगा?"

और वह बिना किसी देरी के हामी भर देगा।

" हाँ, हाँ क्या काम है, बताओ न!"

वह पैसे की बात भी नहीं करेगा, जो मिल जाए, उसे मंजूर है। उसे पता था, घर पर भरोसी के लिए रोटी तक नहीं है। जो आटा था उसकी रोटियाँ बनाकर पत्नी ने उसके लिए बाँध दी थी।

धीरे-धीरे उसके आस-पास की भीड़ छटने लगी थी। जिन्हें काम मिल गया था, वे काम पर चले गये थे। थोड़ी देर बाद किशन ने चारो ओर घूमकर देखा, पूरी मंड़ी खाली हो गई थी, बस उसके जैसे दो चार लोग बचे थे।

समय बितता जा रहा था, सूरज ऊपर की ओर बढ़ रहा था। किशन उदास हो गया।

क्या आज उसे काम नहीं मिलेगा, क्या आज भूखा ही सोना पड़ेगा?

एक साथ कई प्रश्न उसके दिमाग में कौंधने लगे। तभी अचानक एक पतली-सी आवाज़ ने उसका ध्यान तोड़ा, "काम पर चलोगे?"

वह एक दम बोल पड़ा।

"हाँ, हाँ क्या काम है ?

हाँ, मुझे काम चाहिए, मैं जरुर चलूगा!"

उसने देखा सामने एक युवती खड़ी थी। वह हाथ जोड़कर बोला, "क्या काम करना है मैम साहब? मैं सब तरह का काम करना जानता हूँ, आप बताइयेन!"

युवती ने उसकी बैचेनी को भाँपते हुए धीरे से कहा, "कुछ नहीं बस ये दो गमले मेरे घर तक पहुँचाने हैं।"

"हाँ, हाँ मैं पहुँचा दूगाँ, मैम साहब! बताइये कहाँ पहुचानें है?"

वह गमले उठाने लगा।

युवती ने उसे रोकते हुए कहा," पहले मजदूरी तो बताओ, क्या लोगे?"

किशन ने धीरे से कहा, "जो भी आप दोगी, मैं तैयार हूँ।" उसे पता था आज मजदूरी तय करने का दिन नहीं है, जो भी मिल जाए उसे सब मंजूर होगा। घर पर शाम का भोजन बनाने का सामान लेकर जो जाना है। उसने दोनों गमले उठाकर कंधे पर रखे और युवती के पीछे-पीछे चलने लगा। गमलें युवती के घर पर उतार कर उसने गमछे से हाथ पैर झाड़ लिये। युवती ने पर्स से पचास का नोट निकालकर उसे देते हुए पूछा, "कम तो नहीं है?"

किशन ने इतना भर कहा, बहुत है, मैम साहब!

वह पचास का नोट हाथ में पकड़े फिर से मजदूर मंड़ी की ओर ऐसे ही किसी और काम की तलाश में चल पड़ा।

जल संरक्षण की उपादेयता

नमिता वैश्य
गोण्डा

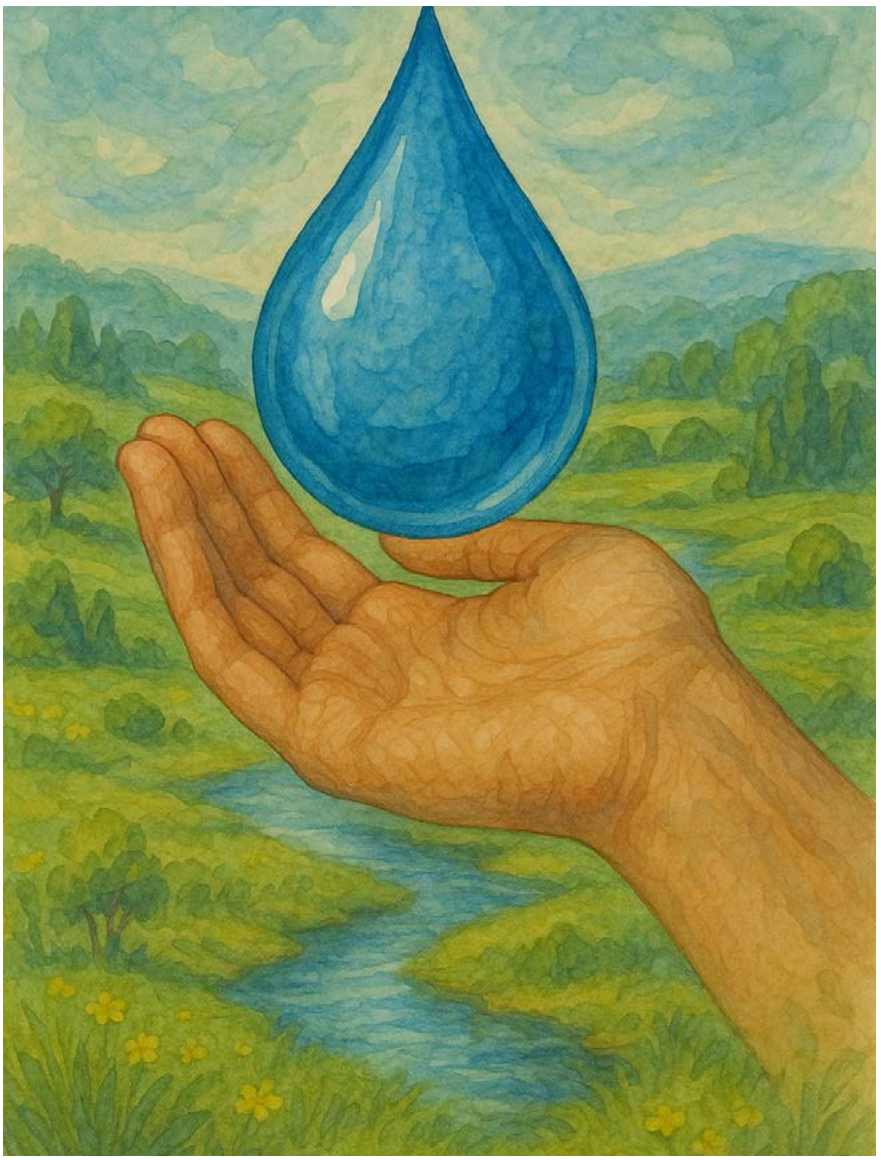

पानी के कुशलतापूर्वक उपयोग में यदि केवल 10 प्रतिशत की भी वृद्धि हो सके तो 14 लाख वर्ग मीटर अतिरिक्त पानी सिंचाई के लिए प्राप्त हो सकता है। भूमि के नीचे और भूमि के ऊपर के साधनों से प्राप्त पानी के संयुक्त उपयोग की बात तो बहुत की जाती है परन्तु इसके लिए अभी तक प्रयत्न बहुत कम हुए हैं। परिणामस्वरूप भूमि के ऊपर और नीचे प्राप्त होने वाले पानी का पूरा-पूरा और सही उपयोग नहीं हो पाता है।

जयशंकर प्रसाद की कालजयी कृति 'कामायनी' का प्रारंभ प्रलयकाल से ही होता है -

"हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर,
बैठे शिला की शीतल छाँह,
एक पुरुष भीगे नयनों से,
देख रहा था प्रलय प्रवाह।
नीचे जल था ऊपर हिम था,
एक तरल था एक सघन,
एक तत्व की ही प्रधानता,
कहो उसे जड़ या चेतन।।"

अतः जल के आसपास ही मानव संस्कृति का उद्भव एवं विकास होता है, ऐसी वैज्ञानिक मान्यता भी है। नोबेल पुरस्कार विजेता जीव वैज्ञानिक अल्बर्ट वॉन जेंट ग्योर्गी का भी कहना है कि जीवन पानी में पैदा होता है और उसी में विकसित होता है, अतः वह जीवन का माध्यम है। उसके महत्व का प्रतिपादन करने के लिए ही सभी तीर्थस्थल नदियों के तट पर ही सुनिश्चित किये गये। वेद, उपनिषदों में इन्द्र और वरुण जैसे जल देवताओं की सृष्टि की गयी। उनका व जल देवियों की पूजा तथा पवित्र स्नान का विधान हड़प्पा व मोहनजोदड़ो कांव से होता रहा है।

भारतीय संस्कृति एवं समाज में जन्म से लेकर मृत्यु तक जितने भी संस्कार हैं उनकी पूर्णता के लिए पवित्र नदियों के जल की आवश्यकता होती है। शास्त्र और

लोक में जल संकल्प, साक्ष्य, सरलता और गतिशीलता का पर्याय माना जाता है। जल स्थूल रूप में शरीर को पोषित करता है और सूक्ष्म रूप में आत्मा को, अतएव, यह रस भी है।

जब रहीम लिखते हैं -

'रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गये न उबरे मोती, मानुस, चून।।'

तो वे पानी के बहुआयामी तात्पर्य को ही रेखांकित करते हैं।

जल प्राणिमात्र के लिए अनिवार्य तत्व है। अतः जल-चिन्तन पर्यावरण का पहला चरण है। वायु के पश्चात जल से ही प्राणियों का सीधा संबंध होता है। जल की व्यापकता सृष्टि में अत्यधिक है। इसके तीन भागों में जल है और एक भाग में पृथ्वी। पृथ्वी के नीचे जल है और ऊपर वृष्टि करने वाला जलद, इतना ही नहीं शरीर के भीतर भी जल है, जलाभाव होते ही मानव मृत हो जाता है। भोजन, जो जीवन की तीसरी अनिवार्य आवश्यकता है, के बिना तो प्राणी एक माह तक जीवित रह सकता है परन्तु जल के बिना वह कुछ दिनों तक ही जीवित रहेगा। जल के बिना तो भोजन भी नहीं मिल सकता क्योंकि कृषि व्यवस्था का आधारभूत तत्व ही है।

दुनिया भर का 97 प्रतिशत से अधिक पानी महासागरों और समुद्रों में है, 2.5 प्रतिशत बर्फ के रूप में है और केवल 0.5 प्रतिशत हमें उपयोग के लिए प्राप्य है। इस 0.5 प्रतिशत का वितरण भी पूरी दुनिया के देशों में समान रूप से नहीं है। इसका अधिकांश अमेरिका और कनाडा की सीमावर्ती झीलों में गिरता है। इस समय दुनिया भर में प्राप्त पानी का सबसे अधिक भाग कनाडा में है। पानी के इस प्रकार विषम वितरण के कारण ही पानी की समस्या उत्पन्न हो गयी है और इसी कारण समय-समय पर कुछ देशों के बीच संघर्ष भी होते रहते हैं। बढ़ती जा रही जनसंख्या और औद्योगीकरण के साथ ही नगरीकरण ने भी इस समस्या को और विषम

बना दिया है। आने वाले समय में यह समस्या और भी विषम होगी।

ऐसा कहा जा सकता है कि पानी की इस समस्या ने भारत में जो विकराल रूप धारण किया है वैसा अभी किसी अन्य देश में नहीं। एक अध्ययन के अनुसार एशिया में प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष ताजे पानी की उपलब्धता केवल 3000 वर्ग मीटर है जो वस्तुतः किसी भी महाद्वीप में सबसे कम है। भारत में यह केवल 2500 वर्ग मीटर है। पूर्वानुमान किया गया है कि आगामी वर्षों में यह घटकर 1000 वर्ग मीटर या इससे कम रह जायेगी। इस स्थिति का कारण निरंतर एवं त्वरित गति से बढ़ती जा रही जनसंख्या तो है ही, उपलब्ध पानी का समुचित प्रबंध न कर पाना भी एक महत्वपूर्ण कारण है। देश में उपलब्ध पानी का 83 प्रतिशत कृषि कार्य में, 2.7 प्रतिशत उद्योग में, 1.8 प्रतिशत ऊर्जा की उत्पत्ति में और केवल 4.5 प्रतिशत घरेलू उपयोग में आता है। घरेलू उपयोग में आने वाले पानी का 80 प्रतिशत भाग जमीन के नीचे प्राप्त साधनों से आता है।

अतः पानी के कुशलतापूर्वक उपयोग में यदि केवल 10 प्रतिशत की भी वृद्धि हो सके तो 14 लाख वर्ग मीटर अतिरिक्त पानी सिंचाई के लिए प्राप्त हो सकता है। भूमि के नीचे और भूमि के ऊपर के साधनों से प्राप्त पानी के संयुक्त उपयोग की बात तो बहुत की जाती है परन्तु इसके लिए अभी तक प्रयत्न बहुत कम हुए हैं। परिणामस्वरूप भूमि के ऊपर और नीचे प्राप्त होने वाले पानी का पूरा-पूरा और सही उपयोग नहीं हो पाता है। इसी कारण पानी का अनुपयोग और दुरुपयोग भी बहुत हो रहा है। कृषि क्षेत्र को निःशुल्क या बहुत ही कम मूल्य पर बिजली की सप्लाई से भी लोग बिजली के साथ ही

पानी का भी अधिक उपयोग करने लगे हैं। चूंकि कृषि कार्य के अतिरिक्त अन्य कार्यों में प्रयोग होने वाले पानी की मांग की पूर्ति कृषि क्षेत्र को मिलने वाले पानी में कमी करने से दूर हो सकेगी, अतः यह भी आवश्यक है कि कृषि कार्य में पानी के उचित एवं सही उपयोग के सम्बन्ध में लोगों को शिक्षित किया जाए।

कृषि की अपेक्षा उद्योग क्षेत्र में पानी की मांग बहुत कम है। अतः वहां पानी के संरक्षण की काफी संभावनाएं हैं। उद्योग में पानी के उपयोग के सम्बन्ध में अंग्रेजी भाषा के तीन 'आर'(R) अर्थात् 'रेड्यूस'(Reduce), 'रिसाइकिल'(Recycle), और 'रियूज'(Reuse) पर अब ध्यान दिया जाना चाहिए। सबसे पहले तो पानी का उपयोग कम करने पर ध्यान दिया जाए। दूसरी बात उपयोग किये गये पानी को रिसाइकिल कर उसे अन्य क्षेत्रों में लगाया जाए और अन्त में उसी पानी का फिर से उपयोग किया जाए। कुछ उद्योगों में ऐसा किया भी जाने लगा है जिससे पता चलता है कि बहुत कम खर्च कर पानी के उपयोग में बहुत कमी की जा सकती है।

देश में आगामी वर्षों में होने वाली पानी की आवश्यकता की अपर्याप्त पूर्ति के साथ ही एक और समस्या पानी की गुणवत्ता भी है। नदियों के साथ झीलों, तालाबों, टैंकों आदि में बाहर से आने वाले पानी विशेषकर उद्योगों द्वारा निस्तारित एवं नगर पालिकाओं द्वारा बहाया गया सीवर का प्रदूषित जल आदि का मिलना आज सभी के लिए चिन्ता का विषय है। देश की नदियों के पानी की गुणवत्ता बहुत ही शोचनीय है। इस क्षेत्र में सुधार के लिए अब तक करोड़ों रुपए व्यय किए जा चुके हैं पर स्थिति ज्यों की त्यों है। इसका मुख्य कारण नदियों के तीनों ओर बस्ती, सीवेज निस्तारण की अकुशल व्यवस्था, उद्योगों द्वारा निस्तारित गंदगी और इन सबसे भी अधिक लोगों की सांस्कृतिक एवं धार्मिक मान्यताएं भी हैं।

पानी की समस्या के मूल में मुख्य कारण लोगों की यह धारणा है कि वह 'मुफ्त का माल' है अर्थात् बिना कुछ खर्च किए, बिना किसी परिश्रम के आसानी से मिल जाता है। जिन लोगों को अभी आसानी से पानी मिल जाता है या मिल रहा है, वे सोचते हैं कि पानी की कोई कमी नहीं है, जबकि पानी उन्हें कैसे मिलता है, वह कहाँ से आता है, उन तक पानी पहुंचाने में क्या-क्या करना होता है, आदि बातों की ओर न तो कभी उनका ध्यान गया है और न वे ध्यान देने की कोशिश करते हैं। अधिकांश लोग यही सोचते हैं कि पानी बहुतायत से मिलता है, मिलना चाहिए और मनुष्य या जानवर सभी को पानी प्राप्त करने का प्राकृतिक अधिकार है। हमारी सांस्कृतिक, धार्मिक मान्यताएं-धारणाएं भी इसी आधार पर बनी हैं कि पानी को व्यावसायिक दृष्टि से देखना ही ग़लत है, जैसा कि किसी ने कहा है 'पानी की भी कीमत है भले ही वह दी जाये या नहीं। इसके साथ ही यह भी विडम्बना है कि इसका मूल्य सम्पन्न लोगों की अपेक्षा प्रायः गरीबों को ही अधिक देना होता है।

पानी के उपयोग के तरीके एवं उपयोग कार्य को ध्यान में रखकर पानी का वितरण किया जाना चाहिए। एक अनुमान के अनुसार उद्योगों एवं कृषि क्षेत्र दोनों को एक ही प्रकार का पानी दिया जाए तो इससे समाज को 14 गुना अधिक आर्थिक लाभ होगा। इसके साथ ही यह भी अनुमान किया गया है कि अभी कुछ लोगों को अपनी आय का एक चौथाई तक पानी प्राप्त करने में व्यय करना होता है।

इस सम्बन्ध में पानी की तुलना तेल से की जा सकती है। दुनिया भर में तेल केवल कुछ ही क्षेत्रों में पाया जाता है पर दुनिया के सभी देशों में सुलभ है, क्योंकि उसका बाजार है। तेल की अपेक्षा पानी बहुत जगह पाया जाता है और आसानी से सुलभ भी है। फिर भी इसका बाजार नहीं है। यदि इसका भी एक सुव्यवस्थित एवं सुविकसित बाजार बनाया जा सके तो इससे सभी को लाभ होगा।

देश में प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता पिछले कुछ वर्षों में लगभग 70 प्रतिशत कम हो चुकी है। देश की वार्षिक जल आवश्यकता 3000 अरब घन मीटर है, जबकि प्रति वर्ष 4000 अरब घन मीटर पानी वर्षा के रूप में धरती को मिल पाता है। दुःखद यह है कि अधिकतर लोग इन अनमोल बूंदों के तीन-चौथाई हिस्से का भी सदुपयोग नहीं कर पाते, इस वर्षा का केवल आठ प्रतिशत ही सहेज पाते हैं, जिसके चलते यह प्रति वर्ष बरबाद हो जाता है। इस पानी को सहेजने का उपक्रम हमें बढ़ाना चाहिए। जितना अधिक पानी हम अपनों के लिए सहेजेंगे, हमारा जल बजट उतना ही अच्छा होगा। जल को बरबाद करने की अपेक्षा जल का प्रभावी प्रबंधन करना होगा। यदि आधा गिलास पानी की आवश्यकता है तो एक गिलास पानी की बरबादी को रोकना होगा। पहले जगह-जगह ताल-तलैया, पोखर, झीलें तथा नदियां आदि जलस्रोत थे, जो वर्षा जल का अधिकांश भाग अपने अंदर सहेज लेते थे। वह धीरे-धीरे रिसकर धरती के गर्भ में समाधिस्थ होता रहता था। इससे भूजल स्तर ऊंचा बना रहता था। इन जलस्रोतों में सतह पर उपलब्ध पानी सिंचाई सहित जानवरों के पीने आदि के काम में लिया जाता था। इससे भूजल पर बहुत भार भी नहीं पड़ता था।

अधिकतर किसानों और उद्योगों द्वारा भू-जल का दुरुपयोग ही किया जा रहा है। देश की 80 प्रतिशत सिंचाई धरती की कोख को सुखाकर की जा रही है। पेयजल के लिए सर्वाधिक इसी जल का प्रयोग होता है। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार इन दोनों मदों में देश के कुल भू-जल का 12 प्रतिशत हिस्सा खर्च किया जा रहा है। लोगों को अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भू-जल का प्रयोग सबसे आसान तरीका लगता है। इसी सोच ने भारत को सबसे अधिक भू-जल दोहन करने वाला

देश बना दिया है। विडंबना यह है कि भारत जितना भू-जल दोहन करता है, उसका सिर्फ आठ फीसदी ही पेयजल के रूप में प्रयोग कर पाता है। भारत का अधिकांश भू-जल गुणात्मक रूप से अभी पीने योग्य है, जबकि अन्य स्त्रोतों का पानी प्रदूषित हो चुका है। उनके शुद्धिकरण की आवश्यकता होती है। समस्या इसलिए जटिल हो रही है, क्योंकि देश की सिंचाई -प्रणाली की कुशलता निम्न स्तर की है। सिंचाई के लिए जितना पानी प्रयोग होता है, उसमें से लगभग 60 प्रतिशत बरबाद हो जाता है। इसलिए सिंचाई के लिए अन्य स्त्रोतों के प्रयोग को बढ़ाकर भू-जल के दबाव को कम किए जाने की आवश्यकता है।

एक सार्वभौमिक विलायक, शीतलक और सफाई करने वाले तत्व के रूप में पानी उद्योगों की अनिवार्य आवश्यकता है। अधिकतर उद्योगों ने भू-जल निकालने के लिए स्वयं के बोरवेल लगा रखे हैं। अत्यधिक दोहन के चलते कई बार इन उद्योगों को पानी न मिलने के कारण कारोबार भी ठप करना पड़ता है। उद्योगों को भी पानी प्रयोग के विकल्पों को तलाशना होगा या वर्ष भर में जितना पानी प्रयोग करते हैं, उतनी मात्रा का धरती में पुनर्भरण करना पड़ेगा, तभी समस्या का निदान हो सकेगा। अनुमान है कि हमारे घरों में प्रयोग होने वाला 80 प्रतिशत पानी बरबाद हो जाता है। अधिकांश रूप से इस पानी को शुद्ध करके कृषि कार्यों या दूसरे कार्यों में इसका प्रयोग नहीं हो पाता है।

भारत में वाटर प्यूरीफायर का कारोबार तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन इससे होने वाले पानी का नुक़सान चिंताजनक है। आर ओ से एक लीटर पानी प्राप्त करने के लिए चार लीटर पानी की आवश्यकता होती है। आर ओ आधारित वाटर प्यूरीफायर 74 प्रतिशत पानी का नुक़सान करते हैं। ब्यूरो आफ इंडियन स्टैंडर्ड्स से पंजीकृत 6000 कंपनियां देश में बोतलबंद पानी के कारोबार से जुड़ी हुई हैं। औसतन हर घंटे एक कंपनी

5000 लीटर से 20000 हजार लीटर पानी धरती से निकाल रही है। प्रतिवर्ष 15 प्रतिशत की दर से बढ़ रहे इस उद्योग से पानी के प्रयोग में बर्बादी की दर लगभग 35 प्रतिशत है।

आज परिस्थितियां बहुत बदल गयी हैं, जलस्त्रोत बचे ही नहीं हैं, जो हैं भी वहां पानी की कमी निरन्तर हो रही है। यदि कहीं पर जल-उपलब्धता 1700 घन मीटर से कम रह जाती है तो अंतरराष्ट्रीय मानकों के हिसाब से उस क्षेत्र को 'वाटर स्ट्रेस्ड' की श्रेणी में डाल दिया जाता है। सरकारी अध्ययन बताते हैं कि भारत जल वंचित श्रेणी की तरफ तेजी से बढ़ रहा है। यह उस दशा को कहते हैं, जब जल-उपलब्धता एक हजार घन मीटर से कम रह जाती है। सरकार का आकलन है कि सन् 2030 तक यह 1341 घन मीटर रह जायेगी। जब इसी अनुमान के अनुसार सन् 2050 तक इसकी मात्रा 1140 घन मीटर रह जाएगी, तब स्थिति और अधिक विकट होगी।

भविष्य की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर जागरूक लोगों ने अभी से पानी के प्रबंधन हेतु कमर कसनी आरंभ कर दी है। अलग से जलशक्ति मंत्रालय गठित हो चुका है। स्वच्छ भारत मिशन की तरह अधिकतर जिलों में इस अभियान को चलाने की सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति दिख रही है। सरकार ने पानी के प्रबंधन का खाका तैयार कर लिया है। यदि पानी नहीं होगा तो विकास पर प्रतिकूल असर पड़ेगा।

जल जीवन का आधार है। वह जैविक संसार के लिए नैसर्गिक वरदान ही नहीं, पारिस्थितिकीय सन्तुलन का अभिन्न अंग भी है। जल की रक्षा पृथ्वी की रक्षा है, अगर यह जनविश्वास है तो यह संकल्प लेने की भी आवश्यकता है कि शुद्ध पेयजल पर सबका अधिकार हो। उसकी एक-एक बूंद की रक्षा करना हमारा प्राथमिक कर्तव्य होना चाहिए। इसके लिए जल प्रबंधन के प्रति जागरूकता की आवश्यकता है। अनमोल जल का मोल, हम सभी को समझना होगा।

आर्बर पावर स्टेशन : स्वच्छ ऊर्जा और कार्बन-निगेटिव तकनीक

मानवेन्द्र त्रिपाठी
लखनऊ

भारत जैसे देशों के लिए इस तकनीक का महत्व और भी बढ़ जाता है। भारत में हर साल करोड़ों टन कृषि अवशेष जलाए जाते हैं, जिससे वायु प्रदूषण और ग्रीनहाउस गैसों की समस्या बढ़ती है। यदि इन्हीं अवशेषों को आर्बर पावर स्टेशन जैसी तकनीकों में ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाए तो न केवल प्रदूषण कम होगा बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों को सस्ती और स्वच्छ बिजली भी मिलेगी। इससे किसानों को अतिरिक्त आय का स्रोत मिलेगा और देश की ऊर्जा सुरक्षा भी मजबूत होगी।

मानव सभ्यता का विकास ऊर्जा पर निर्भर रहा है। आदिकाल से जब मनुष्य ने लकड़ी जलाकर आग का प्रयोग किया, तभी से ऊर्जा का उपयोग उसकी प्रगति का आधार बन गया। औद्योगिक क्रांति के बाद कोयला और पेट्रोलियम जैसे जीवाश्म ईंधनों ने आधुनिक सभ्यता को गति दी, लेकिन इसके परिणामस्वरूप वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा इतनी बढ़ गई कि आज पूरी दुनिया जलवायु संकट का सामना कर रही है। वैज्ञानिक चेतावनी दे रहे हैं कि यदि ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन नहीं रोका गया तो आने वाले दशकों में पृथ्वी रहने योग्य नहीं बचेगी। इस संकट से निपटने के लिए दुनिया को ऐसी ऊर्जा तकनीकों की ज़रूरत है जो स्वच्छ भी हों, कार्बन-निगेटिव भी और निरंतर आपूर्ति करने में सक्षम भी। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आर्बर पावर स्टेशन विकसित किया गया है।

आर्बर पावर स्टेशन आकार में एक शिपिंग कंटेनर जितना बड़ा होता है और इसे कहीं भी ले जाकर स्थापित किया जा सकता है। यह जैविक अपशिष्ट- जैसे कृषि अवशेष, लकड़ी, पत्तियाँ और खाद्य अपशिष्ट- को ईंधन के रूप में उपयोग करता है और उन्हें जलाकर बिजली पैदा करता है। लेकिन इसमें प्रयोग की जाने वाली तकनीक साधारण दहन प्रक्रिया से अलग है। इसमें ऑक्सी-कंबशन (Oxy-combustion) का इस्तेमाल होता है, जिसमें ईंधन को शुद्ध ऑक्सीजन के वातावरण में जलाया जाता है। इससे उत्पन्न होने वाली गैसों को सुपरक्रिटिकल कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) टर्बाइन में प्रवाहित किया जाता है। यह टर्बाइन गैसों की ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित कर देता है।

इस प्रक्रिया की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें उत्पन्न होने वाला लगभग पूरा कार्बन डाइऑक्साइड अलग कर लिया जाता है और इसे भूमिगत संग्रहित किया जा सकता है। यानी यह तकनीक कार्बन-न्यूट्रल नहीं बल्कि कार्बन-निगेटिव है। इसका अर्थ यह है कि यह वातावरण से कार्बन हटाती भी है और बिजली भी पैदा करती है। यही कारण है कि वैज्ञानिक इसे भविष्य की ऊर्जा क्रांति मान रहे हैं।

आर्बर पावर स्टेशन की क्षमता लगभग 5 मेगावॉट (MW) है। यह बिजली इतनी होती है कि सालभर में लगभग चार हज़ार घरों की

ज़रूरतें पूरी कर सके। इसकी दूसरी खासियत यह है कि यह मॉड्यूलर है, यानी एक स्थान पर एक से अधिक स्टेशन लगाए जा सकते हैं और जरूरत के हिसाब से उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। पारंपरिक बिजलीघर बनाने में वर्षों लग जाते हैं, जबकि आर्बर पावर स्टेशन को बहुत कम समय में स्थापित किया जा सकता है।

इस तकनीक के कई और लाभ भी हैं। बिजली उत्पादन के साथ यह प्रणाली स्वच्छ पानी भी देती है, जिसे सिंचाई या अन्य औद्योगिक उपयोग में लिया जा सकता है। इसके अलावा, यह विभिन्न प्रकार के ईंधनों पर चल सकती है। चाहे बायोमास से बनी सिंथेटिक गैस हो या प्राकृतिक गैस, दोनों से यह बिजली पैदा कर सकती है। यही नहीं, इसे चलाने के लिए रॉकेट इंजनों और उच्च दबाव पर काम करने वाली टर्बोमशीनरी का अनुभव इस्तेमाल किया गया है, जिससे इसकी दक्षता पारंपरिक बिजलीघरों की तुलना में कहीं अधिक है।

आर्बर पावर स्टेशन को लेकर कई बड़ी कंपनियों और संगठनों ने रुचि दिखाई है। माइक्रोसॉफ्ट ने 2027 से इस कंपनी के साथ समझौता किया है जिसके तहत उसे लगभग पच्चीस हज़ार टन कार्बन रिमूवल और पाँच मेगावॉट स्वच्छ बिजली मिलेगी। अमेरिकी ऊर्जा विभाग ने भी इसे कार्बन रिमूवल तकनीक के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की है। वहीं फ्रंटियर नामक संगठन- जिसमें गूगल, मेटा और स्ट्राइप जैसे तकनीकी दिग्गज शामिल हैं- ने इसके पहले व्यावसायिक संयंत्र के लिए इकतालीस मिलियन डॉलर की आर्थिक मदद दी है। यह संयंत्र अमेरिका के लुइसियाना राज्य में बनाया जा रहा है।

आर्बर पावर स्टेशन का महत्व केवल तकनीकी दृष्टि से ही नहीं बल्कि सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी है। आज दुनिया में डेटा सेंटर्स, एआई और डिजिटल उद्योगों के कारण बिजली की माँग तेजी से बढ़ रही है। इन उद्योगों को चौबीसों घंटे स्थिर बिजली चाहिए, जो पवन और सौर ऊर्जा जैसी नवीकरणीय

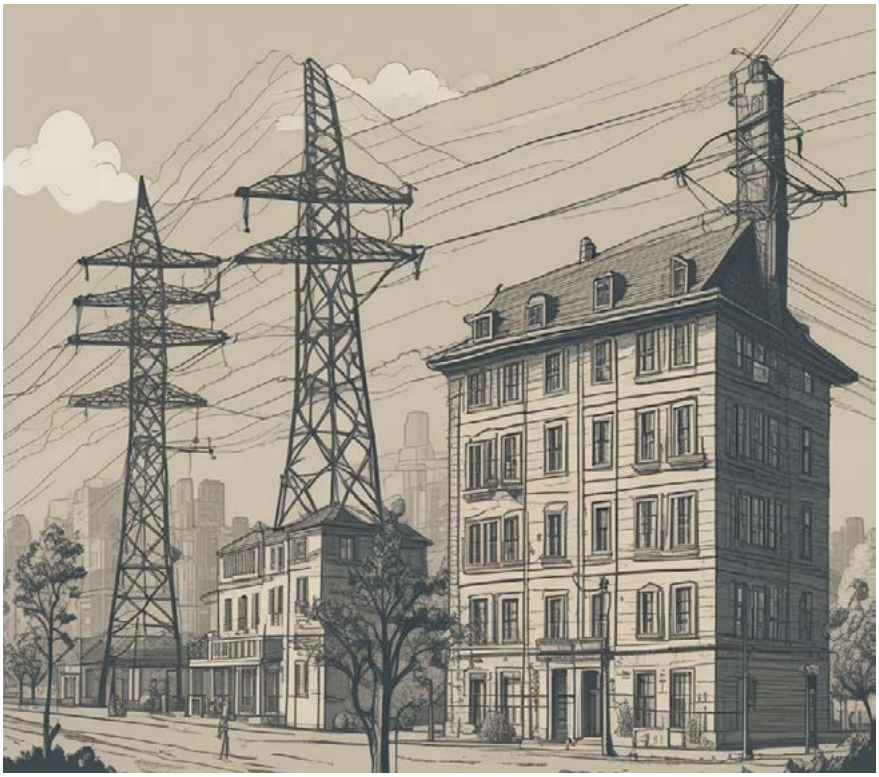

तकनीकों से हमेशा संभव नहीं होती। आर्बर पावर स्टेशन इस कमी को पूरा कर सकता है क्योंकि यह निरंतर बिजली पैदा करने में सक्षम है। साथ ही यह कार्बन उत्सर्जन को कम करने में भी मदद करता है।

भारत जैसे देशों के लिए इस तकनीक का महत्व और भी बढ़ जाता है। भारत में हर साल करोड़ों टन कृषि अवशेष जलाए जाते हैं, जिससे वायु प्रदूषण और ग्रीनहाउस गैसों की समस्या बढ़ती है। यदि इन्हीं अवशेषों को आर्बर पावर स्टेशन जैसी तकनीकों में ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाए तो न केवल प्रदूषण कम होगा बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों को सस्ती और स्वच्छ बिजली भी मिलेगी। इससे किसानों को अतिरिक्त आय का स्रोत मिलेगा और देश की ऊर्जा सुरक्षा भी मजबूत होगी।

भविष्य की दृष्टि से देखें तो आर्बर पावर स्टेशन ऊर्जा उत्पादन की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। यह तकनीक बिजली के साथ-साथ वातावरण से कार्बन हटाकर जलवायु परिवर्तन को धीमा करने में मदद करती है। यदि इसका बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाए तो आने वाले दशकों में वैश्विक तापमान वृद्धि को नियंत्रित करना संभव हो सकेगा।

दुनिया भर के वैज्ञानिक और नीति-निर्माता अब ऐसी ही तकनीकों की ओर देख रहे हैं। सौर और पवन ऊर्जा भले ही स्वच्छ हों, लेकिन वे मौसम पर निर्भर रहती हैं और हर समय स्थिर बिजली नहीं दे सकतीं। इसके विपरीत आर्बर पावर स्टेशन जैसी तकनीकें चौबीसों घंटे, सालभर, किसी भी मौसम में बिजली प्रदान कर सकती हैं। यही कारण है कि विशेषज्ञ इसे भविष्य का बेसलोड पावर स्रोत मान रहे हैं।

संक्षेप में कहा जाए तो आर्बर पावर स्टेशन न केवल एक तकनीकी नवाचार है बल्कि यह मानव सभ्यता को एक स्थायी और स्वच्छ भविष्य की ओर ले जाने वाला कदम है। यह ऊर्जा उत्पादन, कार्बन रिमूवल और जलवायु परिवर्तन से लड़ाई, तीनों को एक साथ जोड़ता है। यदि आने वाले वर्षों में इसका प्रसार हुआ तो यह न केवल विकसित देशों बल्कि भारत जैसे विकासशील देशों के लिए भी वरदान साबित होगा।

टोका टाकी (लोग क्या कहेंगे)

डॉ. इरा त्रिपाठी
बाराणसी (उत्तर प्रदेश)

हमको समझना होगा की लोग क्या सोचते हैं ये हमारे नियंत्रण के बाहर हैं। साथ है अगर हम ये सोचे की हम अपने बारे में लोगों की राय बना या बिगाड़ सकते हैं तो ये हमारी गलत फैमि होंगी। क्यूंकि हम क्या कैसे और क्यूं कर रहे हैं इससे लोगों का कोई सरोकार नहीं हैं।

लोग क्या कहेंगे एक ऐसा वाक्य हैं कि अपने समग्र जीवन काल में इसका सामना करते ही रहते हैं इस पूरे संसार में ना मालूम कितने लोग बस इसी बात में फसें हैं की लोग क्या कहेंगे। या कुछ ऐसा कहे की की व्यक्ति इसमें पड़ा हैं की हमको कोई कुछ कह ना पाए। बच्चों के जन्म से मृत्यु तक के सफर में लोग कुछ ना कुछ तो कहते ही रहते हैं और इसी एक निश्चित बिंदु के सापेक्ष मनुष्य दोलन गति करते हुए अपना जीवन समाप्त कर देता हैं।

हम बचपन से ही उभकरने से पहले लोग क्या कहेंगे अगर हमने फ़ला कोर्स किया, या हमने उससे दोस्ती कर ली, या हमने फलां के घर उठाना बैठना कर लिया, या हमने फलां रंग के कपड़े पहन लिए तो चाल लोग क्या कहेंगे.. और ऐसा लोगों को लोक लाज के सापेक्ष कहा ही नहीं जाता वरना धमकाया जाता हैं खासकर ज़ब घर वाले की विशेष कार्य को पसंद नहीं कर रहे हो या उनके पास उस वस्तु के बारे में जानकारी का अभाव हो। और ऐसे में उनका सर्वोच्च हथियार लोग क्या कहेंगे होता हैं और काफ़ी समय बीत जाने पर ये चार लोग कब चार हज़ार में परिवर्तित हो जाते है। पता है नहीं चल पाता।

यह एक प्रकार का गंभीर अति संचारी सामाजिक रोग है जिसमें हमारे देश की 99% आबादी दबी पड़ी हैं. उसको अपने हर कृत्य पर लगता है जैसे उसका सम्मान दाव पर लगा हो, और उनका ये सम्मान दूसरे के बात, विचार और व्यवहार पर निर्भर करता हैं, जबकिभूम सभी जानते हैं कि ये चाल लोग जो कहने वाले हैं, वो ना तो व्यक्ति कि प्रतिभा, ना उसकी स्थति-परिस्थिति,और ना मानो-भाव को है भलीभांति जानते पहचानते हैं उन्हें तो बस अपने अहंकार के अंधकार रूपी चश्मे में जो दिखता हैं वो वैसे ही अगले को तौल देते हैं या प्रगट कर देते हैं।उनके इसी वेवहार के कारण ना मालूम कितने ही लोग अपने मूल स्वभाव, प्रतिभा एवं उपलब्धियों से जीवन पर्यन्त वंचित रह कर एक हतोत्साहित जीवन जीते रहते हैं। स्वयं की पसंद के कपड़े, जीवनचर्या, नौकरी, स्थान, रिश्ता, जीवन के कुछ महत्वपूर्ण निर्णय इत्यादि को ना जी सकने का मलाल जीवन भर ढ़ोते सिर्फ इस लिए रहते हैं कि चार लोग क्या कहेंगे.ये वही चार लोग हम सब को अपने परिवार, शिक्षा संस्थान, कार्यस्थल, सोसिएटी कही भी मिल जायेंगे और आपके ना चाहते हुए भी जीवन में मीठा मीठा जहर घोलते रहेंगे।

ऐसे ही एक शोध संस्थान साइको कण्ट्रोल की रिपोर्ट के अनुसार मनुष्य हमेशा से ही समाज में रहने के लिए बना होता हैं जिसमें प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे के परस्पर साथ, विश्वास, हसीं खेल और प्रोत्साहन के साथ बंधा होता हैं। और यही साकारत्मक और नकारात्मक ज़ब वो किसी दूसरे को प्रेषित करता हैं तो उसके दिमाग़ में जैविक भौतिकी रासयनिक बदलाव होता है और ये बदलाव हमारे भाव तय करता हैं, जहाँ सकारात्मक वेव्हार हमको प्रसन्नता प्रदान करता हैं वही

नकारात्मक वेयव्हार दुःख एवं निराशा उत्पन्न करता हैं। ऐसी दशा में मनुष्य अपने भावनाओं के उतार चढ़ाव में इतना अधिक गोते लगता हैं की एक लम्बी अवधि के उपरांत मनुष्य के फैसले प्रभावित होने लगते हैं और उसका भावनात्मक एवं शरीरिक स्व-नियंत्रण नगन्य होने लगता हैं। और वो स्वयं के बारे में सोचना,चिंतन करना छोड़ देता हैं।

महान दार्शनिक एवं आध्यात्मिक गुरु ओशो भी कहते हैं " लोग क्या कहेंगे" ये बात आज हमारी आत्मा बन गयी हैं और सबसे मज़े कि बात यह हैं कि आप जिन लोगों के कहे से डरते हैं वही लोग आपके कहे से डरते हैं, सभी एक दूसरे से डर रहे हैं और जीवन के आनन्द को खोते जा रहे हैं।

आज हम आधुनिकता के चरम पर खड़े हैं फिर भी प्राचीनतम डर कि लोग क्या कहेंगे कि ओढ़नी अपने सर से उतारने से डरते हुए आगे की पिढ़ियों में पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाते जा रहे हैं। हम कितना भी लोगो कि चिंता करके अपने भविष्य को दाँव पर लगा ले पर हम कभी भी उन चार कहने वाले लोगों को अपनी बात,विचार,वेव्हार और निर्णयों से संतुष्ट कर ही नहीं पाएंगे,और न ही उनकी कथनी को अपने नियंत्रण में कर पाएंगे। और सब के सब इस फेर में खुद को दुखीऔर असंतुष्ट ही पाएंगे।

तो इससे निबटने के कुछ टिप्स निम्न हो सकते हैं।

मन्त्र 1. दूसरों के जय से पहले खुद को जय करें..

हम जितना अधिक स्वयं को प्यार और सम्मान देंगे उतना अधिक हम अपने निर्णयों पर विश्वाश करेंगे, और हमें झूठी सहायता से बचाव मिलेगा। ज़ब हम दूसरों के साथ-साथ अपने लिए भी दयालुता कि भावना रखेंगे तो हम अपने आत्म निर्णय कि सबल भावना को पल्ल्वीत कर पाएंगे। जो कि हमको सशक्त जीवन जीने कि कुंजी जैसी होंगी।

मन्त्र 2. भीतर कि ओर उन्मुख होना

बाहरी स्वीकृति और जुड़ाव कि हमारी प्रवर्ती हमको दूसरों के लिए, उनकी अपेक्षा पर खरे उतरने के लिए स्वयं को बदलने की आदत को नहीं ही सिर्फ प्रेरित करते हैं बल्कि बदल तक ड़ालते है। हम लोगों को आकतें हैं और उनके इच्छा के अनुसार काम करते हैं,जिसकी पूर्ति में स्वयं को पूर्णता अनदेखा कर देते हैं। यहाँ कभी कभी कुछ विषय पर स्वयं को केंद्र में रख कर कार्य करने कि आवश्यकता होती हैं। अपने लिए अपनी आदतों को बनाने या समाप्त करने की बात होती हैं।

मन्त्र 3. अपनी झिझक अथवा शर्म को कहे टाटा...

कई व्यक्तियों में पाया गया हैं कि वे बहुत शर्मिंले अथवा झिझक के कारण अपने निर्णय नहीं ले पाते। उदहारण के तौर पर यदि हम आर्थिक रूप से निर्बल हैं तो घर या समाज में हम दूसरे के निर्णय के सामने स्वयं को झुका देते हैं, ना चाहते हुए भी उनकी हाँ में हाँ मिलते हैं। तो ऐसे में हमें अपनी आभावगस्त पहलू कि जगह, अपने सबल पक्छ को उजागर करते हुए अपने मन और अपनी सोच को दृढ रखना हैं। अपनी स्थिति को स्वीकार करते हुए स्वयं के निर्णय पर बिना भयभीत हुए गलत बात का बिना शर्म के विद्रोह करना और अपने सम्मान को अग्रसर करने की कला को सीखने कि आवश्यकता हैं।

मन्त्र 4. स्वा को पोषण देने वाली और विश्लेषक दृष्टि विकसित करना।

अपने अंदर सदैव सकरात्मक विचार वेव्हार को विकसित करते रहना, मन की उच्चता और स्वक्छता के लिए ध्यान ,धरणा, उच्च कोटि की कल्पना शक्ति को विकसित करना, महापुरुषों की जीवनी पढ़ कर उनके साकरात्मक कृत्यओं को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करना। किसी भी विषय पर निर्णय लेने से पूर्व निर्णायक वस्तु का विश्लेषण करना इत्यादि सम्मलित होता हैं।

जैसे जैसे हम आंतरिक संसाधनों को विकसित करते हैं हम अधिक आत्म निर्देशित होते चले जाते हैं और तब अपने आगे बढ़ने वाले कदम के पीछे हम ये कतई नहीं सोचते की लोग हमारे बारे में क्या सोचते हैं या कहते हैं। अब हमें ये सोचना निरर्थक लगने लगता हैं।अब ये सोचना की लोग क्या कहेंगे मेरा काम ना होकर, उनका उद्देश्य ज्यादा लगने लगता हैं। हम निरंतर स्वयं को पोषण देने वाले कार्यों वेवहारों और विचारों में लगने लग जाते हैं। इस प्रवृति को निरंतर आगे बढ़ाने के लिए व्यायाम, बाइकिंग, कला कृतियों को सीखना, बाग़वानी और प्रकृति के सानिध्य में बैठने जैसी बहुमूल्य प्रक्रिया में स्वयं को निखारने के लिए तत्पर रहते हैं।और ज़ब यह अर्ज़न हमारे भीतर आरम्भ हो जाता हैं,तो स्वतंत्रता और सहजता की और अधिक भावना के साथ सशक्त और दीर्घ स्वस्थ जीवन का अर्जित पुरस्कार हम सब प्राप्त कर लेते हैं। जो दीर्घ काल के लिए हमें सफलता सिद्धि करवाता रहता हैं।

अंततः हम यही कहना चाहते हैं की ज़ब हम जीवित रहने के लिए किसी की राय नहीं लेते, तो फिर नये कार्य को करने जैसे, महत्वपूर्ण निर्णययों में हम दूसरों को इतना महत्व क्यूं देते हैं। हम दूसरों के लिए स्वयं के लिए जी रहे हैं। और ऐसे में अपने मर्यादित और अनुशसित मन की बात करने से झिझकिये मत और अपने निर्णयों से स्वयं का जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत कीजिये।

हमको समझना होगा की लोग क्या सोचते हैं ये हमारे नियंत्रण के बाहर हैं। साथ है अगर हम ये सोचे की हम अपने बारे में लोगों की राय बना या बिगाड़ सकते हैं तो ये हमारी गलत फैमि होंगी होंगी। क्यूंकि हम क्या कैसे और क्यूं कर रहे हैं इससे लोगों का कोई सरोकार नहीं हैं।

क्यूंकि जिन्हे बुरा लगता हैं, वे महत्वपूर्ण नहीं हैं। और जो महत्वपूर्ण होते हैं वो बुरा नहीं मानते।

स्कूल छोड़ती बेटियाँ: संसाधनों की कमी या सामाजिक चूक?

प्रियंका सौरभ

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की रिपोर्ट ने चौंकाने वाला सच उजागर किया है कि 15 से 18 वर्ष की उम्र की लगभग 39.4% लड़कियाँ स्कूल से बाहर हो चुकी हैं। शिक्षा के इस मौन पलायन के पीछे स्कूलों की दूरी, परिवहन की अनुपलब्धता, शौचालयों की कमी और सुरक्षा को लेकर भय जैसे कारण हैं।

("बेटियाँ क्यों छोड़ रही हैं स्कूल? सवाल सड़कों, शौचालयों और सोच का है" "39% लड़कियाँ स्कूल से बाहरः किसकी जिम्मेदारी?" "'बेटी पढ़ाओ' का सचः किताबों से पहले रास्ते चाहिए")

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की रिपोर्ट ने चौंकाने वाला सच उजागर किया है कि 15 से 18 वर्ष की उम्र की लगभग 39.4% लड़कियाँ स्कूल से बाहर हो चुकी हैं। शिक्षा के इस मौन पलायन के पीछे स्कूलों की दूरी, परिवहन की अनुपलब्धता, शौचालयों की कमी और सुरक्षा को लेकर भय जैसे कारण हैं। यह स्थिति केवल एक व्यवस्था की विफलता नहीं, बल्कि सामाजिक मानसिकता की कमजोरी को भी दर्शाती है। यह लेख सवाल करता है कि क्या हम सच में बेटियों की शिक्षा को प्राथमिकता दे रहे हैं या सिर्फ नारे गढ़कर आत्मतुष्टि पा रहे हैं?

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का नारा हर गली-चौराहे, सरकारी इमारतों और बैनरों पर चमकता है, लेकिन यह नारा उन गाँवों और बस्तियों तक नहीं पहुँच पाता जहाँ बेटियाँ रोज़ स्कूल छोड़ रही हैं। हालिया रिपोर्ट से पता चला है कि 15 से 18 वर्ष की आयु वर्ग की 39.4% लड़कियाँ स्कूल से बाहर हैं। यह आंकड़ा केवल संख्या नहीं, यह हमारे सामाजिक ढांचे पर एक कठोर टिप्पणी है।

घर से स्कूल की दूरी, सुरक्षित परिवहन की कमी, उच्च माध्यमिक विद्यालयों का अभाव, शौचालयों की स्थिति और सामाजिक असुरक्षा– ये सारी बातें किसी शोधपत्र की विषयवस्तु नहीं, बल्कि ज़मीनी हकीकत हैं जिनसे रोज़ हज़ारों बच्चियाँ जूझ रही हैं। और अंततः उन्हें शिक्षा से हाथ धोना पड़ता है। सरकारी आंकड़े भले ही बढ़े हुए नामांकन दिखाते हों, लेकिन हकीकत यह है कि नामांकन के बाद लड़कियाँ स्कूल तक टिक नहीं पातीं।

एक आम ग्रामीण परिदृश्य को देखें। पाँचवीं तक की स्कूल तो आसपास है, लेकिन आठवीं के बाद विद्यालय दूर है। परिवहन की कोई सुविधा नहीं। न बस, न साइकिल, न ही कोई महिला सहकर्मी या मार्गदर्शक। माता-पिता अपनी बेटी को पाँच किलोमीटर दूर अकेले भेजने से डरते हैं। उन्हें चिंता होती है कि रास्ते में कोई छेड़छाड़ न हो, कोई हादसा न हो। उस चिंता में स्कूल जाना बंद हो जाता है।

शौचालयों की बात करें तो यह सिर्फ सुविधा नहीं, आत्मसम्मान और स्वास्थ्य से जुड़ा मुद्दा है। किशोरावस्था में लड़कियाँ उन

परिवर्तनों से गुजरती हैं, जहाँ एक स्वच्छ और सुरक्षित शौचालय उनकी शिक्षा की निरंतरता तय कर सकता है। लेकिन अधिकांश सरकारी स्कूलों में या तो शौचालय हैं ही नहीं, या हैं तो गंदे, असुरक्षित, या क्षतिग्रस्त। माता-पिता के लिए यह एक और कारण बन जाता है अपनी बेटियों को स्कूल से हटाने का।

सुरक्षा एक बड़ा मुद्दा है। जिन स्कूलों में कोई महिला शिक्षक नहीं होतीं, कोई सीसीटीवी कैमरा या गार्ड नहीं होता, वहाँ किशोर लड़कियों को भेजना आज भी माता-पिता के लिए जोखिम उठाने जैसा है। यह डर केवल अव्यवस्था से नहीं, समाज की असंवेदनशीलता से भी उपजा है। आए दिन होने वाली घटनाएं, समाचारों में आती छेड़छाड़ की खबरें इस भय को और गहरा करती हैं।

इन सबके अलावा शिक्षा को लेकर समाज की प्राथमिकताएँ भी स्पष्ट नहीं हैं। एक लड़का पढ़े तो 'परिवार का भविष्य' बनता है, लेकिन लड़की पढ़े तो 'शादी की उम्र निकलने का डर' पैदा होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह मानसिकता अब भी गहराई से मौजूद है। लड़कियों की शिक्षा को 'लाभ' से ज्यादा 'खर्च' माना जाता है।

अब यदि इन परिस्थितियों में एक बेटी स्कूल छोड़ दे, तो क्या इसमें उसकी गलती है? या यह एक सामूहिक चूक है- व्यवस्था की, समाज की, और हमारी?

इस स्थिति का समाधान केवल सरकारी योजनाओं से नहीं, ठोस क्रियान्वयन से होगा। सबसे पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि हर गाँव से तीन किलोमीटर के दायरे में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हो। यह बुनियादी शैक्षिक ढांचा हर बच्चे का अधिकार है।

परिवहन की सुविधा उतनी ही ज़रूरी है जितनी शिक्षक की उपस्थिति। यदि बच्चियाँ स्कूल नहीं पहुँच पाएंगी तो पढ़ेंगी कैसे? सरकार को स्कूल वैन, छात्रा साइकिल योजना या सार्वजनिक परिवहन में 'स्कूल पास' जैसे विकल्प सुनिश्चित करने होंगे।

हर स्कूल में स्वच्छ और उपयोगी शौचालयों की अनिवार्यता केवल 'स्वच्छ भारत मिशन' का हिस्सा नहीं, बल्कि 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के सच्चे मर्म का आधार होना चाहिए। महिला कर्मचारियों की नियुक्ति, नियमित निरीक्षण और साफ-सफाई के लिए स्थानीय प्रशासन को उत्तरदायी बनाया जाए।

सुरक्षा के लिए प्रत्येक स्कूल में महिला शिक्षकों की उपस्थिति बढ़ाई जाए। सुरक्षा गार्ड, सीसीटीवी कैमरा और स्कूल परिसर में अभिभावकों की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाए। यह कदम न केवल बेटियों को सुरक्षा का भरोसा देगा, बल्कि अभिभावकों को मानसिक शांति भी।

इसके साथ ही स्कूलों के भवन और अधोसंरचना को केवल औपचारिकता के लिए नहीं, गुणवत्ता के साथ विकसित किया जाना चाहिए। पुस्तकालय, कंप्यूटर कक्ष, विज्ञान प्रयोगशालाएं, खेल का मैदान — ये सब स्कूल के मानक हिस्से होने चाहिए।

एक और महत्वपूर्ण बिंदु डिजिटल शिक्षा है। महामारी ने दिखा दिया कि जिनके पास मोबाइल, इंटरनेट और बिजली नहीं, वे पढ़ाई से बाहर हो जाते हैं। ग्रामीण स्कूलों में डिजिटल साक्षरता और उपकरण की उपलब्धता अब विलासिता नहीं, अनिवार्यता है।

शिक्षा विभाग को उन लड़कियों की नियमित सूची बनानी चाहिए जो स्कूल छोड़ चुकी हैं। उनके घर जाकर कारण जानना, उन्हें वापस लाने के लिए प्रेरित करना, और माता-पिता को विश्वास में लेना प्रशासन की जिम्मेदारी होनी चाहिए।

साथ ही समाज को भी आत्मावलोकन करना होगा। हम अपनी बेटियों को क्यों पढ़ाना चाहते हैं — नौकरी के लिए, शादी के लिए या आत्मनिर्भरता के लिए? जब तक समाज का जवाब अस्पष्ट रहेगा, तब तक समाधान भी अधूरा रहेगा।

प्रशासन, समाज और परिवार को मिलकर यह जिम्मेदारी लेनी होगी कि कोई भी बच्ची शिक्षा से वंचित न हो। इसका अर्थ है केवल विद्यालय खुलवाना नहीं, बल्कि उसमें बेटी के जाने और टिके रहने की पूरी ज़िम्मेदारी लेना।

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अगर केवल बैनर की पंक्ति नहीं रहना है तो इसे पंचायतों, स्कूल समितियों, शिक्षक संगठनों, अभिभावकों और छात्रों के साझा प्रयास में बदलना होगा। तभी एक ऐसा समाज बनेगा, जहाँ कोई भी बेटी पढ़ाई से वंचित नहीं होगी।

एक दुख की यामिनी

एक दुख की यामिनी ने दे दिए सुख-धाम जग को ॥
शाप के असमय फलित ने जब दिए थे राम जग को ॥

वह निशा जिसने विवश
अवधेश के आँसू पढ़े थे ।
और जिसकी कालिमा ने
कलुष कैकयी में गढ़े थे ।
वह अभागी रात जिसकी
भोर ने होना न चाहा ।
था बड़ा अभिशाप जिसको
स्वयं ने ढोना न चाहा ।
सूर्य भी उस दिन सुबह में
चाहता निज उदय टालूँ ,
किन्तु कुल मर्याद तज कर , वह न पाया थाम पग को ॥
वह विकट मनहूस ऊषा
आह ! में जैसे सनी थी।
राम वन को जा रहे हैं
खबर दावानल बनी थी।
पीर का स्वर मौन में भी
नाद बनकर चीखता है।
स्वच्छ मन, घायल हृदय का
भाव मुख पर दीखता है।
एक असमंजस नगर में
बन उदासी छा गया था,
अवध के उन अश्रुओं के,
थे विविध आयाम जग को॥
पूछते थे जन परस्पर
क्या हुआ , कैसे हुआ सब ?
आज तो अभिषेक था फिर
वन गमन निर्णय हुआ कब ?
मौन थे सब , अश्रु केवल
छलछला कर बह रहे थे ।
म्लान मुख पर पुतलियों से
नेत्र सब कुछ कह रहे थे ।
काल का पथ वक्र हो कर
था गया रनिवास में कल ,
भोर आनी थी खुशी की ,
आ गयी दुःख शाम जग को ॥

- देवेन्द्र सिंह

स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस ने भरा हैं दम... !

आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उठा हैं एक बड़ा कदम,
अभी स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस ने भरा हैं दम।
उन पाँच महिला विज्ञानियों ने विकसित किया है,
मौसम पूर्वानुमान प्रणाली को नया जन्म दिया हैं।
स्थानीय स्तरों मौसम की सटीक माहिती मिलेगी,
कोई नुकसान नहीं होगा हँसी चेहरों पर खिलेगी।

आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उठा हैं एक बड़ा कदम,
अभी स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस ने भरा हैं दम।
छः किलोमीटर के दायरे में मौसम के पूर्वानुमान,
क्षमता हासिल कर भारत दुनिया का पहला देश !
अब बदल जाएगा हर एक शहर का भी परिवेश,
मौसम पूर्वानुमान प्रणाली में अग्रणी हो समावेश।

आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उठा हैं एक बड़ा कदम,
अभी स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस ने भरा हैं दम।
पिछले तीन वर्षों से इस पर चल रहा था ये काम,
भा.उ.क.मौसम विज्ञान संस्थान देते हैं परिणाम।
अभी देशभर में 40 डॉप्लर मौसम रडारों नेटवर्क,
भविष्य में रडारों की संख्या सौ होगी करेंगे वर्क।
आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उठा हैं एक बड़ा कदम,
अभी स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस ने भरा हैं दम।
ये मानसून ट्रैकिंग, उड्डयन, चक्रवात की निगरानी,
आपदा प्रबंध, कृषि, जलमार्ग, रक्षा, बाढ़ न हानि।
बी.एफ.एस से आंधी, तूफान, बारिश की कहानी,
हाँ होंगे सतर्क मिलेगी खूब मदद बरतें सावधानी।

(संदर्भ : पुणे स्थित आइआइटीएम यानी भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान ने यह प्रणाली विकसित की है।)

- संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर (मध्यप्रदेश)

तुम्हारे बिन...

मेघा तुम आये
पर वो नहीं आये
जो छोड़ गये वर्षों पहले
हे मेघ ! तुम वहां भी जाना
सुंदर शहर सपाट भूमि पर
जहाँ मेरे मालिक बसे हों
खूब बरसना मूसलाधार
बहते पानी को देख
उपजे विचार
शायद उन्हें आये याद
इन पहाड़ों की झरनों की
संग में मेरी भी...
कहना उन्हें
कोई है जो
आज भी याद करता है
उन पहाड़ों के बीच
धड़कता है दिल
उस निर्जीव का
तुम्हारे बिन ।

- व्यग्र पाण्डे

रूठी नदियाँ

रूठी नदियाँ
सूखे पर घट
सूने तो चैबारे हैं
अपने हाथों से
तो हमने
अपने भाग्य बिगारे हैं
कल-कल बहती थी जब नदियाँ
नीर-क्षीर से भारी थी
प्राणो को आलम्बन करती
लुटाती यौवन सारी थी
पुरखे दे गये अतीत की
यह अनमोल विरासत प्यारी
स्वार्थो की वल वेदी पर
इस मिटाने की कर दी तैयारी
रूठी नदियाँ
सूखे परघट
सूने तो चैबारे है
बिन पानी के
मछली तड़पे
किसको आज पुकारे है।
जंगल काटे सूने किये पहाड़
बिन बरसे तो बीत गया अबाढ़
मेघा घुमड़-घुमड़ न गरजत
न रिमझिम-रिमझिम मेघा बरसत
पीयू-पीयू करता चातक तरसत
मोरा आज फिर नही हरसत
बिन बागन आंगन लगता भारी है
अपने ही हाथों अपने मांग उजाड़ी है।

-सुरेन्द्र अग्निहोत्री

सफर की मधुशाला

राहों में मिले हम-तुम,
मंजिलें थीं अलग-अलग।
सफर का था रंगीन मौसम,
पर नजर थी मंजिल पर।

क्षणिक है मंजिल पाना,
पर सफर का आनंद कहां?
अगर न देखें वो घटाएँ,
न करें हृदय रसपान।

मंजिल का क्या फायदा,
जो सफर से दूर करे।
चलो सफर को बना लें,
चलती-फिरती मधुशाला।

पल तो आएगा ही,
जब मंजिलें होंगी पास।
तब तक साथ में चलें,
और सफर का लें मज़ा।

तुम अपनी राह पर चलो,
हम अपनी राह पर चलें,
मिलेंगी मंजिलें जब,
सफर की यादें संग रह जायेंगी।

- अवनीश कुमार गुप्ता

देख सजनी! देख ऊपर

देख सजनी ! देख ऊपर।।
आ रही है मेघमाला।।

बम सरीखी गड़गड़ाती,रेल जैसी दड़दड़ाती।
इंजनों सी धड़धड़ाती, फुलझड़ी सी तड़तड़ाती।।
पल्लवों को खड़बड़ाती,पंछियों को फड़फड़ाती।
पड़पड़ाती पापड़ों सी, बोलती है कड़कड़ाती।।

भागती तो भड़भड़ाती, बावरी सी बड़बड़ाती।
हड़बड़ाती, जड़बड़ाती, दिग्गजों को
खड़खड़ाती।।
सिर उठाकर देख ऊपर।। और ऊपर और ऊपर।।
आ रही है मेघमाला।
देख सजनी ! देख ऊपर।।

वह पुरन्दर की परी सी घेर अम्बर, और
अन्दर,और अन्दर।
कर चुकी है श्यामसुन्दर से स्वयंवर।।
रिक्ष बन्दर सी कलन्दर वह मुकद्दर की सिकन्दर।
हो धुरन्धर सींच अंजर और पंजर बाग बंजर।।
कर समुन्दर को दिगम्बर फिर बवण्डर सा उठाती।
बन्द बिरहिन का कलेजा खोल खंजर सा
चलाती।।
आ रही है मेघमाला।
देख सजनी ! देख ऊपर।।

भामिनी सी कामिनी सहगामिनी मृदुयामिनी सी।
वामिनी गजगामिनी ले दामिनी मनस्वामिनी सी।।
रागिनी घनवादिनी पंचाननी सौभागिनी सी।

जामुनी हंसासनी सी सावनी मधु चासनी सी ।।
जीवनी में घोलती संजीवनी सा रस बहाती।
तरजनी सी मटकनी कुछ कटखनी बातें बनाती।।
आ रही है मेघमाला।
देख सजनी ! देख ऊपर।।

- गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"
(इन्दौर, म.प्र.)

सेमल

प्रकृतिमेल डेस्क

प्रकृति में फैली सुन्दरता कि छटा को हम निहारते हुए यह नहीं ध्यान दे पाते है कि इन्हीं सुन्दरता में न जाने कितनी गुणकारी सम्पदा छि छिपी हुई है। सेमल के पुष्प में भी ऐसी ही एक बात दिखती है। जितना सुन्दर इसका पुष्प दिखता है उतना ही गुणकारी भी यह होता है। माना जाता है कि सेमल का पुष्प कई सारी खूबियां लिए होता है। इस में पाये जाने वाले तत्व प्रतिरोधक क्षमता को शक्तिशाली बनाते है। त्वचा को लाभ देते है। पंचनतंत्र को स्वस्थ रखते है।

सेमल के पुष्प में पर्याप्त मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट पाये जाते हैं। एंटीऑक्सीडेंट शरीर की रक्षा प्रणाली को मजबूत करते हैं। इसका पुष्प बॉडीडिटाक्स का कार्य करता है। रक्त को साफ रखता है, शरीर में रक्त की कमी को दूर करता है। रक्त साफ रहने से त्वचा भी स्वस्थ रहती है, साथ ही इस में पाया जाने वाला एंटी एजिंग गुण पाये जाते है और त्वचा को जवां बनाये रखता है। फोड़े फुंसियों में भी सेमल लाभ देता है।

सेमल के पुष्प मे पर्याप्त मात्रा मे फाइबर होता है। फाइबर से पाचन तंत्र मजबूत होता है और कब्ज, अपच जैसी दिक्कतों से भी लाभ मिलता है। इसमें काइबर, एंटीऑक्सीडेंट और मिनरल्स खूब पाये जाते है। सेमल को पेट का अमृत भी कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त, सेमल का पुष्प शरीर को ठंडक पहुंचाने में भी मदद करता है। गर्मियों में इसका सेवन शरीर में जलन, एसिडिटी और अत्यधिक प्यास जैसी समस्याओं को कम करता है। आयुर्वेद में इसे रक्तस्राव रोकने और घाव भरने की प्रक्रिया को तेज करने के लिए भी उपयोग किया जाता है। यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्रों में लोग आज भी सेमल के पुष्प को घरेलू औषधि के रूप में प्रयोग करते हैं।

प्रकृति के रंग

“

स्वास्थ्य परिवर्तन अपने गतिमान जीवन में प्रतिरोध उत्पन्न करने का प्रतिबल है जिससे गुजर जाने के बाद प्रतिरोध को विफल कर देने का विज्ञान बन जाता है।

– अशोक मानव

”

स्थापित 1948

77 वर्षों का विश्वास

लाला जुगल किशोर

गोटे वाले

55, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ | संपर्क : 9935329775

दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दे

Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equipments & Spare Parts

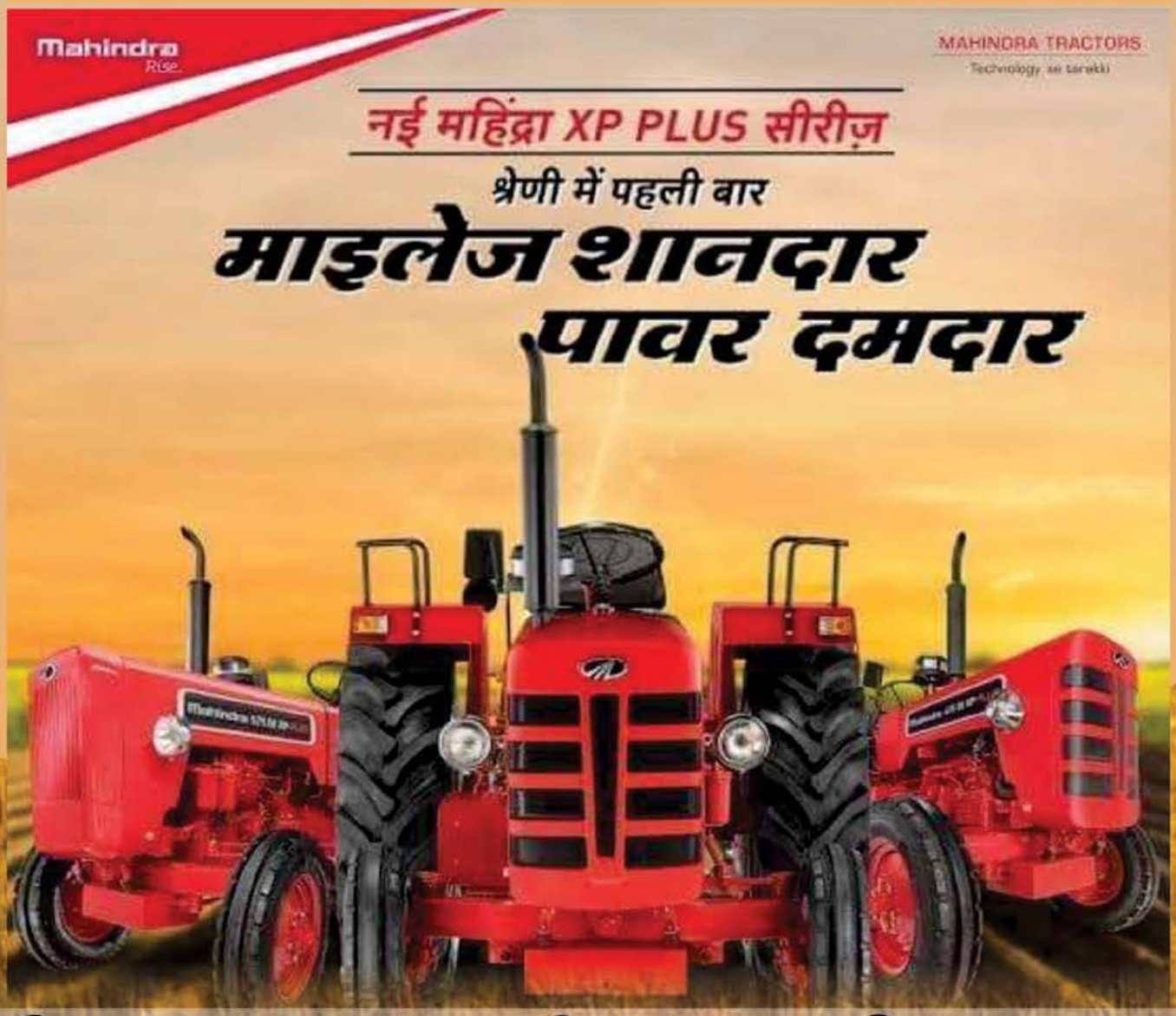

durgaautosale2000@gmail.com 9919528830 0545-4242216

इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मद्धली शहर, जौनपुर, उ. प्र.।